



श्रीश्रुतज्ञानअमीधारा सीरीज नंबर ५

विश्वहितबोधिदायक श्रीअमीविजयगुरुभ्यो नमः

सुगृहीतनामधेय श्रीमन्नेमिचंद्रसूरीश्वरगुम्फितं

श्रीअनन्तनाथचरित्रादुद्धृतं पूजाष्टकम्



सपादक

आचार्य विजयक्षमामद्रसूरिः

प्रकाशक

शाह रायचंद गुलाबचंद मु० अच्छरी, पोष्ट भिलाड (गुजरात)

विक्रम मवत् १९९७

वीरस २४६६

इसवी सन १९४०

---

Published by Shah Raychand Gulabchand, Accchhari Station Bhilad, B. B. & C. I. Ry.

Printed by Ramchandra Yesu Shedge, at the Nirnaya Sagar Press, 26-28,  
Kolbhat Street, Bombay.

---

प्राप्तिस्थानम्—आचार्य श्रीविजयदानसूरीश्वर जैनग्रन्थमाला गोपीपुरा—मु० सुरत. पोष्टेज पेकिंग खर्च चार आना

श्रीश्रुतज्ञानअमीधारा ग्रन्थाङ्क नं. ५  
श्रीमन्नेमिचन्द्रसूरीन्द्रगुम्फतं

## श्रीअनन्तनाथचरित्रादुद्धृतं पूजाष्टकम् ।

विश्वहितबोधिदायकश्रीअमीविजयगुरुभ्यो नमः ।

जयइ जुगाइजिणिंदो परिविलसिरसमवसरणचरुबो । वागरिचं पिव सुहदाणसीलतवभावाणाधम्मे ॥ १ ॥ सो  
जयइ जिणोणंतो देसणइसणसुणो सया जसस । केवलरविकिरणा इव तममवर्णिता वियंभति ॥ २ ॥ सिरिवद्धमाण-  
सामिं नमामि कणयाभदेहदितीए । कुणमाण पिव सुवण सबपिय अत्तणो तुल्ल ॥ ३ ॥ सम्मत्तनिबलत्त किरियाए जीए  
होइ त कहइ । जह निच्चपि हु पहु सिद्धिसाहयं तं करेमि अहं ॥ ४ ॥ तो आह तिजयनाहो नरिंद निसुणेसु तस्स  
निबलया । जायइ जिणपूयाए भतीए तिसज्झविहियाए ॥ ५ ॥ जिणपूया पावहरी जिणपूया जायए भवतकरी । जिण-  
पूया सघाणवि कल्लाणमणीण भडारो ॥ ६ ॥ अवहरइ दरिइत्त पणामए तिजयलच्छिच्छिच्छुं । जिणपूया कीरती पणा-  
सए सघदुरियाइं ॥ ७ ॥ कुसुमक्खयफलजलधूवदीवनेवज्जावासनिम्माया । पूया जिणेसरणं सा अट्टविहा विणिद्धिद्दा  
॥ ८ ॥ वरपरिमलेहिं कुसुमेहिं पूयए जो जिणे सबहुमाण । पूयापत्तं जायइ जिणप्पसाया गुरुणवि सो ॥ ९ ॥ जो  
जिणपयपउमपुरो पूयत्थं खिवइ अक्खए खिपं । सासयसोक्खे मोक्खम्मि अक्खओ होइ सो पत्तो ॥ १० ॥ एके-  
णावि फलेणं जिणरत्तो जो उवायणं कुणइ । ता तप्पसायओ लहइ सो धुवं सबसिद्धिसिं ॥ ११ ॥ पत्तगएण जिणिंदं

जो सच्छस्साउसीयलजलेण । पूंयइ सो तेणेवय पक्खालइ नियमलं नियसा ॥ १२ ॥ जो घणसारं अगहं च द्हइ  
जिणअंगधूवणनिमित्तं । सो घणसारो जायइ अगुरु घणओ वि जस्स पुरो ॥ १३ ॥ जो मंगलपईवेण पूयए सामिसा-  
लजिणवंदं । सो दीवसिहा उल्लमुत्ती सगसिरिं रमइ ॥ १४ ॥ जे निरवज्जं भोजं नेवजे जिणवरस्स जच्छंति ।  
भोत्तूण ते अ(S)णवज्जाइं ल(भ)वसुहाइं सिवं जंति ॥ १५ ॥ जो सुहवासेहिं जिणेसरस्स पूएइ पायसयवत्तं । सो सुहवासं  
मि सया सिवालए सासओ वसइ ॥ १६ ॥ एयाओ अट्टवि कुणइ जो सया भत्तिनिब्भरो भवो । सो अट्टकम्मसुक्को  
संपज्जइ सासओ सिद्धो ॥ १७ ॥ सवाहिंवि असमत्थो एक्काएवि पूयए जइ जिणं जो । ता सोवि भावसुद्धीए  
पावए सिद्धिसंबंधं ॥ १८ ॥ एयाउ राय कहियाउ तुब्भ पूयाउ इय जिणुत्तम्मि । भणइ निवो पणयपहू सीभंतयरइय-  
करकोसो ॥ १९ ॥ जयनाह साहसु महं महंतकोऊहलाउलमणस्स । दिट्ठंते अट्टाणवि पूयाणिंहि कयपसाया  
॥ २० ॥ जंपइ जिणेसरो सुणसु राय कयअप्पमत्तमणवित्ती । संपइ साहिजंते दिट्ठंते अट्ट पूयासु ॥ २१ ॥ इह  
दुंगदेव दुंगयपडाय वानरय चंदेतेयक्खा । साहससार अकिंचण रणसूर धर्णावहा पुरिसा ॥ २२ ॥ होडं कमेण एक्के-  
क्कपूयकरणेण गरुयरायाणो । सिरिंकुसुमसेहरकखयकिंत्तिफ्लसारंजलसारा ॥ २३ ॥ सिरिधूवसुंदरो तह सुवणपई-  
वो पईवसिहवत्तो । सुवणप्पमोयगो गंधबंधुरो सिवपुरिं पत्ता ॥ २४ ॥ कुलयं । कुसुमेहिं जेण पूइय जिणेसरं पाविया  
महारिद्धी । तं कुसुमसेहरकहं कहिजमाणं निसामेह ॥ २५ ॥ पुरमत्थि फुरियमहापहाविरायंतरयणपाचारं ।  
रयणप्पाचारं नाम गुरुविमाणं सुरपुरं व ॥ २६ ॥ रयणीसु जत्थ ससिरयणचंदसालागलंतसलिलेण । भवणाइं  
नीरयाइं भवंति मुणिमाणसाइं व ॥ २७ ॥ तत्थत्थि हत्थिहरहजोहोहपसाहियाहियसमूहो । विलसिररयणाभरणो  
रयणाभरणोत्ति नरनाहो ॥ २८ ॥ आयद्धियासिपडिफलियतरणिकिरणवालीकलियकाओ । पयडपयावप्पसरोव जो

रणे रीण दुनिरिक्खो ॥ २९ ॥ सर्वतेउतररुणीपहुत्तपयवीपइट्ठिया जाया । तस्सत्थि हत्थिमंथरगइगमणा रयण-  
मालत्ति ॥ ३० ॥ चित्तव चित्तवासा अमुक्कपासा सकीयछायव । निययपयइव सया ज्ञा दुम्मोया मणायंपि ॥ ३१ ॥  
ताणत्थि तारतारुललियलायन्नपुन्नसव्वगी । अगीकयसयलकला कन्ना रयणावली नामा ॥ ३२ ॥ पीयाए सुराए  
इव दिट्ठाएवि जीए होइ उम्माओ । तरुणाण विवेईणवि अविवेईणं तु का गणणा ॥ ३३ ॥ सा जत्थ जत्थ कीला-  
करणकए जाइ रूवविजियरई ॥ गच्छति तत्थ तत्थय परवसा सेवयव नरा ॥ ३४ ॥ कइयावि मयंकमुही सहीजुया  
सा सुहासणासीणा । सियलत्तचलिरचमरालंकरिया निग्गया नयरा ॥ ३५ ॥ पत्ता य मत्तमहुयरणामे सिंसिर-  
हुमग्गि आरामे । दट्ठुण मयणभवण उत्तिन्ना जा विसइ तत्थ ॥ ३६ ॥ ता नियइ रगमडवगवक्खभइासणट्ठियं एक्कं ।  
रायकुमार मयणं व निग्गय भवणगव्भओ ॥ ३७ ॥ करकलियकैलिकमल नियरूवनियंविणीजणियमयणं । सुसि-  
णिद्धमुद्धदीहच्छिजोण्हधवलीकयगनह ॥ ३८ ॥ त पेच्छिउ मयच्छी चित्तइ को एस दीसइ महप्पा । अचब्भुयरूप  
धरो सिंगारी चारुतारुत्तो ॥ ३९ ॥ नूणं पक्कतोच्चिय एसो वम्मो इमाउ सजाय । जं मज्झ अणिमिसत्त सहसत्ति  
निरतरायसुह ॥ ४० ॥ पुव्वभुवुपन्नमहापुन्ना रायेण तीए फलियव । तूलिह्व अगसग इमस्स जा पाविही बाला ॥ ४१ ॥  
सन्निय जयप्पवित्ता विलसन्तसुवन्नरयणरमणीया । जा मुद्धियव लहिही करगहणमिमस्स सुहयस्स ॥ ४२ ॥ सन्निय-  
उत्तमगमणा विव्भमरहिए सुपत्तरसजाए । रमिही इमस्स जा माणसे सया रायहसिब ॥ ४३ ॥ इय चित्तती जाया-  
समसज्जससेयककलियगी । पक्खलियपया पविसइ अविइण्ह तं पलोयती ॥ ४४ ॥ वरदाणपरपि मम  
मुत्तुमिमा नियइ अन्नमइनेहा । इय थितिय कुविएणव कामेण सरेहि पहया सा ॥ ४५ ॥ मयणेण नडिज्जंती थिर-  
सरलसिणिह्वधुरच्छीहि । सन्नविया असरिसरूवहरियहियएण कुमरेण ॥ ४६ ॥ एयाए अहो रूव मोहइ मणमवि

पसंतमोहाण । गुरु रायायत्ताणं मह सरिसाणं तु का वत्ता ॥ ४७ ॥ सोच्चिय गुरुरायधरो सोच्चिय सरसो इमाए बालाए ।  
सवंगसंगमं जो लिहिही दुसिंणगरागोबं ॥ ४८ ॥ सो चेव चारुवन्नो पवित्तगुरुसुत्तसियगुणमहग्घो । एयाए मयच्छीए  
हियए हारोब जो वसिही ॥ ४९ ॥ इए चिंततो संतो मयणायत्तो ठिओ कुमारोवि । सूरचरिओवि कायरनरनियर-  
निदरिसणं जाओ ॥ ५० ॥ धवलइ कुमरं बाला नियच्छिजोण्हाए सोवि रायसुयं । पच्चुवयरंति सिग्धं गरुया रइओव-  
थारम्मि ॥ ५१ ॥ तं पेच्छरी कुमारी पत्ता पासंवि कामपडिमाए । सविणयपणामपुबं पूयं काउं समारद्धा ॥ ५२ ॥  
परिपूयंती मयणं पुणो पुणो पेच्छरी कुमरवयणं । दंसइ मयणस्सव तं दइयमिमं देहि मच्चत्ति ॥ ५३ ॥ पूयाए जाइ मयणे  
तदिही निवसुएणुरायेण । रूवंतरं व दहुं पइक्खणं कामकुमराण ॥ ५४ ॥ पुच्छइय मयणियं नाम नियसहिं को वयंसि  
एस जुवा । तीए कुमारथइयावहाउ नाऊण कहियं से ॥ ५५ ॥ सहि सुणसु कुसुमसुंदरनयरे निययपयावजिय-  
तरणी । कुसुमावयंसयनिवो भज्जा कुसुमस्सिरी तस्स ॥ ५६ ॥ पडरगुणपडरनयरं ताण सुओ कुसुमसेहरो नाम ।  
सयलकलाकलियतणू नियजोवणरमणिमणहरणे ॥ ५७ ॥ भत्तस्स विणीयस्सवि नीइपरस्सावि तस्स नरवइणा ।  
केणावि कारणेणं पराभवो विरइओ दूरं ॥ ५८ ॥ तं अवमाणं काऊण माणसे अद्धरत्तसमयम्मि । परिमियपरिवार-  
जुओ चलिओ देसंतरे कुमरो ॥ ५९ ॥ इह पत्तो विन्नातो तुह जणएणं अणिच्छमाणेवि । गंतुं पच्चोणीए रिद्धीए  
पवेसिओ एत्थ ॥ ६० ॥ संमाणिऊण भणितो मा गच्छसु वच्छ अच्छसु इहेव । जं मच्च तुच्च जणओ भित्तो अच्चंतगोरवो  
॥ ६१ ॥ ठाउमणिच्छंतोवि हु निवोवरोहा इहद्धिओ स इमो । अणमिसयं पि न गरुया दक्खिन्नपरा परिहरंति ॥ ६२ ॥ तं  
सोउं रायसुया चितइ जुत्तो इंसमि अणुराओ । नवरं एसो रत्तो नो वा संपइ न याणासि ॥ ६३ ॥ कुमरेणुत्तो थइयावहो  
अरे मंतियं क्रिमेयाए । तेणुत्तं निवकन्नासहीए तुह पुच्छियं चरियं ॥ ६४ ॥ कुमरनिरिक्खणलुद्धा निबत्तियकामपडिम-

पूयावि । तन्भवणपेच्छणछला महइं वेलं ठिया वाला ॥ ६५ ॥ वार वारं चलसुत्ति सोविदहीहिं विन्नविज्जती । पक्ख-  
 लियकम तं पेच्छिटी गया जाणमासहिउ ॥ ६६ ॥ गच्छंती कुमरेणं पलोइया सोवि तीए सबविओ । अपुरत्ते जताइ  
 धरिउ को तरइ नेत्ताइ ॥ ६७ ॥ नयणपहमइइक्ताए तीए अरई कुमारमणुपत्ता । लहइइथिय अवयास कइयावि अणिट्ट-  
 भज्जावि ॥ ६८ ॥ रमंषि तविओए उजाण पिइवणव दुक्खकर । कलयतो कुमरो तुरिय तुरयमारुहिय सचलिओ  
 ॥ ६९ ॥ नयरपवलं पविट्ठो सुणइ समाउलियलोयहलवोल । नियइ य गुरुतरुयपुरसालारुढं सभयलय ॥ ७० ॥  
 किमिमंति कयवियक्को पेच्छइ सुत्रासणं गयाहिवइ । पाढत पासाए मात्त तुरय-नर-करहे ॥ ७१ ॥ चरणागरिसिय-  
 सकलसरेण नियइयलडक्खडाए य । गलग्गिण्ण य जण जो जाणावन्तो व धावेइ ॥ ७२ ॥ मा महभारकता भूसी  
 मुच्छिज्जवत्ति कलिउं व । सिंचतो गुरुकुक्कारसिक्कारासारसल्लिण ॥ ७३ ॥ चलकन्नतालचालियससहरसिय-  
 चारुचमरजुयलेण । जो वीयइ दत्तसुहासाणद्धियं रायलच्छि व ॥ ७४ ॥ दहु सुहासाणद्धियनितणयं धाविओ  
 करि तो । सा ज्ञपाए समुत्तिन्ना नियडेणत्थे थिरो को वा ॥ ७५ ॥ पीणपओहरगुरुतरनियवभरमंथरकमगईए ।  
 नासिउमत्तरती सा गहिया करिणा कुरगच्छी ॥ ७६ ॥ दूरुक्खित्ताए पवणप्पसारिओ तीए कुतलकलावो । समयगय-  
 कडत्तडुडीणभमरनियरोष रेहेइ ॥ ७७ ॥ वियसियसिरीसकुसुमोहसमहियफ्फासलालसेण व । गाढ गण्ण निय-  
 करदेडेणालिगिया वाला ॥ ७८ ॥ करिणा हरिणकमुही सुमुही विहिया विहाइ गयणयले । नियकुंभतत्थणण व  
 पीणत्त दहुक्कामेण ॥ ७९ ॥ मा मह भाण एसा मुच्छिज्जउ इय विभाविक्कण करी । त वीयइव चलकन्नतालजुयताल-  
 घटेहिं ॥ ८० ॥ तं दहुं रायसुओ झडित्ति मुत्तं तुरगम वेगा । उद्धाइओ गय पइ हक्कतो ककससरेण ॥ ८१ ॥ रे रे  
 दुइ गयाहम मोत्तु नारिं वलेसु मह ससुह । जइ सत्तमत्थि इय सुयकुमारालावा भणइ कुमरी ॥ ८२ ॥ मह कीडिय-



कप्पाए कळे भुवणोवयारकरणखमं । नररयण मा विणाससु अत्ताणं करिकयंताओ ॥ ८३ ॥ सुयकुमरीविभ्रवणो सो जंपइ तंपि भुवणगब्भम्मि । वससि तओ रक्खिस्सं चइडं पाणेवि तं नियमा ॥ ८४ ॥ मह करगयावि चाट्टणि करेइ कुमरस्स इय विभावेडं । कुविणण व करिणा सा खित्ता दूरं गयणमग्गे ॥ ८५ ॥ विजाहरिं व गयणे गच्छंतिं तं पलोइरो कुमरो । जाओ पमत्तच्चित्तो तो संगहियो गइं देण ॥ ८६ ॥ मिलसु नियवह्हाए तुमंपि इय चिंतिडं व कुविणण । करिणा कुमरो वि नहे खित्तो तीए पडंतीए ॥ ८७ ॥ मरिही एसा एदहदूरा रयनिवडियत्ति कलिऊण । परिसत्ता करुणाए नेहेण व तेण सा गाढं ॥ ८८ ॥ आलिं गियाए तीए पडइ अहो निवसुओ निराहारो । श्रीफासलालसाणं अहो गइए न संदेहो ॥ ८९ ॥ एत्थंतरंसि वेगागएण न्हयरनेरेण एक्केण । तहुगमवि अवसं डिय नरनयणागोयेरे नीयं ॥ ९० ॥ तो पलवंतो लोगो अतरंतो लग्गिडं खयरमग्गे । गंतूण कहइ रन्नो कुमारकुमरीणमवहरणं ॥ ९१ ॥ तं सोडं आडलित्तो चलित्तो राया निरिक्खणे ताणं । पेरीयतरल्लुंगो परियडइ पुरस्स चडपासं ॥ ९२ ॥ अप्पत्तत्तपडत्ती दुरयरमहिं पलोइडं वलिओ । रुयइ रुयावि यलोगो सहमागंतुं गुरुसरेण ॥ ९३ ॥ हा वच्छे हा वच्छे हहा अतुच्छे हहा विणयदच्छे (क्खे) । हा सुकुमाले वाले अवहरिया केण तं कहसु ॥ ९४ ॥ हे देव निदत्तो तं बालं पुतं तथा हरेऊण । कंत्रपि अवहरंतो खयंसि खारं खिवसि खुद ॥ ९५ ॥ हा मह सहा वि सुन्ना तुह विरेहे कुसुमसेहरकुमार । एरिसुह(दं) सणत्थं पवसंतो तं मए धरिओ ॥ ९६ ॥ अंतैउरपउरजणेणं राइणा तह तथा तहिं रुन्नं । जह नयणजलासरो वित्थरित्तो वरिसयालोव ॥ ९७ ॥ एवं पलवंताणं ताणं तइए दिणे तरणिउदये । खयरविमाणणेणं पत्तो कुमरीउत्तो कुमरो ॥ ९८ ॥ पणतो य महीवइणो सखेयरो निवसुयावि तं नमइ । आपुच्छिय कुसलाइं ताइं निविट्ठाइं निवपुरतो ॥ ९९ ॥ रायाह कुमर साहसु हरणागमणाण निययवुत्तं । तो तं कुमराणाए कहिडं लग्गो खयरचक्की ॥ १०० ॥ देवत्थि दियवरम्मि व वेयड्ढे गुरुगिरिम्मि मणिभवणं । नयरं रहनेउरचक्कवाल नामं मणभि-

राम ॥ १ ॥ त परिपालइ विजाहराहिवो नयणवेग अभिहाणो । गहियव्यभरसिरिकिरिणवेगखयरिदअगरुहो ॥ २ ॥  
दाहिनंदीसरगरुवेगवल्लिण तेण सच्चवियं । अन्नोन्न परिसत्त पडन्तमित्थीपुरिसजुयल ॥ ३ ॥ अच्चतरुवरम्पणीरमण  
पइ रइयवुद्धिणा तेण । तहुगमवि अवहरिं नीयु सेले विसालगगे ॥ ४ ॥ तो थमणीए विज्जाए थंभिउ पुरिसमाह रमाणि  
सो । म अणुरत्तं भत्तं भत्तार सुब्भु मत्तेसु ॥ ५ ॥ तीउत्त त सुपुरिस भाया मह नियसहोयरसरिच्छो । ता उभयभवविरुद्ध  
तुमए नो किपि वत्तव ॥ ६ ॥ अवर च न सायत्ता अह जतो जणायदिन्निया कन्ना । वीवाहिज्जइ सेच्छा जुत्ता न भवारि-  
साणंपि ॥ ७ ॥ तुग्हारिसावि उत्तमकुलुम्भवा जइ मुयति मज्जाय । ता वंधव अकुलीणण पावकारीण का वत्ता ॥ ८ ॥  
कि नियपियासरीराउ मह सरीरन्मि समहियं किपि । दिट्ठ ज भाय तुम सपइ जंपसि अवत्तव ॥ ९ ॥ वित्थरइ  
जरा परिगलइ जोषणं जाइ जीवियव्वपि । कि नाम सासयं तुह देहे जमकज्जसज्जोसि ॥ ११० ॥ सुत्तपुरीसवसावासे  
दुग्गधमलविलीणमि । मह देहे कि सार जं रायरसे तुहुकरिसो ॥ ११ ॥ एत्थत्तरमि चउनाणनायनियपुत्तपाववुत्ततो ।  
तद्योहत्थ सिरिकिरणवेगसूरी तहि पत्तो ॥ १२ ॥ तेणुत्तं भो सावय कि तुब्भ कुलकम्मो इमो जमिस । पारब्बं  
तुमए निंदणिज्जमुत्तमनराण जतो ॥ १३ ॥ लज्जिज्जइ जेण जणे मइल्लिज्जइ नियकुलकम्मो जेण । कठट्टियवि जीए  
कुणति न कयाइ त सुयणा ॥ १४ ॥ कि पुत्त पिइपियामहपमुहेहि वय कयं हवइ जेसि । ते इव निम्मज्जाया तुमं व  
पावप्पिया हुति ॥ १५ ॥ अवर च इमा भइणी सहोयरा तुह सुणेमि नाणेण । ज रयणप्पायाराहिवरयणाभरणभूवइणो  
॥ १६ ॥ तं अगरुहो जेट्ठो एसावि सुया कणिट्टिया तस्स । वच्छ मए तं हरिओ निवभवणा मासमेत्तवओ ॥ १७ ॥  
कुमरीवयणविरत्ते चित्ते पिइसिक्खणेण सवेगो । लग्गो खेयरवइणो पासियवत्थम्मि रगोव ॥ १८ ॥ तो तेण पाय-  
जुयले लग्गेऊण खमाविया भइणी । उत्थंभिउ कुमार पणमिय सूरीण विन्नत्त ॥ १९ ॥ पहु मोहमहाकूवे अविवेयजले

निमज्जिरो तुमए । नियवयणवरत्ताए उद्धरिओ हं दयानिहिणा ॥ १२० ॥ परिभोगो इयराएवि पररमणीए पयच्छए  
 तरयं । किं पुण नियमइणीए आजम्मं पूयणिज्जाए ॥ २१ ॥ ता पडु कंताए समं नियरज्जं अप्पिऊण जणयस्स । संगहि-  
 यसबविरई तुह चरणाराहओ होहं ॥ २२ ॥ ठायबं तुब्भेहि रहनेउरचक्कवालनयरम्मि । इय जंपिय गुरु कुमरी  
 कुमरजुओ सो गओ सपुरे ॥ २३ ॥ दुगमवि सम्माणेउं वत्थाहरणेहिं खयरवलकलिओ । इह पत्तो तुम्ह सुतो सो हं  
 इय साहियं तुम्ह ॥ २४ ॥ ता ताय अहं जाओ दुप्पुत्तो तुम्ह जं मए दिन्नं । नियविरहेणं कुमरीहरणेण य दारुणं  
 दुक्खं ॥ २५ ॥ इय जंपत्तो भणितो निवेण मा पुत्त खेयमुबहसु । दोसो न अम्ह दोणहवि किं तु इमं दुकयकम्मफलं  
 ॥ २६ ॥ पुबभवे तवचरणं कयं मए किं तु संतरायं तं । जं तुह सरिसो पुत्तो जातो हरिओ य मिलिओ य ॥ २७ ॥  
 जायं कन्नाहरणं कन्नाहरणं परमक्कहाणं । जस्सप्पभावतो मे सुचिरेणवि पुत्त मिलिओ तं ॥ २८ ॥ इय जंपिऊण  
 गाढं जणएणालिंगितो सुतो तयणु । जणणीए नओ तीयवि अवहंडिय चुंविओ भाले ॥ २९ ॥ खेयरवइणा बुत्तो जणतो  
 तं पिण्ह ताय मह रज्जं । परिवल्लियसावज्जं पव्वज्जं पुण अहं काहं ॥ १३० ॥ तं भणइ पिया परिणयवयस्स मज्झवि य  
 जुज्जाए दिक्खा । काहं नाहं विरहं इण्हिपि तए समं जाय ॥ ३१ ॥ दोण्हंपि सम्मएणं कुमरिं परिणाविऊण कुमरस्स ।  
 दिन्नं तं रज्जं तो पत्ता सबेवि वेयडु ॥ ३२ ॥ तत्थवि अहिसिंचिय कुसुमसेहरं खयररायरज्जम्मि । खेयरनरनाहेहिं  
 गहिया दिक्खा गुरुसयासे ॥ ३३ ॥ पणमित्तु कुसुमसेहराया पुच्छइ गुरुं कहह भयवं । मह पुबजम्मसुकयं जं जाओ हं  
 खयरचक्की ॥ ३४ ॥ आह पडू आयन्नसु रयणवईए पुरीए तं राय । कम्मयरो आसि अईवदुगाओ दुग्गदेवोत्ति ॥ ३५ ॥  
 कइयावि नाणनिउणाभिहाणसूरीहिं भवपरिसाए । साहिपंतं निसुयं जिणिंदपूयडुगं तेण ॥ ३६ ॥ तहाहि ॥ फलकुसुमवख-  
 यजलथूवदीवनेवज्जावासनिम्माया । कीरइ एसा अट्टप्पयारपूया जिणिंदाण ॥ ३७ ॥ सबाओवि असत्तो काउं सयवत्तपमु-

ह्युमेति । पूयइ जो जिणचदे सो सामी ह्वइ सुमणण ॥ ३८ ॥ माणुसभवेवि नूणं जिणपूया पुत्रपगरिसपभावा ।  
 अगपि कुसुमपरिमलमुगिरइ सयावि सत्ताण ॥ ३९ ॥ किं बहुणा भोत्तूण असुरनरमारपहुत्तरिद्धीतो । सिद्धि पि ध्रुव  
 पावइ पाणी लिणनाहपूयाए ॥ ४० ॥ इय आयन्निय वावन्नदेवउलियाजुयम्मि पत्तो सो । कीरविहाराभिहजिणहरम्मि  
 मणिक्कणयघडियम्मि ॥ ४१ ॥ जाईसरेण जं कीरपक्खिणा भणिय पुत्तजयसेणं । कारविय नायजियधेणेण बहुमाण-  
 सारेण ॥ ४२ ॥ जं चउदिसिपडिदिवियपाडलकलियाहिं भमिरभमराहिं । नियइव भावरिज्जो कोवारुणनयणनिय-  
 रेण ॥ ४३ ॥ आभाइ निरुभनिसिप्पडिदिवियतारतारपपर । ज भत्तिनिभरामरविरइयसियकुसुमवरिस व ॥ ४४ ॥  
 तम्मि पविसिय नायजिण्ण द्देषेण गहिय कुसुमाइ । आणंवलइयतणू पूयइ सो रिसहजिणनाहं ॥ ४५ ॥ तपुन्नप-  
 भावेण रिद्धिं भोहं भवम्मि तम्मि ततो । जातो त खयरवई इय कहिय राय तुह चरियं ॥ ४६ ॥ त सोउ  
 जाईसरणनाणविन्नायपुधभवचरिओ । रायाह जह पहूहि कहियं विट्ट मएवि तहा ॥ ४७ ॥ तो रयणाभरणमुणी भणइ  
 मुणिदं कहेइ मह भयव । किं सुयसुयाण विरहो बहुयोवदिणाणि जाओ मे ॥ ४८ ॥ आह पहू आरामियपुत्तो कणकिन्न-  
 नामगामम्मि । आसी अंड(व?)यनामो कीरसुओ गोविओ तेण ॥ ४९ ॥ तो तं अनियत कीरजुयलमचंतहुक्खियं जाय ।  
 करुणं कूयइ असूणि मुयइ मुच्छियणुक्कल ॥ १५० ॥ जणएणुत्त पुत्तय मुंचसु तणय सुयाणमिण्हिपि । मा पुत्तविज्जाण  
 इमाणमयादिय होही ॥ ५१ ॥ तो तेणमइक्कत्तेसु नवमुहुत्तेसु सुयसुओ मुक्को । तो सजातो तोसो कीरीकलियस्स कीरस्स  
 ॥ ५२ ॥ समयतरमि कम्मिचि अवहरिया सारसीसुया तेण । तो तज्जणणिं दुहिय दट्टु सहसत्ति सा मुक्का ॥ ५३ ॥  
 कइयावि मासत्वमणे आरामे तमि सत्तियं साहु । निचपि पजुवासइ भत्तिन्भरनिन्भरो सतो ॥ ५४ ॥ भोयणकरणनिविट्टेण  
 तेण तत्थेय मासपारणए । पडिलाहितो मुणी सो सद्धासहियेण परमन्न ॥ ५५ ॥ तपुन्नपभावा सो अमरो होउं तुम

निवो जातो । कीरजुएण वि भमिडं भवन्मि समुवज्जिडं(अं) सुकयं ॥५६॥ कीरो जाओ हं किरणवेगखयरहिवो सुई वि हु  
मे । किरणावलित्ति कन्ना जाया नवरं अपुत्तो हं ॥५७॥ जा अंब(ड ?)एण हरिया सारसिया तीए सरतडे जणणी । वाणेण  
लोइएणं विद्धा खवगेण सच्चविया ॥५८॥ पंचपरमेद्धिमंतो दिन्नो से तेण तयणु सा सग्गे । अमरत्तसिदिं भोत्तु संजातो  
तुह इमो पुत्तो ॥ ५९ ॥ नहयलचलिएण मए दिट्ठो सपिएण मासमेत्तवओ । कीरहरणुत्थपावोदएण तुह सो मए हरिओ  
॥१६०॥ पडिवन्नो पुत्तत्तेण नयणवेगोत्ति तयणु कयन्नामो । समयंमि तस्स रज्जं दाडं दिक्खा मए गहिया ॥६१॥ नंदी-  
सरवलिएणं हरिया तुह कन्नया तओ तेण । अंबयभवसमुवज्जियसारसियाहरणपाववसा ॥ ६२ ॥ अट्टारसघडियाहिं  
अट्टारसवच्छराणि सुयविरहो । जाओ तह दिवसत्तिगं सुयाए सह अप्पपावेण ॥ ६३ ॥ ता सुमुणि कोउउप्पाइयं पि इय  
दुक्खदायगं पावं । रागदोसवसकयं तं पुण वियरइ भवोहदुहं ॥६४॥ इय कहियं तुह चरियं तो रायरिसीवि जाइसर-  
णेण । तं नाउमाह एवं जह पहु तुवभेहिं कहियंति ॥ ६५ ॥ नवदिक्खियमुण्डुत्तं नमिऊण गुरुं निवो कहवि दिवसे ।  
भोत्तुं खेयरज्जं रयणप्पायारमणुपत्तो ॥६६॥ नीईए तथ्य पालइ रज्जं मुंजइ पियाए सह भोए । निचंपि कुणइ तित्थप्पभावणं  
पूयइ जिण्णिदे ॥६७॥ दंडिप्पवेसिएणं कहयावि हु जणयमंतिणा राया । नमिडं विन्नत्तो देव तुह पिया निण्हिही दिक्खं ॥६८॥  
रज्जारिहोत्ति केणइ हणिज्जिही एस इय विभावेडं । पिउणावमणिओ तं न चेव पहु रागदोसेहिं ॥६९॥ ता तुम्हे पिउरज्जस्सि-  
रिमागंतुं अलंकरह पहुणो । कारणकयावमाणविसए खेओ न जुत्तो जं ॥ १७० ॥ तं निसुणिऊण सम्माणिऊण तं तेण  
संजुओ राया । तथ्य गओ पयपणओ पिउणा आलिंणिओ गाढं ॥ ७१ ॥ संभासिय ससिणेहं निवेसिओ नियपए तओ  
रन्ना । गीयत्थगुरुसयासे रिद्धीए कयं वयगहणं ॥ ७२ ॥ पालई सो रज्जतिगं नरखेयरायरइयपयसेवो । नंदीसराइठणेषु

१ 'संजाओ तुह नरवर अट्टारसवच्छराणि सुअविरहो' इति पाठान्तरम् ।

जाइ सासयजिणे नमिउ ॥ ७३ ॥ उवसुंजिऊण रजेसु तिसुवि लच्छि पभूयकाल सो । रयणावलीसुयं कुसुमपरिमलं  
नाग ठविय पए ॥७४॥ गुरुनयणवेगपासे घेचु दिक्सं कलत्तकल्लिएण । उप्पन्नकेवलेण पत्त मोक्खम्मि नरवइणा ॥७५॥  
कुसुमेहिं जहा रइया पूया एणण भूमिनाहेण । परमाणदसुहत्थ कज्जा अन्नेण वि तहेव ॥ ७६ ॥ -> कुसुमपूजा ॥  
५ ५ ५ ५ एतो इ उयुमपूयाफ़लम्मि लिरिउकुसुमेहरो व्हिओ । अक्खयपूयाए कह अक्खयकित्तिस्स निसुणेह ॥ ७७ ॥ ५ ५ ५ ५ ५ ५

मसिणियघुसिणरसेणव अरुणारुणरयणभवणकिरणेहिं । रजती दिसिवयणाइं कित्तिकल्लिया पुरी अत्थि ॥७८॥ मणि-  
कुट्टिमसंकंताहिं जीए निसि गिण्हिणीउ मुद्धातो । विलयाओ वेळविलंति मोत्तियाइं ति ताराहि ॥ ७९ ॥ ससहरजो-  
ण्णामरसरित्सकित्तिपब्भारमरियमुवणययलो । निम्मलकित्ती नामेण नरवइं विलसए तत्थ ॥१८०॥ वामकरेणेक्खेणं इय-  
रेणुब्भामियासिजणिणण । फरएणव विइएण घरिणण रणंमि जो सहइ ॥ ८१ ॥ पट्टमहादेवीपयपहुत्तमुव्वहइ तस्स सिय-  
सीला । लीलायमाणदेहा कित्तिसिरीनामिया दइया ॥८२॥ अच्चब्बुयस्सरुव जीए रूवं पलोइउ दूरं । अरइए परिग्गहिया  
रइं वि सह वरुणलोएण ॥८३॥ तीए समत्थि गुरुअत्थिसत्थपविइन्नअत्थवित्थारो । पुत्तो अक्खयकित्ती नामेण कम्म-  
णावि सया ॥ ८४ ॥ तेयस्सी दित्तिपहुव ईसरसिरसेहरो ससहरोव । पसमरसियमई सबया सुसाहुव जो सहइ ॥ ८५ ॥  
निम्मलकलाकलायं परिकलयत्तस्स तस्स पुणरुत्त । जति दिणाइं निरतरपिउपयसेवापसत्तस्स ॥ ८६ ॥ सहितो कयाइ  
समवयसिंगारियारायउच्चमिच्चेहिं । आरुहिय तुरग तुरयवाहियालीए सपत्तो ॥८७॥ पुलभमिवारिकाहिं (?) वाहिय तुरयं  
निवारिउं मिचे । दाऊण कसाघायं सो मुक्को तेण वेणेण ॥ ८८ ॥ विरइयगुरुत्तवेओ ह्ओ गतो जाव दुरदेसम्मि ।  
मिच्चेहिं ततो तुरया कुमरपहे पेरिया तुरियं ॥८९॥ महम्मगम्मि महीए इति इमे नो नहत्ति कलिउव । सहसत्ति समुप्प-  
इतो कुमरतुरंगो नहयलेण ॥ ९० ॥ गुरुपवणनयणमणजवजइणा वेणेण जाइ गयणयले । कुमरतुरओ रयेण जेउं पिव

रविरहवुरंगे ॥ ११ ॥ उगगीवाणं मं प्रेच्छिराण पीडा भडाण भवहिति । परिभाविडं व तुरओ तन्नयणागोयरे पत्तो ॥ १२ ॥  
 रायंगरुहे हरिए हियहियतो इव समगपरिवारो । कायबविमूढमई पत्तो रायतिथं ज्ञत्ति ॥ १३ ॥ साहइ कुमारहरणं तं  
 सोडं मुच्छिओ महीनाहो । तबेलमेव जाओ निचेट्टो चत्तपाणोब ॥ १४ ॥ चंदण रसलडासेयवससुवलद्धचेयणसहावो ।  
 रुयइ सकरुणं पागयनरोब अंतेउरेण जुतो ॥ १५ ॥ हा हा कुमार हा सुवणसार हा रइयरम्मसिंगार । हा विहलिय-  
 अब्भुद्धार हा हहा समरदुबार ॥ १६ ॥ हा जाय जाय हा विहियनाय हा धरियरायमजाय । हा हा पररमणीभाय हा  
 हहा सुवणविक्खाय ॥ १७ ॥ को उच्छंगे धरिऊण मह काम कुमार कोमलकरेहिं । संवाहंतो काही आणंदमहूसवुक्करिसं  
 ॥ १८ ॥ कुंडलसरलुत्तरियाकंकणकेऊरमणिमयाभरणे । रंजिज्जतो दाही दाणे को वंदिविदाणं ॥ १९ ॥ इय पलवंते  
 संतेउरे निवेमंतिणा विमलमइणा । कुमारनिरिक्खणकजे तुरयाणीयं समाइहं ॥ २०० ॥ तंपि दुवालसजोयणमाणम्मि  
 महियले परिब्भसिडं । नवरं कुमारवत्तामेतंपि न तेण संपत्तं ॥ १ ॥ तइयम्मि दिणे पसरंतसोयसंभारनिवभरे  
 नयरे । कुमरो खयरविमाणाऊरिय गयंगणो पत्तो ॥ २ ॥ नयणेहिं समं हरिसं वियासयंतो नरिंदलोयाण । पणओ  
 जणणीजणयाण तेहिं आलिंगिओ गाढं ॥ ३ ॥ तो चेडीचक्कजुया कुमरुणुणं नया कुमरवहुया । आसिहिं ताण उडा  
 सुद्धंते संठिया गंतुं ॥ ४ ॥ जंपइ जणओ तुमए दिन्नो किं अम्ह पुत्त दुःखभरो । सो भणइ सुहदुहाणं दाया देवो न  
 चेव अहं ॥ ५ ॥ रायाह सुहदुहाणं जं अणुभूयं तएवहरिएण । तं साहसुत्ति तो कुमरसुमरिओ आगओ अमरो  
 ॥ ६ ॥ तं दडुं मणिकुंडलकिरीडकेयूरकंकणाहरणं । विम्हियमणो नि(वो)पूई ऊण तस्सासणं देइ ॥ ७ ॥ तत्थुव-  
 विसिडं सो कुमारपेरिओ कहइ हरिणवुत्तं । पायालंमि पुरी अत्थि चमरचंचत्ति मणिभवणा ॥ ८ ॥ जीए सामारुण-  
 सियमणिभवणपहाहिं संवलज्जन्ता । अमरा भमन्ति मयणाहिधुसिणचंदणविलित्तब ॥ ९ ॥ तथावट्टियजोबणसुरंगणा-

गणविलासदुल्लिओ । युधतचारुचमरो चमरो नामेण अमरवई ॥ २१० ॥ निवसति तत्थ रवितेयचंदतेयाभिहा अमर-  
 दुमरा । रविचंद्रा इय भमिग हरति तेएण तिमिराइ ॥ ११ ॥ निदालसाइसरीरलिगनिच्छइयवचणसम्भावो । जपइ  
 रवितेओ मित्त चवणसमओ इमो मञ्ज ॥ १२ ॥ ता म पत्तनरत्त पडिबोहेज्जसु मुमं अवसरम्मि । इय जपिउ चुओ सो  
 मुमरियजिणगुरुचरणकमलो ॥ १३ ॥ नयरम्मि धरासारे मणिमदिररइयधरणिसंगारे । जाओ राया सिरियणसुंदरो  
 नाम रम्मगो ॥ १४ ॥ विलसतरुवजोषणअभगसोहग्गसगयगीहिं । दइयाहिं समं विसए उवमुजतो गमइ काल  
 ॥ १५ ॥ कइयावि चंदतेएण मित्तचेवण तस्स रयणीए । कहिओ सुरभवरइओ नरत्तपडिबोहवुत्तवो ॥ १६ ॥ त सोउ  
 जाईसरणाननयेण दिट्ठपुव्वभवो । जंपइ राया तुमए पडिवन्न पालिचं किउ ॥ १७ ॥ पडु जोषण नव मणहरा  
 सिरी असमसुहरा वि सया । रत्ताओ कताओ भत्ता मित्ता अपुत्तो ह ॥ १८ ॥ ता अज्ज वि असमत्थो अप्पहिय  
 काउमाह अमरो वि । परमत्थविमूढमईण राय इय उत्तराइ जओ ॥ १९ ॥ रोयजराजोयविणस्सिरस्स तस्सणियण-  
 मणहरस्सावि । का राय सारया जोषणस्स मोत्तु तवधरणं ॥ २० ॥ चोरानलजलपायगहाइवहुविहअवायसज्जाए ।  
 धम्मट्ठाणवयमत्तरेण न सिरीए अत्थि गुणो ॥ २१ ॥ सरिसवसमसोकक्करा सुरगिरिगुरुदुक्खदाइणो दूर । अबा-  
 सत्तीए तणुक्कसय न कि दिंति निव विसया ॥ २२ ॥ अतो नित्रेह्वाणं पवचरयणाहिं रजियजणाण । कि सार कताण  
 मरणताणत्थेइऊण ॥ २३ ॥ परदइयाद्वगहविरइयमेत्ती कुमुद्धहिययाण । कि वत्तेसि नरेसर सकज्जसज्जाण मित्ताण  
 ॥ २४ ॥ परिपालिया वि परिपालिया वि अप्पियधणावि निव नूणं । पुत्ता न परित्ताणं कुणति नरए पडताण ॥ २५ ॥  
 भववासलालसाण हवति आलवणाइ एयाइ । अणुसरियसीहवित्तीण न उण आसन्नस्सिद्धीण ॥ २६ ॥ थिरजोषणाहिं  
 अणुराइणीहिं पयईए सुरहिगंधाहिं । विसए देवीहिं सम भोत्तूण चिर न जइ तित्तो ॥ २७ ॥ वा गलिरजोषणाओ



किञ्चिन्मरायाओ दुरहिगंधाओ । नारीओ असुइभरियाओ विलसिरो किमिह तिप्पिहिसि ॥ २८ ॥ वसिडं समगसुह-  
 वस्थुपरिमलुगारसुरहिसुरलोए । वसियस्स असुइगग्भे न विराओ तुह हहा मोहो ॥ २९ ॥ नियपडिवण्णे निरिणो  
 जाओहं राय तुह हियं कहिडं । ता कुणसु जमप्पहियं मा मज्जसु मूढ भवक्खुवै ॥ ३० ॥ इय सुयउवसमरसअमयवरिससम-  
 अमरदेसणो राया । सिरंविरेइयकरकोसो संविग्गमणो भणइ अमरं ॥ ३१ ॥ पहु तुमए अमएणव महमोहमहाविसं  
 हरेऊण । उप्पाइओ पबोहो उवयारपराइहवा गुरुणो (पाठांतर भवे गुरुणो) ॥ ३२ ॥ ता इण्हि गिण्हिस्सं दिक्खं परिणावि-  
 उं दुहियमेगं । दाउं रज्जंपि वरस्स मित्त ता आणसु तयंति ॥ ३३ ॥ एवंति भणिय अमरो पत्तो नयरीए चमरं चआए ।  
 अमरविणोयपमत्तो रायवरं सरइ दसमदिणे ॥ ३४ ॥ अवखयकित्तिकुमारं हरिऊणं रयणसुंदरविवस्स । अप्पसु  
 झडत्ति इय भणिय पेसिएणुचरममरं सो ॥ ३५ ॥ इय पडिवज्जिय नयरीए कित्तिकलियाए इत्ति संपत्तो ।  
 कुमरे तुरंगनिचयं आवाहंतं पुरीए वहिं ॥ ३६ ॥ विहियममरेण निवसुयहरूवं तंमि निवसुओ चडिओ । तो गंतुं दुरपहे  
 गयणेण गओ हओ सहसा ॥ ३७ ॥ गरुयगिरिसरियनयराइं गयणमग्गेण इक्कमंतेण । अमरतुरएण वेरी सच्चविओ  
 उज्जओ इतो ॥ ३८ ॥ तं दहुं सो नट्टो मोत्तुमणवलंबणं नरिंदसुयं । अप्पंमि विणस्संते परोवयारी हइ विरलो ॥ ३९ ॥  
 निवडइ रायंगरुहो रएण गयणंगणा निराहरो । सट्ठाणब्भट्ठाणं गरुयाणवि होइ वा पडणं ॥ ४० ॥ अवरुंडिऊण धरिओ  
 निवपुत्तो वानरीए निवडंतो । सुहपुत्रपरिणईए जंतो जीवो व नरयस्मि ॥ ४१ ॥ कोमलकिसलयनिचये निवेसिडं तं  
 जलासया सलिलं । धेतूण पत्तपुडए धोयइ दासिब तच्चरणे ॥ ४२ ॥ खल्लरकयलिफलदाडिमाइ भोयविय पाइओ  
 सलिलं । तीए मिडदलरइए सत्थरए सोविओ तयणु ॥ ४३ ॥ उल्लयपूग्गफलनागवेह्लिदलदावदद्धगिरिचुन्नं । आणित्तु तीए  
 दिन्नं तंबोलं मुंजइ कुमारो ॥ ४४ ॥ उवविस्सिय सम्मुही सा करकयकयलीदलेण कुमरतणु । वीथंती अवलोयइ रायसुयं

पत्ताणि । वेद्युत्तरसेटीए गयणवल्लहपुरे तालि ॥८१॥ उववेसिंडं सहाए कुमर खयररुहिवेण रज्जसिरी । उवणीया भणिरेणं  
त सामी सेवगो ह ते ॥ ८२ ॥ कुमरेणुत्त विलससु विलच्छि जं मएवि वुह दिन्ना । नवर मए समाण अणुहवमाणो  
सिणेहभर ॥८३॥ त सोउ खयरिंदेण दिट्ठदियएण पूहउ अमर । कुमरकुमरीण रइओ सम्माणो नियसिरिसरिसो ॥८४॥  
तो अमरो कुमरीकुमरखेयराहिवलेहिं सजुत्तो । चलिओ पत्तो य धरासांरे नयरे गुरुरएण ॥ ८५ ॥ कुमरी अवहरण-  
ससोयलोयपिहियावण तमिस्सत्तो । पत्तो विसन्नसिंगारहीणनिवलोयमत्थाण ॥ ८६ ॥ दट्टु अमर कुमरीए सगय  
नट्टोयसत्तावो । राया पूइय अमर आलिंइ कन्नयं हिट्ठो ॥ ८७ ॥ फाउ कुमारखयेरसराण सम्माणममरुल्लवइ ।  
मित्त सुयाउत्तत हरणागमणाण मह कहसु ॥ ८८ ॥ तो अमरेण समग कन्नाकुमराण हरणवुत्तंत । कहिउ भणिओ  
राया परिणावसु कन्नय कुमर ॥८९॥ ठविउ रज्जम्मि इम अप्पहिय कुणसु गहियपव्वज्जो । इय भणिए जा चिंतइ विवाह-  
सामगियं राया ॥ ९० ॥ ता अमरेण ससचीए झत्ति मणियभयावलीकलिओ । वीवाहमडवो पचवन्नधयमालिओ  
विहिओ ॥ ९१ ॥ रइया य हट्टसोहा समतओ देवदूसविसरेण । किवहुणा निवाचिंतियमरेण कयं समगपि ॥ ९२ ॥  
गुरुरिद्धीए कुमरी दिन्ना कुमरस्स तेण परिणीया । करसोयणम्मि दिन्न रज्ज सत्तगमवि तस्स ॥ ९३ ॥ एथ्थतरमि उज्जाण-  
पालओ वडिसूइओ पत्तो । पल्लवओ नामेण नमिउ विन्नवइ नरत्ताह ॥ ९४ ॥ देवुज्जाणे कलकोइलाभिहे केवली समो-  
सरिओ । सोऊण तइ वियरइ राया पीइप्पयाण से ॥ ९५ ॥ गुरुरिद्धीए सुरखेयरिंदनविणवइपरिगओ उरिय । पत्तो  
उज्जाणे नमिय केवलं तत्थ उवविट्ठो ॥ ९६ ॥ दट्टूण केवलं नवनिवई मुच्छाए महियले पडिओ । सिसिरकिरिया-  
समुवलद्धचेयणो पुच्छिओ रत्ता ॥ ९७ ॥ कि राय मुच्छिओ तं सो जंपइ केवलं पलोएउ । मह जाइसरणससूया इमा  
आगया मुच्छा ॥ ९८ ॥ दिट्ठो नियसुवभवो हुतो कासीभिहाण देसे ह । दुग्गयपडागनामो आजम्मदरिहिओ विप्पो ॥ ९९ ॥

देसेसु परियडंतो कथाइ उववासतिगुसियदेहो । पत्तो मञ्जण्हे कणयसालपुर-तिलयउज्जाणे ॥ ३०० ॥ दड्डूण तत्थ  
नवसालितंडुले निक्खिणंतए वणिइ । आह अहं पहसंतो तिलंधणो देह ता किं पि ॥ १ ॥ तो तेहिं सालितंडुलपसइडुगं  
गुरुइयाए दिन्नं से । तं घेतूण पविट्ठो उज्जाणभंतरे जाव ॥ २ ॥ ता नियइ केवलिसुणिं जिणपूयफलं जणाण  
साहंतं । जो कुणइ जिणसट्ठवि प्रया तो लहइ सो सिद्धि ॥ ३ ॥ ताओ फलजलनेवज्जदीवधूवक्खएहिं परमेहिं । वासेहिं  
कुसुमेहिं य भणियाओ समयसन्थेसु ॥ ४ ॥ सबाओ वि असत्तो तं कुणइ जिणरस अक्खएहिंवि जो । भोत्तुं सयल-  
सिरीओ सो अक्खयसोक्खमवि लहइ ॥ ५ ॥ तं सोउ सो चिंतइ न पुव्वजम्मे मए कओ धम्मो । तेण न संपज्जइ मे  
भमिरस्स वि भेक्खमेत्तंपि ॥ ६ ॥ ता जिणयूयं सालीए काउमज्जेमि सुकयसंभारं । जं भिक्खाभमणेणवि भविही  
मह छुहपरित्ताणं ॥ ७ ॥ इय चिंतिय भत्तीए नमिय सुणिं भणइ कहइ कत्थ जिणो । पूएमि जहा तो सावएण सो  
जिणहरे नीओ ॥ ८ ॥ जं कणयमयं मणिकिरणकिन्नवणराइविलिसिरउवंतं । कंचणगिरिइ कप्पहुमावलीवेडियं सहइ  
॥ ९ ॥ तंमि पविट्ठो पेच्छइ पसंतरूवं जिणेसरं रिसहं । आणदअंसुजलकलियलयो यणो भत्तिकंटइओ ॥ ३१० ॥ मणि-  
मयकुट्टिमसिलमाणभालमभिनमिय सामिणो तेण । अक्खयढोयणपूया विहिया बहुमाणसारेण ॥ ११ ॥ दड्डूण तस्स  
भत्तिं नियगेहे सावएण से दिन्नं । निद्धण्हभोयणं तदिगाउ सो सुत्थिओ जातो ॥ १२ ॥ तो कालगतो समभावसंगतो  
निवसुतो हसुप्पन्नो । दड्डूण केवलिसिमं जाईसरणं समुप्पन्नं ॥ १३ ॥ निवभग्गस्सवि मज्झं रिद्धी सुगुरूवएसनायाए ।  
जिणपूयाए कयाए जाया इय साहियं लुम्ह ॥ १४ ॥ तं सोउं संजाओ जणरस जिणपूयणम्मि बहुमाणो । राथावि  
सावरोहो दिक्खं गिण्हइ गुरुसयासे ॥ १५ ॥ पणमिय गुरुणो नवदिक्खिए य संभासिऊण नवनिवइं । खेयरवइं च  
अमरो गओ सठाणम्मि कयकिञ्चो ॥ १६ ॥ नवदिक्खियमुणिजुयकेवलिक्खे नमिय नहरिंदजुतो । पत्तो पासाए तत्थ सुत्थयं

रइय रज्जस ॥ १७ ॥ खेयरविमाणसेणाए तुम्ह चरणंतिय समणुपत्तो । नमिय निविट्ठो पुट्ठो नियहरणं कहसु वच्छत्ति  
 ॥ १८ ॥ तो एय सुमरिओ चंदतेयअमरो समागतो सो ह । कहितो य हरणहेऊ जुत्त तुम्हपि हियकरण ॥ १९ ॥  
 त सोउ नरनाहो जंपइ भो अमर सुयणसिररण । निक्कित्तमोवयारी तमेव जो एवमुवइससि ॥ ३२० ॥ नियमेण वयं  
 काह रज्ज दाउ सुयरस इण्हिपि । इय जपिरे नरिंदे सहसत्ति तिरोहितो अमरो ॥ २१ ॥ तो रत्ता नवनिवई अणिच्छ-  
 माणोवि ठाविओ रजे । गीयत्थगुरुत्तासे सय तु अगीकया दिक्खा ॥ २२ ॥ कइयावि हु सम्माणिय विसज्जिओ  
 राइणा रायरचप्पो । कज्जेसु ममाएसो देवत्ति पयपिय गओ सो ॥ २३ ॥ पइदियहंपि पतुडुप्पयावण्भारदुस्सहो दूर ।  
 रिउमडलाइ राया परितावइ निम्हतरणिब ॥ २४ ॥ कइयावि हु वेयडु विलसइ विजाहरिदवाहरिओ । कइयावि धरा-  
 सारे रज्जसिदिं चितए गतु ॥ २५ ॥ पयडइ नीइ पालइ पयाउ पूयइ जिणे गुरु नमइ । साहइ देसे एवं वंचति निवस्स  
 दिवसाइ ॥ २६ ॥ कालेण कित्तिमालादेवीए उदारकित्तिनाम सुओ । जातो सगहियकलो विवाहितो रायकन्नाओ  
 ॥ २७ ॥ त रजे अहिसिंचिय गिण्हइ सपिओ वय जणयपासे । कयतवचरणो उप्पन्नकेवलो सिद्धिमणुपत्तो ॥ २८ ॥ जह  
 अक्खएहिं विहिया जिणिंदपूया इमेण नरवइणा । सिद्धिसुहकखिणा तह कजा अण्णेणवि नरेण ॥ २९ ॥ ॐ अक्षतपूजा ॐ  
 ५ ५ ५ ५ ५ भणिओ अवखक्कित्ती अक्खयपूयाए सपय तुम्हे । फलपूयाए नित्तमह फलसारं वागरिज्जत ॥ ३३० ॥ ५ ५ ५ ५ ५ ५  
 विष्णुरिय—भूरिकरदुरवल्लोयमणिमदिरावल्लिकलियं । सूरुहकयावास ब अत्थि सूरुप्पहं नयर ॥ ३१ ॥ अन्नोन्न-  
 मिलियमणिगिहकर किन्नहम्मि पक्खिणो नूण । विथारियजालमिव न जमि पविसति वधभया ॥ ३२ ॥ सारय-  
 विकरपसरियपयावसत्तावियाहिओ तत्थ । अत्थि प्पयावसारो नामेण निवो रणवसणी ॥ ३३ ॥ सधगचग-  
 नियरुवगबनिज्जिणियअच्छराविसरा । तस्सत्थि हत्थिक्खुमत्थलत्थणी जयसिरी जाया ॥ ३४ ॥ तन्नयणब्भमरगण

आणंदइ सुमणपत्तभरपरमो । फलसारो नामेणं दुसोव दूरुन्नतो कुमरो ॥ ३५ ॥ कइयावि सहासीणे निवंसि  
कुमराइरायमंतिजुए । झणहणिरिकिकिणगणं विमाणमेग समणुपत्तं ॥ ३६ ॥ तम्मज्जाड पसरंतमणिमयाभरणकिरण-  
दुनिरिक्खो । रविरहरयणाओ रविब खेयरो झत्ति नीहरिओ ॥ ३७ ॥ पडिहारकयपवेसस्स तस्स संमाणपुव्वमवणिवई ।  
खयरहिराय साहसु आगमणत्थंति जंपेइ ॥ ३८ ॥ सो आह ससहरसिओ वेयड्ढो नाम वामदेवोव । गंगासिंधुपरिगतो  
अत्थि गिरी गरुयनयरसिओ ॥ ३९ ॥ नयनायरगुणनिज्जियसमगपुरपत्तवेजयंतिव । तत्थत्थि वेजयंती नयरी  
मणीभवणकमणीया ॥ ४० ॥ गोरीपन्नत्तीपमुहसिद्धविज्जापभावडुजेओ । विज्जाहराया तत्थ अत्थि सिंगारसारोत्ति  
॥ ४१ ॥ निम्मलनहकयसोहा पवित्तसन्भावभासियदिसोहा । तारावलिब जाया जाया तारावली तस्स ॥ ४२ ॥ तीसे  
असेससुवणेक्कभूसणं रूवरेहविजियरई । जाया मणुन्नकन्ना सिंगारतरंगिणी नाम ॥ ४३ ॥ सद्धिं सुहवणेणं कलाकलवणेण  
तारतारुणं । जायं तीसे सिंगारगारुगुगारपरिकलियं ॥ ४४ ॥ कइयावि सा सहीयणसहिया मणिमत्तवारणासीणा ।  
गयणे जंतं चारणमुणिंदसिक्खिय गया मुच्छं ॥ ४५ ॥ चंदणरसच्छडासेयसिसिरकिरिओवलद्धचेयन्ना । संसुसही-  
हिं सा पुच्छिया तुमं मुच्छिया किमिह ॥ ४६ ॥ आयन्नहत्ति जंपिय सा मुच्छाकरणं कहइ तासिं । संसारसरुवंपिब  
अत्थि अरन्नं अदिद्धंतं ॥ ४७ ॥ गुरुभूरिसाहिसाहासहसअंतरियअंतरिक्खंमि । सावयमीउव्व जहिं पक्खिवइ  
करे न सूरौवि ॥ ४८ ॥ पेच्छिज्जंतकुंगं दरिइगामीण देवहरयं व । जं विगयरायचित्तं विरायए केवलिकुलं व  
॥ ४९ ॥ तरुणो व्व विलसिरवओ विसालतो सरसकमलनियरो व्व । तत्थप्पसरियसालो अत्थि वडो पुरनिवेसोव्व  
॥ ३५० ॥ बालायवदलनिम्मावियं व सबंगपिंगपहरोमं । अच्चंतंचलं जं तरुणीअणुरायरइयं व ॥ ५१ ॥ धरमाण-  
सरुणवयणं मसिणियघणघुसिणरसविम्मिस्सं व । वानरजुयलं परिवसइ पायवे तम्मि यणेहेहं ॥ ५२ ॥ जुयलं ॥

कश्याचि करहरसरवसहस्रगडसेरहरसहस्र-सञ्जुतो । सपत्तो सत्थाहो नामेण धणावहो तथ ॥ ५३ ॥ आवासिओ  
 य वडविडवितडकए गडुरे गहीरम्मि । गुणिणीविमाणयाइसु जहजोग सेसलोगोवि ॥ ५४ ॥ एयंतरमि तवतेयभासुरो  
 रइयउत्तरासगो । निम्हत्तरणिध चारणसमणसुणिंदो ह्यतमोहो ॥ ५५ ॥ अगीकयविरइरतो अनिरुद्धसुओ अविगहो  
 समय । जयजणमणकययासो सोहत्तो कामदेवोव ॥ ५६ ॥ गयणगणेण पत्तो तत्तो सत्थाहिवो सवहुमाण । त  
 नमिय निसीयावइ पट्टम्मि निसीयइ सयपि ॥ ५७ ॥ दहु त नवजोषणमन्वुयरूव भणेइ सत्थाहो । कि पहु तुह वेरगं  
 ज लहुण्णवि वय गहिय ॥ ५८ ॥ आह प्हू सत्थाहिव आयन्नसु अस्थि वहुल्लोगम्मि । बहुपुत्रपावणिज्जो सोहम्मो  
 नाम सुरलोओ ॥ ५९ ॥ जम्मि वहुवरिकरदुरवलोयमणिमयविमाणहयतिमिरे । लज्जतोष न पविसइ कायरपुरिसोव  
 सूरुओ ॥ ३६० ॥ पुन्नप्परिसवसही निरुवमरूवो असीमइस्सरिओ । त परिपालइ सक्को कयरिडगणमाणसधसफ्को  
 ॥ ६१ ॥ तस्सत्थि परमगित्तो समरिसरीओ समाणासिंगारो । नामेण सरिरेणय विक्खाओ अमित्येओत्ति ॥ ६२ ॥  
 विलसिरत्तणुकतिमई कंतिमई नाम सहयरी तस्स । दइयवियोग सा विसयलालसा न सहइ रणपि ॥ ६३ ॥ भणइय म  
 मोत्तु त मा गच्छसु सामि सक्कपासम्मि । ज तुह विरहुकरिसो दूर विदुरइ सरिरे मे ॥ ६४ ॥ पत्तमहाणदा इव समयदह-  
 सगसुहियदेहव । तुहसगसगया सामिसाल ह होमि नियमेण ॥ ६५ ॥ इय तवयणस्सवणा नियदेहओ वि नियधणाओ वि ।  
 अवमहिय त मन्नइ दइय सो जीवियाओवि ॥ ६६ ॥ सुरलोयसभवासमविसयस्सासगसत्तचित्तस्स । अन्नाओचिय  
 गच्छइ कालो से चत्तधम्मस्स ॥ ६७ ॥ समयतरमि महइ वेळ ठाउ सुरिदपासम्मि । जा गच्छइ ता पेच्छइ न भारिय निय-  
 विमाणपि ॥ ६८ ॥ कथ गया मे कता कंतिमई इय विभाविउ जाव । तविरहविदुरिओ त नाणेण पलोइउ लग्गो ॥ ६९ ॥  
 ता अवरसिहरगिरिंदसदवणदक्कसमडवतलम्मि । विसयासत्त अवरामरेण सद्धि तमिक्खेइ ॥ ३७० ॥ गुरुरोसावेगा

रत्नेत्तपहभरपिसंगियग्नहो । तद्गुग्दहणनिमित्तं निसद्वगुरुतेखेसोच्च ॥ ७१ ॥ तो ताण मारणत्थं काउं वेगं गतो  
गिरिसिरे सो । नद्धां दुयं दोन्नवि को ठाइ पुरो दुजयरिउणो ॥ ७२ ॥ नद्धे दुगेवि वेरग्गवासणावासिओ विचिंतेइ ॥  
पेच्छ अहं वेलवित्तो विवेकलिओवि पावाए ॥ ७३ ॥ तुहविरहविदुरियाहं ठाउं चेद्धामि नो निमेसंपि । ताण भणियाण  
जायं अवसाणं एरिसमिमीए ॥ ७४ ॥ धिद्धी धिरत्थु इत्थीण ताण जाहिं विमोहिया संता । मइरामत्तव विवेइणोवि  
मूढत्तणं जंति ॥ ७५ ॥ जिणचवणजम्मदिक्खाकेवलनिबाणपव्वपूयणओ । सुकयं समज्जियं नो मए पियामोहमूडेण  
॥ ७६ ॥ जाण कए पाणावि हु तणगणाए सया गणिज्जंति । तासिं इमं सरूवं ता धिद्धी धी सिणेहस्स ॥ ७७ ॥  
धेपंपति रूवजोव्वणविज्जाविन्नाणनाणदविणेहिं । नो पावण्यईतो ता धिद्धी थीसिणेहस्स ॥ ७८ ॥ विस्सासिउण वाहंति  
दासवितीए मह समं मूढं । अपंपति पुण न अपंपं ता धिद्धी थीसिणेहस्स ॥ ७९ ॥ वच्चंतु खयं विसया पज्जत्तं मज्झ  
सव्वभज्जाहिं । जो हं अणप्पवसओ विडंवंणं एवमणुपत्तो ॥ ३८० ॥ वेरग्गसंगओवि हु न सव्वविरइध्वयस्स जोग्गो हं ।  
ता इह लोयसुहस्सव चुक्को परलोयसोक्खस्स ॥ ८१ ॥ ता इह भज्जादुच्चरियसुमरणत्थं करेमि किंपि अहं । जं दहुं  
परलोए उप्पज्जइ मज्झ पडिबोहो ॥ ८२ ॥ इय चित्तिउण तेणामरेण विप्फुरियकिरणरयेहिं । रोहणगिरिसिहरंपिव रूदं  
जिणमंदिंरं रइयं ॥ ८३ ॥ गीयत्थसूरिमज्झ(हत्थ?)प्पइट्ठियं तत्थ कारियं तेण । सिरिरिसहनाहविंबं जाणंव भवन्नवुत्तरणे  
॥ ८४ ॥ ता सक्केण संयं तत्थ अट्टदिवसाइं ऊसवो विहिओ । इय अणुदिण जिणपूयणसज्जियसुकओ चुओ  
अमरो ॥ ८५ ॥ उप्पन्नो वेयद्धे दाहिणसेणीए अयलनामाए । नयरीए विजयप्पहरायपियाए जयाए सुतो ॥ ८६ ॥  
विज्जुप्पहोत्ति विज्जावियक्खणो मित्तमंडलीकलिओ । चलिओ नहेण कइयावि कीलिउं तं गिरिं पत्तो ॥ ८७ ॥ दड्ढूण  
जिणहरं जायजाइसरणो पयासइ सु(स?)हीण । कुमरो अमरत्ते नियपियाकुसीलत्तवेरग्गं ॥ ८८ ॥ निंदइ दुस्सीलाओ

मद्विलाओ कहइ धम्मसव्वस्स । भणइय भव जाय जमज्जमिह कीलिउ पत्ता ॥ ८९ ॥ भज्जा दुच्चरियस्सरणकारण-  
विरइय जिणाययण । जायइ जेण विराया भवतरे सव्वविरई मे ॥ ३९० ॥ ता गिण्हिय सामन्न निस्सामन्नं तत्र चरि-  
स्सामि । ता गित्ता खमियधं ज तुम्ह मए कथमजुत्त ॥ ९१ ॥ तो सविग्गा ते विति तुम्ह मगं वयंपि अणुसरिमो ।  
तो सवे मा(मो)यावियजणया दिक्खं पव्वज्जति ॥ ९२ ॥ कयवालकालवभयथावि सजायवहुसुया सवे । ता गुरुणा विपज्जुहो  
ठवित्तो जोगोत्ति सूरिपए ॥ ९३ ॥ सो सव्वथवि भवे पडिवोदतो विहारमायरइ । अज्ज पुण नंदीसरजिणविवे  
वदिउ चलिओ ॥ ९४ ॥ इह पत्तो सत्थाहिव तुमए वेरग्गकारणं जमह । पुट्ठो त तुह कहिय त सोउ भणइ सत्थाहो  
॥ ९५ ॥ पेच्छति मयच्छीण पहु सवेवि हु पभूयविलियाइं । नवर कस्सवि जायइ न पडिवोहो जहा तुम्ह ॥ ९६ ॥  
एयाउघिय भवसभवसुहसव्वस्समेव मूढाण । रायरहियाण दूर दुक्खपय न उणमन्नयर ॥ ९७ ॥ नूण पहु  
वहुकहाणठाणमत्ताणमेत्थ मन्नामि । रत्तेवि जेण पत्ता तुन्ने ता कहह सुहहेउ ॥ ९८ ॥ आह पहु भववासो आवासो  
तिप्पलुक्खलक्खण । ता पत्त मणुयत्त मा हारह करह अप्पहियं ॥ ९९ ॥ तं पुण सुँ-देवगुरुधम्मत्तजोएण जायए  
नियमा । ता रागहोसअदूसियंसि देवे मइ कुणह ॥ ४०० ॥ आराहह निगंथं अणीहय धम्मियं सुसीलगुं । जम्मि  
चराचरजीवाण रक्खण कुणह त धम्म ॥ १ ॥ जं वीयरायदोसेहि दंसियं सुणह त सया तत्तं । जं चत्तारि वि  
चउगइहराइ एयाइ भवाण ॥ २ ॥ जइ वि हु गुरुपमाया गिहिणो न कुणति सव्वगिहिधम्म । तहवि हु जिणपूया तेहिं  
अट्ठहा भवहरी कुज्जा ॥ ३ ॥ तहाहि । जलधूवदीवनेवज्जकुसुमफलवासअक्खयसहावा । पूया अट्ठपयारा कीरइ  
भवेहिं अरिहाण ॥ ४ ॥ इय जइवि बहुविहा सा तहवि हु सुमहुरसुत्तमफलेहिं । अवयविज्जाउराईहि विरइया, वियरइ  
सुहाइ ॥ ५ ॥ सुनरामरत्तसिवसुहफलाइं भत्तीए विरइया नूणं ॥ फलपूयकरण वियरए जेणिमं भणियं ॥ ६ ॥



एकंपि फलं पुराओ जो ठवइ जिणस्स परमभत्तीए । तस्स फलंति अवस्सं नरस्स सयलाड विदिसाड ॥ ७ ॥  
तं सोडं सत्थवई भत्तिभरप्पणयगुरुकमंबुरुहो । अंगीकरइ सयावि हु जिणपूयाभिगहं विणई ॥ ८ ॥ साहागयेण साहा-  
मएण इय देसणं सुणेऊण । भणिया भज्जा दइए सुकरो इमो अम्ह ॥ ९ ॥ जेणेह फलाहारो विहिणा अम्हाण  
निम्मिओ पायं । संतिच्चय सुरसफला इह रत्ते भूरितरुणेवि ॥ १० ॥ नूनं न किंपि सुकयं कयमम्हेहिं भवंतरम्मि पिए ।  
जायाइं तेण दोन्नि वि तिंदियतेरिच्छजाईए ॥ ११ ॥ एत्तो वि हु नियचावल्लदोससंजायपाय(व)पोसाण । अम्हाणं उप्पत्ती  
कत्थइ भविही न याणामो ॥ १२ ॥ ता सुलहफलेहिं वयं पूइत्तु जिणं भवन्नवं तरिमो । साहामई पयंपइ कुणह  
इमं चलह पडणम्मिह ॥ १३ ॥ एत्थंतरम्मि भणिओ गुरुणा सत्थाहिवो वयं जामो । अंबरसिहरगिरिम्मि जिणिंद-  
पयवंदणनिमित्तं ॥ १४ ॥ तो आह सत्थवाहो पहु सो केत्तियपहे गिरी कहह । भणइ गुरू एसोच्चिय आसण्णो  
गयणगयसिंणो ॥ १५ ॥ सत्थाहिवो पयंपइ अहंपि पहु तत्थ आगसिस्सामि । तो संचलिया गुरूणो सपरियणो  
सत्थवाहोवि ॥ १६ ॥ उत्तरिय दुमाओ दुयं कइदुगमवि सूरिणोणुमग्गेण । गच्छइ तरच्छकरिहरिणसवरसंचरजुए  
रत्ते ॥ १७ ॥ तंमज्जे तरणिभया पिंडीहूओव तमभरो तेहिं । अंबरसिहरो नामेण सामलो सो गिरी दिट्ठो ॥ १८ ॥  
सामलसिहरानिलचलतमालदल अंतरुल्लसिरधाऊ । जो नवघणोव ईसिप्फुरंततडिसजुतो सहइ ॥ १९ ॥ तम्मि सीयर-  
निवडिरनिज्जरणीरसिक्करसमूहवि(व)हवाए(?) । आरूढा गुरुसत्थाहि(य)वानरा(र)म्मआरामे ॥ ४२० ॥ तस्सग्गे  
पिंगमणिप्पहापिसंगियसमगदिसियकं । रविरहरयणंव नियंति उदयसेलम्मि जिणभवणं ॥ २१ ॥ रयणीसु जं विरायइ  
पडिबिंबिय भूरितारयप्परं । केवलमुत्ताजालयविरइयसिंगारचंगंव ॥ २२ ॥ पेच्छंति तत्थ उवसंतकंतमुत्ति जिणेसरं  
रिसहं । जहजोणं प्हवणच्चणथवणे काडं निवट्टा(विट्टा?)ते ॥ २३ ॥ दड्ढुण जिणवरं वानराइं बहुमाणजायपुल्याइं । आणं-

द्वयमपवत्तमुपन्नगणाहं पणमन्ति ॥ २४ ॥ तो तेहिं पक्कंगवरअवयनारगवीजपूरेहिं । कयलीफलदक्खादाडिमेहि  
गंतु जिणिंदपुरो ॥ २५ ॥ पसरियभत्तिभरुब्भिज्जमाणरोमंचअचियगेहिं । रइय बालि सुयं वीजपूरय सामिकर-  
कमले ॥ २६ ॥ जुयलं ॥ तत्तो अन्तो उहसियअसमआणदमदिरच्छीणि । भूपुडभालवटं नसंति तिहुयणपहु  
ताइ ॥ २७ ॥ तो भत्तीए गुरुण नमिउ जपति निययभासाए । पहु तुम्ह पसाएण अम्हेहि समल्लिओ धम्मो ॥ २८ ॥  
भणइ गुरु धम्माओ नन्न सुवणे वि अत्थि सारतर । ता तिरियावि हु तुब्भे धन्नाइ जेसिमिय बुद्धी ॥ २९ ॥ इय  
अणुसासिय वानरजुयलं आपुच्छिऊण सत्थाह । नमिय जिण अन्नत्तो गयणेणं विहरिया गुरुणो ॥ ४३० ॥  
उत्तरिउ सत्थाहो गओ जह्मभिमयदेसमसढमई । पाविउ आउयत वानरजुयलपि कइयावि ॥ ३१ ॥ मज्झिम-  
परिणामजियनरत्तभावाहमेत्थ वेयेहु । उप्पन्ना सो कत्थइ मज्झ पिओ त न याणामि ॥ ३२ ॥ जह पुषजम्मसद्धम्म-  
दायगो एस चारणमुणिदो । जं दहु सजायमह जाइसरणनाणमिण ॥ ३३ ॥ मोत्तुं परभवदइयं सद्धम्मुच्छाहय  
पवग मे । न नरतरपरिणयणे मणो मणोरहमवि करेइ ॥ ३४ ॥ त सोऊण सहीहिं सबपि हु साहियं खयरपहुणो ।  
तेणवि वाहरिय सुय वुत्त उत्त इमं पुत्ति ॥ ३५ ॥ कितु न नज्जइ चउगइभवगहणे सो कहिपि उप्पन्नो । ता  
मोत्तुमसग्गाहं अवरवर (वर) सु तं वच्छे ॥ ३६ ॥ सा आह मज्झ अगे लग्गइ सो सुहयरो अहव अग्गी । त सोऊण  
जणओ जाओ चिंताउरो दूर ॥ ३७ ॥ एत्थतरमि सुयडुहुहिस्सरो दारवालमचणिवई । किमिमंति पुच्छिओ सोवि तस्स  
त सुणिय विन्नवइ ॥ ३८ ॥ पहु इण्हिच्चिय पत्तस्स सूरिणोतनाणमुपन्न । तो केवलिमहिममिणं कुणति अमरा सबहु-  
माणं ॥ ३९ ॥ त सोउ भत्तीए तयरवई कन्नयाजुओ सबलो । केवलिपसे पत्तो पणमिय तं देसण सुणइ ॥ ४४० ॥  
आह पहु सत्तारो धुव असारो विणस्सरा रिद्धी । लणरायिणीउ रमणीउ गंतुर जीवियत्तंपि ॥ ४१ ॥ इय देसणावसणे

खयरिंदो नसिय केवलिं भणइ । पहु मह सुयाभवंतरपई कई कथ उपपन्नो ॥ ४२ ॥ तो कहइ विमलनाणी फलपूया-  
करणपत्तपुत्रभरो । मरिडं सो सूरप्पहुरुरायपयावसारस्स ॥ ४३ ॥ पुत्तो जाओ फलसारनामओ अत्थि चारुता-  
रुत्तो । तं सोडं खयरवई पणयपहू मंदिरे पत्तो ॥ ४४ ॥ तो हं आलोचेडं सह भज्जासबमंडलीएहिं । तुब्भ सयासे पत्तो  
नियतणयाए वरनिमित्तं ॥ ४५ ॥ ता राय भणसु नियपुत्तयं जहा मह सुयं विवाहेइ । तं सोडं नरनाहो जंपइ खयरवई  
एवं ॥ ४६ ॥ पाविज्जइ खयरहिव अणप्पपुत्तेहिं तुह समो सयणो । चिंतामणिसंजोगो जायइ किं मंदभग्गाण ॥ ४७ ॥  
इयरंपि खयरकुमारिं कल्लणसिरिंव को न ईहेइ । किं पुण भवंतरस्सरणजायनेहं तुहंगरुहं ॥ ४८ ॥ एत्थंतरे कुमारो  
जाइसरणेण नायपुत्रभवो । जंपइ तह ताय तयं जह कहियमिमेण तुम्ह पुरो ॥ ४९ ॥ तं सोडं गुरुपरिओसपूरितो  
कुमारमाह नरनाहो । गंतुं खयरकन्नं विवाहिडं वच्छ आगच्छ ॥ ४५० ॥ इय जंपिय सम्माणियखयरवई वत्थभूसण-  
गणेण । पेसइ सह तेण सुयं राया चउंगबलकलियं ॥ ५१ ॥ विज्जाहरिंदविज्जावलेण पत्तो नहेण वेयेड्डु । विहित्तो  
तस्स पवेसे महूसवो खयरजणेण ॥ ५२ ॥ सबुत्तुमस्मि लग्गे घणाणुराया महाणुरायेण । परिणीया कुमरेणं सिंगारतरं-  
गिणी कुमरी ॥ ५३ ॥ गुरुगोरवपहिडो दिणदसगं तत्थ संठिओ कुमरो । पच्छा ससुरमणुन्नविय आगओ नियपुरे सपिओ  
॥ ५४ ॥ पिउणा पुरप्पवेसे सुयस्स असमो महूसवो विहिओ । अत्थाणठियं जणयं नमिय निविडो तयाणाए ॥ ५५ ॥  
नवरंगयनीरंगीअवगुंठियवयणंपकया वहुया । नयससुरा तस्सासीतुहा अंतेउरे पत्ता ॥ ५६ ॥ अत्थाणठियं जणयं  
सेवइ गोसप्पओससमाएसु । न सुयइ कयाइ कुमरो कलाण पुणरुत्तमब्भासं ॥ ५७ ॥ काडं कयाइ रज्जाहिसेयपरमूसवं  
कुमारस्स । गहियवउ निवो पत्तकेवलो मोक्खमणुपत्तो ॥ ५८ ॥ नवनिवईवि नएणं पालेइ पयाओ दंडए दुडे । मन्नइ  
महायणीए पूयइ पुजे खले चयइ ॥ ५९ ॥ पुत्रभवोवज्जियसुककम्मसंभारभावतो सबे । खोणीवइणो तं देवयंव

आराहयति सया ॥ ४६० ॥ एगायवत्तधरणीवइत्तसपत्तउत्तमजसस्स । तस्सुप्पन्नो कइयावि पुत्तओ पट्टदेवीए ॥ ६१ ॥  
विहिउ वद्धावणय नाम कुमरस्स कित्तिसारोत्ति । दिन्न रत्ता सम्माणिऊण निस्सेसपुरलोय ॥ ६२ ॥ परिवड्डिडमारद्धो  
कमेणमज्जावयणमुवणीओ । समहीयकलो जातो समलंकियजोव्वणो कुमरो ॥ ६३ ॥ परिणावियो य उव्वणजोव्वणकम-  
णीयरायकुमरीओ । समयमि तमभिसिचिय रत्ते राया गुरुविराया ॥ ६४ ॥ नाणधरसूरिपासे गहिउ दिक्ख तव तविय  
त्तिकर । उप्पन्नणतनाणो पत्तो सो सिद्धिसयध ॥ ६५ ॥ जह विहिया फलपूया फलसारेणं महामहीवइणा । अन्नेणवि  
सिवमुहमिच्छुणा तहसेव कायघा ॥ ६६ ॥ → फलपूजा ←

५ ५ ५ ५ फलपूय अणुरसिउ फलसारो भुवई इसो भणियो । इण्हं जलपूयाइ जलसारकह निसामेह ॥ ६७ ॥ ५ ५ ५ ५ ५  
भूरिहिमनिम्मिओ इव पुजियकप्पूरदलसमूहोव । रुपयमओ विसालो वेयड्डो नाम अत्थि गिरी ॥ ६८ ॥  
रुप्पयमयस्मि तस्मि तमालककैड्डिकयलिसडाइ । दिट्टारुणमरगयमणिसिहराइ पिव विरायति ॥ ६९ ॥ तस्मि य  
रहनेउरचक्कवालनाम समत्थि गुरुनयर । जस्मि तिमिराणभिन्नो लोओ मणिमहपहालोए ॥ ७० ॥ जत्थ गुरुसुत्तियाओ  
हरिसहियाओ सुपयचक्कतो । सउणासियसयवत्ता सईउ सरसी उवहसति ॥ ७१ ॥ पणमतस्सरनिवइसिरपिंग-  
मणिप्पहापिसगपओ । जलहरसारो नामेण तत्थ खेयरवई अत्थि ॥ ७२ ॥ नियदाणबुद्धिजियजलहरावली जलहरा-  
वलीनाम । तस्सत्थि हत्थिमथरसचारा सहयरी सारा ॥ ७३ ॥ तीए समत्थि जलरासिसिविणसूइयगहीरयावासो ।  
जलसच्छप्पयईन्विय कुमरो नामेण जलसारो ॥ ७४ ॥ मयणोव्व अतणुरूवो समगजणविहियहियवासो जो ।  
कमलायरोव्व गुरुमित्तदसणुहसियसुवियासो ॥ ७५ ॥ उत्तमकुलावयसो वयसजणसगतोवि रायसुतो । फीलाकए कया-  
इवि पत्तो सायरगयगिरस्मि ॥ ७६ ॥ वेलजलचलणविघुट्टुट्टुगुरुसुत्तिमोत्तियप्पयरो । सामे जस्मि दिणम्मिचि विभाइ

तारयसमूहोब ॥ ७७ ॥ तस्मिं समित्तो कुमरो आरामपरंपरं परिव्रमिरो । आयन्नइ पक्काओ हक्काओ भिडंतसुहडाण  
॥ ७८ ॥ के नाम इमे जुञ्जंति किंवि (वा ?) वेरस्स कारणस्सिमिंसे । पेच्छामो पुच्छामोत्ति जंपिरो सो गतो तत्थ ॥ ७९ ॥  
तो तेण ज्झत्ति दिट्ठा दोन्नि भडा दंतदड्ढनियउट्ठा । कयसीमभिडडिभाला रोसारुणल्लोयणकराला ॥ ४८० ॥ समरारंभ-  
स्समवसगलंतपस्सेयविंदुजालेण । रेणुप्पसमणकज्जे रणरंगं सिंचयंतव ॥ ८१ ॥ जुयलं ॥ मा जुञ्जह मा जुञ्जह ता मह  
नियवेरकरणं कहह । इय कुमवारियावि हु जुञ्जंति समच्छरा दोवि ॥ ८२ ॥ परारंति (पेरंति ?) अवसरंति य वडंति  
विहडन्ति दिंति करणाइं । उम्मुक्कसीहनाया वगंतिय खगवगकरा ॥ ८३ ॥ अन्नोन्नल्लपहरप्पवंचअन्नायखग-  
घाएहिं । दोणहवि पडियाइं महीयलम्मि सहसन्ति सीसाइं ॥ ८४ ॥ ता तेसिं सीसाइं पमुक्कहुंकारपेक्कहक्काहिं । अन्नोन्नं  
उच्छल्लिदं दंतेहिं डसंति अणुवेलं ॥ ८५ ॥ अवरोपरसिदंडप्पहारजज्जरियअंगुवंगाइं । जुञ्जंति कवंधाइंवि अच्छरिय-  
कराइं कुमरस्स ॥ ८६ ॥ कुमरेणुत्तं भित्ता सीसकवंधाण रणरसुक्करिसं । पेच्छह अतुच्छअच्छरियकारयं रोसवसयाण  
॥ ८७ ॥ ते विंति देव सिविणेवि नेव जं तंपि एत्थ सच्चवियं । इय जंपिराण पडियं धडुगमवि पहरजज्जरियं ॥ ८८ ॥  
सियदंतकोडितोडियअवरोपरवयणगंडखंडाइं । निच्चेट्ठाइं होडं तस्सीसाइंपि पडियाइं ॥ ८९ ॥ तो ज्झत्ति पिंग्केसर-  
सडाकडारियसमगदिसियकं । तडिपुंजपिंजरीकयजयं व जायं सरहजुयलं ॥ ९० ॥ उक्खित्तकरपमुक्कफारफुत्कारसि-  
क्करोसारो । वित्थारिज्जइ जेहिं द्विणेवि तारयभरोब नहे ॥ ९१ ॥ अइधोएगज्जियारवरोदंतं पेच्छडं नरिंदसुओ ।  
विन्धिहियओ जाओ भएण नट्टा पुण वयस्सा ॥ ९२ ॥ तो भेरवभयजणयं सरहडुगंपि हु तिरोहियं सहसा । पेच्छइ  
य पुरो बहुसुरकिरणभरसमहियं तेयं ॥ ९३ ॥ तं पेच्छिय विम्हयतो चित्तइ कुमरो किंमिंदयालसिमं । मइमोहधाउ-  
खोहाणमहव मह किंपि अन्नयरं ॥ ९४ ॥ इय चिंततो कुमरो जा थिरकयलोयणो तयं नियइ । ता तेयअंतरट्टियनर-

सरिस पेच्छए किपि ॥ ९५ ॥ नयणागिमिसत्तप्पमुहलिंगवित्रायअमरसम्भावं । रइयकरकमलकोसो तं नमिय पयंपइ  
कुमारो ॥ ९६ ॥ को पडु तुमं किमेवं भीसणरूढो ठिओ ँहसु मज्ज । इय तेणुतो अमरो कुमर पइ भणइ सुणसुत्ति  
॥ ९७ ॥ अत्थि असमत्थसुहड समत्थसुहडोहपत्तविजयपि । जयसार नाम पुर विजयावहरायलकरियं ॥ ९८ ॥  
तत्थत्थि वित्तसियकरवियरणसजणियजणमणपमोओ । सम्मयसहितो चदोब चंदतेउत्ति अत्थवई ॥ ९९ ॥ चंदप्पहा-  
भिहाणा मणोहरा तस्स पिययमा अत्थि । चदप्पहमइरा इव सरुवकयजणमुम्माया ॥ ५०० ॥ बहुधणवईवि दूब-  
जगाय सो कुणइ भूरिवहारे । कयकिचेहिं वि महिओ जलही रयणत्थि अमरेहिं ॥ ५०१ ॥ काउ कयाणयाइं कयाइं  
पउणाइ पवहणे चडिओ । चलयो य मलयसिंघलकडाहकेसाइदीवेसु ॥ २ ॥ गच्छइ पोओ दूरा नीरभर मच्छए  
तरगे य । फाडंतो तासतो भजतो भूरिवेगेण ॥ ३ ॥ अणुकूलवायविहिमणवियभणप्पेरियन जलजाण । थेवेहिवि  
दिवसेहि वळियदीवेसु सपत्त ॥ ४ ॥ तत्थ मणवळियत्तहियजायवहुलाहपत्तपरिओसो । गहिउ सदेसजोग्गे कयाणए  
तयणु वाहुडिओ ॥ ५ ॥ पवणप्पसराऊरिजमाणसियवडपयडवेण्ण । योवदिणेहिंवि पत्तो पोओ जलरासिमज्जम्मि ॥ ६ ॥  
एत्थतरे अकालियघणपडलेहिं समग्गनहमग्गो । जीवीब अकज्जन्भवपवेहिं कलुसिओ दूर ॥ ७ ॥ नहदप्पणे समुदो  
सकतो अह घणो जलहिसलिले । जणयति चिन्धम दोवि सामला पेच्छिरनराण ॥ ८ ॥ इपाए समुहसिरो सिंधुजले  
निवडिऊण तडिपुजो । वडवानलोब रेहइ नहमडलजतजालोहो ॥ ९ ॥ अचतथूलामलजलधारासारसलिलसभार । मुचइ  
मेहो मोयाविउव जलहिं समजाय ॥ ५१० ॥ सामघणाली गयणे सामुफ़लियावली समुहम्मि । गज्जतीओ पसरति दोवि  
पुरागघडाओघ ॥ ११ ॥ नीतो होइ घणो जलभरेण उहसइ तेण य समुदो । दोन्निवि मिलिणनिमित्ता परोप्पर सचर-  
त्तिव ॥ १२ ॥ एव अकालभवमेहमडलाडवर पलोएउ । सबोवि पवहणजणो जातो कायबमूडमणो ॥ १३ ॥ रोएसमी-

रुक्लियातोडियतणियागणो सियवडोवि । पवहणवइहिययंपिव पडित्तो सह कूवखंभेण ॥ १४ ॥ गुरुकल्लोलापरोहावरोह-  
 आवत्तगतभमणाइं । अणुभविज्जं अट्ठिभडिय गिरित्ठे विहडिओ पोओ ॥ १५ ॥ अंगीकयगुरुकट्ठा तरिया केवि हु  
 भवं व नीरनिहिं । अवरं उ अगुरुकट्ठा भवेव मग्गा समुद्धिम्मि ॥ १६ ॥ पवहणवईवि बहुधणविणासदंसणविसायविव-  
 संगो । मग्गो अगाहसलिले भववासे को सया सुहिओ ॥ १७ ॥ तचणु जलमाणुसीए मयणायत्ताए निययदइओत्ति ।  
 आलिंगित्तो जहट्ठियवत्थुं न नियंति रायंथा ॥ १८ ॥ आयड्डिय सलिलाओ भोगत्थं तीए गिरित्ठे नीओ । सुहपरिणईए  
 जीवोव कड्डिओ नरयमज्जातो ॥ १९ ॥ सा तं दट्ठुं न इमो पिउत्ति भीया गया जले झत्ति । सावायपरट्ठणे को चिट्ठइ  
 नायपरमत्थो ॥ ५२० ॥ सेलत्तडसिलासीणो चित्तेई मज्झ वेव पडिक्कलो । एस हयविहिविलासो पुव्वज्जियडुकयवसयस्स  
 ॥ २१ ॥ जं अच्चवमुयधणकणभरियंपि पवहणं विहडियं मे । मरणंतत्तवसणं सिंधुमज्जणाहमवि संपत्तो ॥ २२ ॥ जं  
 जस्स जया जायइ सुहमसुहं वा तयं तथा तेण । धेज्जमवलंविज्जणं सहियद्वं जेणिसं भणियं ॥ २३ ॥ जंचिय विहिणा  
 लिहियं तं चिय परिणमइ किं वियप्पेण । इय जाणिज्जण धीरा विहुरेवि न कायरा हुंति ॥ २४ ॥ एवं विभावणागय-  
 विसायवसजायमणअवट्ठंभो । अवलोइदं पवत्तो रमणीए पव्वयपएसे ॥ २५ ॥ गुरुसिहरगुहाकंदरनियंवनिज्जरसयाइं  
 पेच्छन्तो । भक्खंतो य फलाइं कइवयद्विवसाइं तत्थ ठिओ ॥ २६ ॥ किच्छेणमवरदिवसे तगिरिसिहरंमि दुग्गमे चडिओ ।  
 अवलोयइ अइवहलं वणसंडं मेहखंडं ॥ २७ ॥ अनिलतरलाओ जत्तो निवडंतो नज्जए कुसुमनियरो । सुक्कोदयस्त्थ-  
 भवधणपडलाउ व कारयनिरुंथो ॥ २८ ॥ जं मज्झट्ठियकंचणमणिमयजिणभवणकिरणक्कवुरियं । कप्पहुमसंडंपिव सोहइ  
 आभरणणजुत्तं ॥ २९ ॥ तंमज्झे गयणंगणगयसिंगं जिणहरं सुव्वन्नमयं । मेरुंपिव अवलोयइ तलसंठियमइसालवणं  
 ॥ ५३० ॥ आमाइ जस्स सिहरे संकंतानिलचला सियधयाली । सुरगिरिजिणह्वाणपवत्तदुव्वजलपवहंपंतिव ॥ ३१ ॥

तस्मि पविट्टो सो नियइ निरुवम रिसहसामिणो विव । उम्मीलियभत्तिवसुहसतरोमंचकुइतो ॥ ३२ ॥ नमइ य त  
 भालतलगमिलियमहिमडलो पहरिसेण । रइयकरजुयलकोसो नियइ य नाह अणिमिसच्छो ॥ ३३ ॥ एत्थतरस्मि एगो  
 चारणसमणो नहेण सपत्तो । कयतिप्पयाहिणो रिसहसामियं थोउमाढतो ॥ ३४ ॥ तिहुयणगुरुणो सिरिरिसहसामिणो  
 नभियपायसयवत्त । कयकरकोमो आणदअचिओ सथव काह ॥ ३५ ॥ कणयच्छत्रिणो असावलविणो कसिणकुतला तुब्भ ।  
 मद्रगिरिणो पडगतमालतरणोव्व रेहति ॥ ३६ ॥ जे सामिसाल तुह पयलीणा दीणावि ते नरा दूर । भवताववज्जियगा  
 विलसिरपउमालया हुति ॥ ३७ ॥ मइसुयओहीमणपज्जाणि तुह केवलस्मि मग्गाणि । तारयनक्खत्तगहससिणोव्व सहस्स-  
 करतेए ॥ ३८ ॥ त सामि समवसरणमि सोहसे रइयरम्मचउरुवो । नारयतिरियनरामरचगइज्जणवोहणत्थ व ॥ ३९ ॥  
 रायाण रक्काण य धम्मुवाणस तुम सम दिससि । कि जयमुज्जोयतो मेच्छकुलाइ चयइ सूरु ॥ ५४० ॥ तुह मिलणे मह  
 जाओ बहुमाणवसेण रम्मरोमचो । घणसमयमि कयंवत्स सबओ कुसुमनियरोव्व ॥ ४१ ॥ इय नीइचक्खसिरिनेमिचदमुणि-  
 नाहननियपयपउम । जह जाया तुह सिद्धी त तह मज्जवि पहु पयच्छ ॥ ४२ ॥ इय थोउ रिसहजिण उवविट्टो तयणु  
 चंदतेओ से । पणमिय कयजलिउडो उवविसिओ भणइ मुणिमेव ॥ ४३ ॥ भयव नरत्तनियजम्मजीवियव्वाण वसणठाणाण ।  
 देयगुरुसणेण मन्ने अज्जेव सहलत्त ॥ ४४ ॥ ता पहु मह कहसु अवत्थसमुचियं धम्ममह कहइ साहू । पूइज्जाइ एस  
 प्हू अट्टपगाराहिं पूयाहि ॥ ४५ ॥ तहाहि । नेवज्जागधअक्खयदीवयफलसलिलकुसुमधूवेहि । जिणपूया भत्तीए रइया  
 वियरइ सिनुहाइ ॥ ४६ ॥ दूरे धणक्खुब्भववासण्णसुहाउ सत्तपूयाओ । एकावि मुहा लब्भा जलपूया हरइ ससार  
 ॥ ४७ ॥ जओ । जलभरियपत्तमेत्तो ससारमहोयही फुड तत्स । जो ठवइ जिणत्स पुरो सीयलजलपूरिय पत्त ॥ ४८ ॥  
 फलिहेण व तच्छेण अमएणन साउणा जिणवरिंद । सीएण सिसिरेण व जलेण अच्चति कयपुत्ता ॥ ४९ ॥ जेण जिणाउ न



अन्नं पूयापत्तं समस्थि तिजएवि । ता पूइऊणमेयं सहलं मणुयत्तणं ऊणसु ॥ ५५० ॥ तं सोडं सो जंपइ नमिऊण सुणिं निवद्धकरकोसो । भयवमणुगगहिओ हं समयोचियधम्मकहणेण ॥ ५१ ॥ इय जंपिडं गओ गिरिनिञ्जरणनिवायरुंद-कुंडस्मि । कयकमलपत्तपुडए गहिय जलं जिणहरं पत्तो ॥ ५२ ॥ दड्ढुणं सुवणगुरुं सुमरियपुबिहिनियसिरिफुरणो । धितइ तइया नाहो जिणनाहो मज्झ जइ हुंतो ॥ ५३ ॥ ता हं नियसिरिथरसमवत्थगणेण (?) नूणमच्चंतो । इण्ह एयावत्थो करेसि एयंपि जलपूर्यं ॥ ५४ ॥ इय धितिय असमुहसियभत्तिपव्भारपुलइयसरीरो । पसरन्तभूरिआणंदअंडुंदतु रियपमहच्छो ॥ ५५ ॥ सुंचइ पहुणो पुरतो पुरतो जलपुडयं अत्तणो परिकलंतो । नरजम्मजीवियव्राण सहलयं सुवणपणयस्स ॥ ५६ ॥ भणइ सुणी धन्नो तं पयडइ पुलओ तुहंतरं भत्तिं । इति न दुद्धे पीए उगारा आरनालस्सम ॥ ५७ ॥ सिवलच्छि-पेच्छियाणं उच्छाहो होइ एरिसोवम्मं । नहि सुकयसंगयाणं धम्मस्मि अणायरो होइ ॥ ५८ ॥ तेणुत्तं भयवं मे भवंतरे वि हु भवेज्ज तं चेव । देवगुरुधम्मत्ताण देसओ विरइयपसाओ ॥ ५९ ॥ इय जंपिय तेण नओ गओ सुणी नहयलं अलं-करिडं । सोवि गुरुविरहविहुरो खणमेत्तमेयणोव ठिओ ॥ ५६० ॥ नसिडं बहुमाणपुरस्सरं जिणं निग्गतो जिणाययणा । नियपुरगमणोवायं धितंतो गमइ दिणसेसं ॥ ६१ ॥ एत्थन्तरस्मि नहम्मगसंगिनगोहसाहिसिहरस्मि । अह्दीणा आगं-तूण पक्खिणो इत्ति भारंडा ॥ ६२ ॥ ते माणुसभासाए नियवुत्तंते कहिति पुत्ताणं । एक्केण जंपियमहं जयसारपुराड संपत्तो ॥ ६३ ॥ तप्पुरसमगवणिवग्गअगणीचंदेयनासो जो । संभिन्नपवहणो सो मओ अपुत्तोत्ति जणवाओ ॥ ६४ ॥ निमुओ निवेण तो से गहितो निहूडिऊण घरसारो । जे जोयंति असंतंपि ते न किं संतमिह छिइं ॥ ६५ ॥ गुत्तंपि धणं कहियं कयत्थणाकंपिराए कंताए । अप्पंसि व णस्संते कजं किं सयणदविणेहिं ॥ ६६ ॥ एयं आरामियजगक-हिल्लमाणं मए सुयं वच्छा । इय भारंडपयंपियसवणा सो धितइ ससोओ ॥ ६७ ॥ पेच्छ जहा मह लच्छी पसरंत-

सुवन्नतारसारावि । सिंघपि रयं पत्ता गिम्हसुभूरयणिव ॥ ६८ ॥ अत्थज्जणदुबुद्धी दिन्ना दिघेण मज्झ रुहेण ।  
 कि देर करचवेडं कयाइ कुविओ विहिविलासो ॥ ६९ ॥ क्खिविणण चकवट्ठी जाओह सवहा जओ न मए । दववओ  
 विरइओ सुपत्तितियेसु धणिणावि ॥ ५७० ॥ कि सायत्तरणधणज्जण विणा मज्झमासि न वहत्तं । ज मे गया सिरी  
 जीवियपि सदेहमणुपत्त ॥ ७१ ॥ पत्तावि पल्लचिय अपुन्नवताण निच्छिय लच्छी । किमभगगिह्हीणा होइ थिरा  
 कामदुहवेणू ॥ ७२ ॥ सुकुमालतणू पेम्मेकमदिर विमलसीलकलियगी । कह सहिही मह कन्ता कयत्थण रायभडज-  
 णिय ॥ ७३ ॥ नूण न मए रम्मो धम्मो विहियो भवंसि पुबिले । जमह विडवणाडवर इम इह भवे पत्तो ॥ ७४ ॥  
 तत्थ गमणुस्सुतोवि दु गच्छामि कह उवायहीणोह । कहमकमचकमणो पगू वट्ठियपुर जाइ ॥ ७५ ॥ जइ जामि तत्थ  
 लच्छि ता निवघत्थपि नूण वालेमि । गुरुविसवेगविलुत्तपि चेषण मतवाइव ॥ ७६ ॥ इय तस्स यणविणासासुहि-  
 यस्स निसा ठिया पहरसेसा । पुत्ताण गमणठाणाणि कहिय गच्छति भारुडा ॥ ७७ ॥ जो चलिओ तन्नयरे पाए  
 सो तस्स दडयर लग्गो । उट्ठीणो भारुडो मणनयणजवेण जाइ नहे ॥ ७८ ॥ नवर सो विहिविलसियवसेण विच्छुट्ठि-  
 ऊण तप्पाया । पडिओ समुहसलिले विमुहविही कुणइ नो कि वा ॥ ७९ ॥ मज्जतेण तेण जिणगुरुचरणण सुमरियं  
 सहसा । तस्सणुभावओ मरिउमच्चुए सो सुरो जाओ ॥ ५८० ॥ कालेण चारणस्समणतगुरू तमि चेव कप्पम्मि ।  
 जातो सुरो तहा पुबभवभवो वाण नेहोवि ॥ ८१ ॥ नाऊण नियचवण तेणुत्तो गुरुसुरो सुही एव । पत्ते मणुयत्ते मं  
 पडिओहेज्जसु तुम भित्त ॥ ८२ ॥ पडिवन्न तेण तय तो सो चविऊणमेत्थ वेयड्डे । रयरिदसुओ जाओ चलिओ य  
 पनीलित्त एत्थ ॥ ८३ ॥ एत्थतरे मए सुरसुहसगविमोहओ बहुदिणेहि । सरिया पुबभवदुगपडिवोहन्मत्थणा तुज्झ  
 ॥ ८४ ॥ तो भडवडसिररणसरहरूप(पभईय)विरइय पच्छा । नियसाहावियरुव तुह विन्मभकारणे कुमर ॥ ८५ ॥

ता वच्छ अपथ्यं पिव नराण रज्ज्पि होइ असुहाय । गिम्हचईनीरं पिव झिज्जइ अणुदिवसमवि आउं ॥ ८६ ॥ नरनय-  
णाणिमिसत्तं व जोवणं नो कयाइ ठाइ थिरं । कळुससहावाउ सया बहुलनिसाओव मयच्छीओ ॥ ८७ ॥ किं बहुणा  
संबं पि हु विणस्सरं भवसमुत्तं भवं वत्थु । सारयघणोव सोयामणिव जलबुत्तोहोव ॥ ८८ ॥ ता वीयरयादेवं पडि-  
वज्जसु तं सरायमुच्चिता । पविय वंछियफल्यं कप्पतरं सरइ को निंबं ॥ ८९ ॥ निगंथंमि गुरुंमिं गुरुबुद्धिं कुणसु मा  
पुण संगथे । पत्तम्मि सुयणसंगे सगइ किं कोइ खल्लगोद्धिं ॥ ९० ॥ सुत्तुमतत्ते अंगीकरेसु जीवाइयाइं तत्ताइं ।  
को गुंजाओ गिण्हइ चइअण महघरयणनिहिं ॥ ९१ ॥ पडिवोहिउं तुममहं जाओ निरिणो नियम्मि पडिवज्जे । तं  
सुणिय जाइसरणेण नियमवे पेच्छिय कुमारो ॥ ९२ ॥ जंपइ पणामपुवं पडिवनं पालियं तए साभि । तं मोत्तुं नन्नो  
विहुयेणेवि परमोववयारी से ॥ ९३ ॥ इण्हिं गिहधम्ममहं काहमसत्तोमिह सबविरईए । किं मयमुहगयसज्जं कज्जं  
काउं तरइ कलहो ॥ ९४ ॥ इय तेणुत्ते तियसे सहसत्ति तिरोहिए गतो तेओ । अब्भंतरिए तरणिमि दुरवलोओ  
पयावोव ॥ ९५ ॥ संपत्तमित्तजुत्तो पत्तो नथरे गुरुक्कमे नमिउं । गिण्हइ गिहथधम्मं कल्लणे को पमायपरो ॥ ९६ ॥  
रंकेण व रयणनिही वरविज्जो वाहिणव संपत्तो । सद्धंमो तेणं सो कयकिच्चं कलइ अप्पाणं ॥ ९७ ॥ उम्मत्तजोवणुद्दाम-  
कामकमणीयकायकंतीओ । नहयरनियंविणीओ पुत्तो परिणाविओ पिउणा ॥ ९८ ॥ तं अहिंसिंचिय रज्जे पवज्जं गिण्हए  
खयरयाथा । इहलोइयपारलोइयसुहकज्जे उज्जया गरया ॥ ९९ ॥ जलसारखयरचक्की परचक्कमणकथमणुक्करिसो । पालइ  
पसरंतपहो नियरज्जसिरिं सुरिंदोव ॥ ६०० ॥ लीलाए परिचलिरम्मि जम्मि माणिकमयविमाणेहिं । गयणयलमलंकिज्जइ  
सयावि किंकिणिकलरवेहिं ॥ १ ॥ वंदइ गुरुणो पूयइ जिणेसरे कुणइ संघवहुमाणं । जिणजत्ताउ पवत्तइ मंदरंती-

सराईसु ॥ २ ॥ इय सदृम्म रज्जस्तिरिं च परिपालिऊण बहुकाल । नामेण रयणसारं कुमर रज्जे ठवेऊण ॥ ३ ॥  
नियजणयचरणमूले दिक्क गदिऊण कयतवच्चरणो । पावियकेवलनाणो पिउणा सह सिद्धिमणुपत्तो ॥ ४ ॥ विहिया  
जह जलपूया सिवसुहेहेऊ इमस्स सजाया । तह जायइ खन्नस्सवि भत्तीए तीए ता जयह ॥ ५ ॥ \*५६ जलपूजा ३३\*

५ ५ ५ ५ ५ भणियो जलपूयाए जलसरो संपय प्यपेमि । पिय धूवसुंदरकह आयकह धूवपूयाए ॥ ६ ॥ ५ ५ ५ ५ ५ ५

अत्थि एुरियमहानीलमणिसिलासालफल्लिहकविसीस । सिखसुमियवणपरिवेडियं व नयर महासालं ॥ ७ ॥  
पडिमदिरमणिभित्तिप्पडिविवियतरणिभासुरत्तेण । ज पेच्छवपि तीरइ न तस्स कत्तो रिपभिई ॥ ८ ॥ थिरमइपया-  
वजियगुरुअहिमयरो जलनिहिइ गभीरो । चदोव पवित्तकरो राया नयसुंदरोत्थि तर्हि ॥ ९ ॥ बहुसत्तमडलगापहार-  
परजयपवित्तायाकलिओ । जो एकमडलगापहारपरजयपवित्तोवि ॥ ६१० ॥ तस्सतेउरतरणीपहुत्तपयमरिसया पिया  
अत्थि । नामेण कम्मणावि हु विजयवई सीलकुलभवण ॥ ११ ॥ उज्जतागुरुनवधूवसुंदरो धूवसुंदरो नाम ।  
तीणत्थि हत्थिमथरगई रईसोवमसरीरो ॥ १२ ॥ समराइओ सुसाहुव समणधम्मोव जो सुहयसुत्ती । सक्कमलच्छि-  
विलासो गयकरवाहो महुमहोव ॥ १३ ॥ कुमरो कथाइ आरुहिय खधरं गुरुकरेणुरायस्स । छत्ततिरोहियतरणी तरुणी-  
करचलिरसियचमरो ॥ १४ ॥ पुरओ पयट्टहयघट्टचडियनियमित्तपत्ति(पंति ?)सजुत्तो । पविसिय सहाए पणमिय पिउणो  
पुरओ समुवविट्ठो ॥ १५ ॥ एत्थतरम्मि रणवीरराइणो दारवालविन्नत्तो । दूतो दुयं नरिंदं नमिउ विन्नविउमारद्धो  
॥ १६ ॥ पहु पिणुपयावपावयपुल्लपरिपथिसत्थसलहेण । गयनयरपहुरणवीरेण पेसिओ तुह सयासे हं ॥ १७ ॥  
मह पहुणा तुह आणा पट्टविया जह पयच्छ पइवरिस । मह करमह न पयच्छसि धरियधणू होसु ता ससुहो ॥ १८ ॥  
असरिससामत्थेणवि तेण तुमं नीइपुवय भणियो । को महुरोसहसज्जे रोए कहुओसहं देइ ॥ १९ ॥ ता हरिही रज्जं पि हु

जइ न धरसि तस्स सासनं सीसे । हरिणाहिवस्मि हरिणावमाणणा नणु अणत्थाय ॥ ६२० ॥ क्हियं हियं तुह मए  
तं कुणसु नरिंदं जं मणोभिमयं । सण्णुरिसपयडियपिहु गिण्हंति हियं न देवहया ॥ २१ ॥ छत्रोवि रायरोसो दूजत्तस्स-  
वणओ ठिओ पयडो । किं उट्टहिओ अग्गी जालिजंतो न पज्जलई ॥ २२ ॥ भिउडिघडणा निवइणो समंपि विसमत्त-  
मुवगयं भालं । धिज्जाइयस्स वत्थंमंदपवमाणतरलणओ ॥ २३ ॥ भणियं निवेण रे दूय तुह पहू मह करं गहियु-  
कामो । अहयं तु नियकरेणं रणे गहिसं सिरं तस्स ॥ २४ ॥ तं पेसिय तुह पिहुणा विरोहिओ हं धुवं सनासाय ।  
निदायत्तमइदपडिवोहो किं सुहं देइ ॥ २५ ॥ आणसु तं नियनाहं नाहं जं से सहिस्समवराहं । साहूणं सिंगारो  
अविणयसहणे न निवईणं ॥ २६ ॥ दूणुत्तं निव नियघरट्टिओ जह वहेसि भडवायं । तह जइ समरुच्छंगेवि ता  
तुमं चेव वीरवई ॥ २७ ॥ रायाह जाहि आणेहि नियनिवं दूय देससीमाए । जह रणनिहसो दंसइ पोरुसकणयुवभवं  
वन्नं ॥ २८ ॥ इयं जंपिय सम्माणिय विसज्जितो राइणा गतो दूतो । अचंतं कुवियावि हु उज्जंति नरेसरा न नयं  
॥ २९ ॥ ताडाविया निवइणा रणभेरी मीरुभूरिभयजणणी । तो नयनिवेण कुमरेण पत्थिया समरगमणाणा ॥ ६३० ॥  
नाऊण निबंधममचमंडलीजंपिएण दिन्ना से । रणगमणाणा तो सो चलिओ चउरंगवकल्लिओ ॥ ३१ ॥ गुरुगयघडासु  
तुरयावलीसु रणइणिरकिंकिणिरहेसु । रायाणो सामंता मंडलिया चडिय संचलिया ॥ ३२ ॥ परिकल्यंता बहुआउहाइं  
आओहणाय जोहोहा । कुमरं परिचारंता जंति पहे समरनिव्वडिया ॥ ३३ ॥ विरइयत्रहुप्पयाणयसयलंधियनिययेदे-  
ससीमाए । पत्तो कुमरो रिउन्नरवईवि सवल्लो सदेसंते ॥ ३४ ॥ उवमुत्तसपहुगरुयप्पसायनिक्कयकयुज्जमा सुहडा ।  
अन्निभडिया असमुच्छलियमच्छरुच्छाहसंजुत्ता ॥ ३५ ॥ हरिकरिरहचडिएहिं ह्यगयसंदणठिया पडिक्खल्लिया । पय-

चारिणो वि रुद्धा समच्छर पायचारीहिं ॥ ३६ ॥ बावहसेहभल्यमहीनारायसरपहारेहिं । भिजंता गुरुगयधडभड-  
तुरया जन्ति जमगेह ॥ ३७ ॥ अन्नोन्न दतेहिं तोडति सिराइ मुक्कहक्काइ । निप्सरअसिप्पहरे वियरति य वगिर-  
घडाइ ॥ ३८ ॥ नवरगमेहडवरसियछेतेहिं मही जहिं सहइ । रत्तुपलइदीवरयुंडरियकयोवहारव ॥ ३९ ॥ खग्गाह्य-  
गयकुभगनिगयाउ पडन्तुत्ताओ । रेहन्ति खग्गपाणीयगलिगुरुविंदुणोष जहिं ॥ ६४० ॥ असिघायुच्छलियठिय गयस्स  
जस्सन्तिगे मुहं करिणो । सो सहइ तेण दुकरोष सचउकुभोष दुसुहोष ॥ ४१ ॥ एयारिसे रउदे रणम्मि रणवीराराय-  
कुमरेहिं । पारउ पहरेउं परोप्पर करडिचडिपहिं ॥ ४२ ॥ ललक्कमुक्कहक्काछलपपहारेहिं दोवि पहरति । भिंदति य  
अन्नोन्न दंतप्पहरेहिं करिणोवि ॥ ४३ ॥ रिउकरिणा कुमरकरी निवाडितो दसणपहरजजरिओ । पडिओ कुमरो गहिओ  
य वेरिकरिणा करग्गेण ॥ ४४ ॥ उच्छालिओ य गयणे निवडन्ते निचसुए रिउनिवेण । धरिओ खग्गो उद्ध (हेट्टं?)  
जह भिज्जइ निवडिरो कुमरो ॥ ४५ ॥ निवडतेणं तेण रिउखग्ग वंचिउ तओ इत्ति । पयघाएणं पट्टीए पहणिउं, पाडि-  
ओ वेरी ॥ ४६ ॥ पडिओ सो करिपुरओ कोवमयघेण तयणु तेणावि । दिन्नो पाओ सीसे दलियकवालो मओ राया  
॥ ४७ ॥ दहु वेरिविणास असुरामरखेयेरेहिं परियुक्का । कुमरसिरम्मि निवडिया अलिउलमुहला कुसुमवुट्टी ॥ ४८ ॥  
अहियमि हए गहिया कुमरेणमनायगा सिरी सयला । “को वा कुणइ पमाय लाहे अचब्भुयत्थरस” ॥ ४९ ॥ मोत्तु निय-  
पट्टुत्त रिउसामता कुमारमणुसरिया । “लज्जंति जियंताणवि सब्बे विरलच्चिय मयाणं” ॥ ६५० ॥ तो इत्ति समरवीरो  
रिउत्तो कुमरमस्सिओ सरण । “समयाणुवत्तण सह नीई कि पुण इय अवाए” ॥ ५१ ॥ कुमरेणावि विइन्नो तप्पिट्टीए  
निओ अभयहत्थो । “इयरम्मि वि निणुसया कि पुण सरणागए गरुया” ॥ ५२ ॥ काराविय नियआणं दिन्न तस्सेव  
तज्जणयरल । “असमाणच्चिय निच कोवपसाया महत्ताण” ॥ ५३ ॥ तेणवि सिंगारसिरिभइणिं परिणाविओ नरिइ-

सुओ । “पञ्चवयस्त्रियेव नो कालविलंबं कुण्ड गरुओ” ॥ ५४ ॥ चलिओ सदेससमुहो रायंगरुहो जयजियजसोहो ।  
“सिद्धे कजे को वा वसइ सयन्नो विएसम्मि” ॥ ५५ ॥ कुमरेण समं नवनरवईवि चलिओ सकीयबलकलिओ । “नियप-  
हुपयसेवच्चिय मूलं लच्छीए न पमाओ” ॥ ५६ ॥ आगच्छंतो कुमरो पत्तो वियडाडईए एक्काए । हिंतालतालतालीतमाल-  
वडसालकलियाए ॥ ५७ ॥ जा उत्तमसोहंजणविसालअक्खा मणोहरपवाला । पाडलअहरा पवयपओहरा सहइ रमणिब  
॥ ५८ ॥ विलसंतसरलचित्ता गुरुहयमारय साहुसेणिब । भवावलिब संजायपत्तबोही असोया जा ॥ ५९ ॥ मज्झंमि  
तीए वणसंडवेढियं गयणलगगुरुसिहरं । सप्पायारंपि भयावहारयं नियइ जिणभवणं ॥ ६० ॥ रेहन्तरूवदारं नरिंद-  
मिव पत्तमूलरेहं जं । संपूरियसुयणासं लसिरामलसारसहियं च ॥ ६१ ॥ सबत्तो अनिलचला कंकेल्लितमालसाहिणो  
जस्स । जिणरायभयुब्भन्ता रागदोसव्व कंपंति ॥ ६२ ॥ दट्ठूण देवमंदिरमावासइ तत्थ निवसुओ सबलो । तम्मि  
पविट्ठोच्चिय झत्ति मुच्छिओ पेच्छिऊण जिणं ॥ ६३ ॥ सिस्सिरकिरियाविरयणा संपवियचियणो ठिओ सत्थो । आपुच्छिओ  
य मुच्छाए कारणं मंतिवगेण ॥ ६४ ॥ जंपइ कुमरो मह देवदंसणा जाइसरणमुप्पन्नं । सच्चवियं तेण भवहुगमाय-  
न्नह तयं तुब्भे ॥ ६५ ॥ पतरहराहयंमि सरेब आरामरम्मगामंमि । साहससारो नामेण आसि एगो तुरयचोरो  
॥ ६६ ॥ गंतूण दूरेसे अत्थत्थी हरइ गुरुयतुरो । विक्किणइ य दूरतरे “का वा लुद्धाण मज्जाया” ॥ ६७ ॥ नियमो-  
गंमि निजुंजइ दविणं वियरइ य दीणवंदीणं । “मोत्तूण चांगभोगे नन्नं लच्छिफलं अहवा” ॥ ६८ ॥ कइयावि कडीतड-  
वद्धखगधेणू तुरंगहरणत्थं । पत्तो सुवासनामे गांमे दिणपच्छिमे जामे ॥ ६९ ॥ मणपवणजवे विलसन्तलक्खणे  
तेयतरलथाकलिए । पेच्छइ अतुच्छडुंवादलाइं चरमाणए तुरए ॥ ७० ॥ तो सो चिन्तइ एयाण मज्झओ जइ हरामि  
एक्कंपि । दालिइस्साजंमं ता देमि जलंजलिं नूणं ॥ ७१ ॥ इय चितियपओसे लग्गो मगंमि सो तुरंगण । “जो जक्कजे

पत्तो स पमायं कुण्ड किं तस्मिन् ॥७२॥ गामाहिवस्स गोद्वे गया ह्या सूरतेयनामत्स । दारेष्विय सो रहिओ “परघर-  
माविसइ को सहसा” ॥७३॥ पविसन्तगोउलुच्छलियरभरादित्सदेहजट्टी सो । तस्मि पवित्ठो “अपं न चोरजारा पया-  
सन्ति” ॥७४॥ म पेच्छिही महीए कोवित्ति विचिन्तितं वडे चडिओ । “जह होइ अप्परक्खा दक्खा तह सपयट्ठति”  
॥ ७५ ॥ वडसठिण्ण दिट्ठी पविसत्ता तेण गेहमञ्जस्मि । दिट्ठा य दीवउज्जोयपयडिया अंगणा एगा ॥ ७६ ॥ हरि-  
णिदत्तामञ्जा हरिणकुमुहीय हरिणसमनयणी । विहुमअहरा पीवरपओहरा कणयवन्नधरा ॥७७॥ तं पेच्छिऊणमत्साव-  
हारओ चिंतए कयत्थो सो । नियरूवसिरी अहीरकयसिरी जस्सिमा भजा ॥ ७८ ॥ एत्थतरस्मि दुद्धासु सयलसुरहीसु  
सेरहीसु च । यद्धेसु तुरगेसु जणप्पयारे ठिए विरले ॥ ७९ ॥ परिपालन्ते अस्सावहारिपुरिसस्मि ह्यहरणसमयं । मंदं  
मदं गोहाओ निग्गया सा मयकमुही ॥६८०॥ तं दहुं सचरिओ सो श्चत्ति वरडओवरिमसाहं । आगच्छंति तो नियइ वडतले  
दारमगेण ॥८१॥ सपत्ता वडतलवियडअयडतडनियडविडभडसयासे । तीए अवलोइओ सो नववयदिद्वेहसठाणो ॥८२॥  
मयणाहिमासलामोयमणहरो रइयरम्भसिंगारो । परिपीडियतूणीरो करकलियपयंडकोदंडो ॥ ८३ ॥ दट्टुण तय उक्क-  
ठियाए तफठठवियवाहाए । आलिगिऊण भणियं किं सुहय तुहेत्तिया वेला ॥ ८४ ॥ सो जंपइ सुयणु जणप्पयारपसम  
ठिओग्धि पालन्तो । “अहवेरिसकलरओ पयडइ किं कोवि अत्ताणं” ॥८५॥ तुह मोहमोहियमई मयच्छि अहमगतो  
गुरुरण । “लीलावईविलासावहियमणाण कुओ थिरया” ॥ ८६ ॥ गयगमणि तुह कल्ले सुतुं कतं सिरिं च इह पत्तो ।  
“अहया त सबस्स जमि मणो निव्वुइ वइइ” ॥ ८७ ॥ सा आह कंहुं तुमए नाओ अपयासिओ वि सकेओ । तेणुत्तं  
विंवाहरि आयत्तसु तुज्झ साहेमि ॥ ८८ ॥ गुरुरयतुरयं आरुहिय आगतोहमिह अप्पकल्लेण । सच्चवियो तुमएवि डु  
वियसियकुनलयदलच्छीए ॥८९॥ हयकीलणच्छलेण मयच्छि त पेच्छिया मए सुइर । “तुह रूवस्स न तिची पत्ता जरि



एणव जलस्स" ॥ ६९० ॥ असमस्सिगेहसवसरसवसुफुल्लनयणकमलेहिं । अवलोइओ तए वि हु अहमणिमिसविब्भम-  
धराए ॥ ९१ ॥ नाओ तुहाणुराओ मए तए वि हु ममाणुराओवि । "नयणेहिंनिय नज्जइ अहवा हिययट्ठिओ भावो"  
॥ ९२ ॥ एत्थंतरम्मि तुमए धम्मिह्हा छोडिऊण कुसुमाइं । खित्ताइं इह पएसे अमिलाणाइं पि तवेळं ॥ ९३ ॥ मं  
पेच्छिरीए उबेह्लिऊण केसेहि विरइया वेणी । आमीलिय नयणाइं मं पेच्छिय तं गया सगिहं ॥ ९४ ॥ नाओ मएवि  
भावो जह मह दिन्नो इमाए संकेओ । कहमन्नह अमिलाणाइं एत्थ कुसुमाइं खित्ताइं ॥ ९५ ॥ केसेहिं निसितमंमि  
तह नयणनिमीलणेण सुत्तजणे । अहमाहूओत्ति वियडूयाए नायं मए जेण ॥ ९६ ॥ "वंकभणियाइं कत्तो कत्तो अद्धच्छि-  
पेच्छियाइं च । ऊससियंपि मुणिज्जइ छइल्लजणसंकुले गामे" ॥ ९७ ॥ ता रंभोरु तुहत्थे एत्थ अहं आगओ तुह वियोगा ।  
पल्लियजलणजालाजलिरंगो इव दिणं गमिउं ॥ ९८ ॥ सा जंपइ चउजामोवि सामि मह वासरो सहसजामो । तुह  
विरहविहुरयुस्माथजायतावाय संजाओ ॥ ९९ ॥ अमयमओ पिय तं जं तुह मिलणे मे गओ विरहतावो । "किं सिसिर-  
किरणजोण्हजोगो धम्मं न पसमेइ" ॥ १०० ॥ इय रम्मपेस्सवस्समुद्धतेहिं तेहिं तत्थेव । रइया रयकीला उल्लसंत-  
मयमयणमतेहिं ॥ १०१ ॥ तद्विरइयरयविष्माणविरयणा हरियहियवावारा । सा आह कुणसु तह नाह जह सया होइ णे  
जोगो ॥ १०२ ॥ फुट्टइ हिययं दज्जइ सरीरयं जाइ जीवियंबपि । मह तुह विरहे ताहमवि सहं तए आगमिस्सामि ॥ १०३ ॥  
तन्नेहसोहिओ सो जंपइ ता चलसु तयणु तीउत्तं । गहिउं निययाभरणं इण्हिपि समागमिस्सामि ॥ १०४ ॥ ता अप्पसु  
नियच्छुरियं जह पेडं दारिउं तमाणेसि । जायइ खडक्खडा तालयस्स उग्घाडणे जेण ॥ १०५ ॥ तेणावि खग्घेणू समप्पिया  
गहिय तं गया सावि । नवरं महइवेलाए आगया तस्स पासंमि ॥ १०६ ॥ कूवयकंठनिविट्टस्स ज्झत्ति तीए समप्पिया  
छुरिया । "सिद्धे कळे को वा परवत्थुं धरइ सकरम्मि" ॥ १०७ ॥ सह अप्पणा इमंपि हु पट्टु दिन्नं तुह सुमग्गमाभरणं । इय

जपिरी तमप्यइ “किमदेयं वा सिणेहस्स” ॥८॥ सगोविय समग्ग तेणवि त वधिज्जण परिहणो । “इयरपि सुग्गहीयं कुणति दक्खा किमु न दध” ॥ ९ ॥ भणिय च तीए पिययम तुह क्खे मारिज्जण दइयंपि । इह पत्तत्ति पयासइ पयईतुच्छत्त- भित्थीण ॥ ७१० ॥ त सोडं सो सुहडो जपइ एय तए कयमजुत्तं । जं सो हओ “न गरुया पावपवत्तावि निक्करुणा” ॥ ११ ॥ पररमणीपरिभोगो एक वीय तु तीए अवहरण । तइयं धणावहरो तुरियमविणासिनरहणण ॥ १२ ॥ जइ ह नागच्छंतो ता हुत एकमवि न पाव मे । आगंतु चत्तारिवि पावाइ मए कयाइं पिए ॥ १३ ॥ एकेक्कंपि समत्थं दाणे नेरइयदारुणहुहस्स । चउपावभरफ्तो कहिं हयासो गमिस्समहं ॥ १४ ॥ नंदतु नरा तेच्चिय चिर न चिंतावि जाण सजाया । पररमणिविसयविसया सीलालकारकलियाण ॥ १५ ॥ हा हा हयविहिविहिओहमिह महापावमदिर तुमए । कहमन्नह म पत्ता एवंविहपावरिंछेली ॥ १६ ॥ गब्भाउ किं न गलिओ बालो मिलिओ न किं विडालीए । जमहम- कज्जपरपरपत्त जाओ अणज्जमई ॥ १७ ॥ एव वेरगवसा वागरमाणं निसामिय तय सा । चित्तइ नून विरत्तो एसो परिसससुल्लावा ॥ १८ ॥ ता मह सवत्तिपुत्ताण गोससमयमि साहिही नूणं । ते म कयत्थिज्जण दुम्मरणेण हणिस्सति ॥ १९ ॥ ता किं इमिणा मह रक्खिएण नियवेरिणत्ति चित्तेइ । “खणरायविरायन्तं पायं पयई महिलियाण” ॥ ७२० ॥ पटु मह खमसुत्ति पयपिज्जण खामणमिसेण तप्पाए । उप्पाडिज्जण अयडे झडत्ति सुहं खिवइ पावा ॥ २१ ॥ तिब्बानु- राय(इ)णीविय सज्जध विराइणी दुयं जाया । “खणरायविरायत्ते महिलिणहवा किमच्छरिय” ॥ २२ ॥ दट्टूण भंडं अयडे पक्खत्त हयहरो विचिंतेइ । “धिब्धी धिरत्थु इत्थीण गत्थसत्थेक्कमूलण” ॥ २३ ॥ उम्मीलिओ वि दूर इमंमि सुहडे इमाए अणुरातो । सहसच्चिय पणट्ठो पवणाहयसरयजलओध ॥ २४ ॥ जत्सग अप्पिज्जिइ दिज्जइ दुइयसधदधंपि । सो वि हु एवं इम्मइ “अहो महेलाण मूढत्त” ॥ २५ ॥ पचविहं विसयसुह उवमुत्तं जेण सह सिणेहेण । तथेळं चिय सोवि हु

खित्तो पावाए क्वंमि ॥ २६ ॥ दहूण कूडकवडाइं नूण महिलण पुवरायाणो । सुतुं तणंव ताओ झत्ति तवच्चरणमकरिंखु  
॥ २७ ॥ पवगिब चलयसाहावा महिला ल्खयच्च जणियसंतावा । उप्पाइयवसणसया कुविंदसालव पडिहाइ ॥ २८ ॥ सुंदरवन्ना  
आमोयमणहरा सुहरसाय सुजंती । महिला किंपगफलावलिव उप्पायइ अणत्थं ॥ २९ ॥ सूरौवि कयत्थिज्जइ खंडिज्जइ  
सबयावि रायावि । राहुसिरीए इव महिलयाए कळुसस्सहावाए ॥ ७३० ॥ अंतोहुंत्तुम्मीलियपकामरसपूरिया परिब्भमरी ।  
गयणं व कुलं मइलइ महिला नवमेहमालव ॥ ३१ ॥ दुदन्ता कुडिलगई परमपियविवज्जिया सुइविहूणा । कस्स न भय-  
मुप्पायइ नियंविणी सण्णिणीव सया ॥ ३२ ॥ कज्जम्मि जाण कीरइ धणज्जणं चोरियाइ काऊण । ताणेरिसं सरूवं ता  
“पज्जत्तं ममित्थीहि” ॥ ३३ ॥ असरिसवेरगगविभावावसुहसियगुरुस्तरविवेए । अस्सावहाएपुरिसे एवं परिभावयंतम्मि  
॥ ३४ ॥ पविसिय गिहंमि गहिऊण हलकुसिं पइगिहे खणइ खत्तं । “किम्मकज्जं वा वज्जियमज्जायाणं महिलियाण” ॥ ३५ ॥  
गंतुं मज्झे धाहावए जह धाह धाह धाहत्ति । पविसिय चोरेणं ठक्कुरो हओ नीयमाभरणं ॥ ३६ ॥ तं सोऊणं सहसा  
ससंभमा साउहा सपाइक्का । ठक्कुरपुत्ता परिवेढयन्ति गिहमुगहक्करवा ॥ ३७ ॥ तुरयकुडिप्पमुहाइं ठाणाइं नियंति केवि  
दीवकरा । अन्ने उ अनिसंति य चोरपयं पयइनिउणनरा ॥ ३८ ॥ दहूण गिहावेढं हयावहारी विचिंतए एवं । मह संक-  
डमावडियं छुट्टिस्सं ता कहं इण्हि ॥ ३९ ॥ न तरेमि विणिगंतुं भडपडलावेडियाओ भवणाओ । दुक्कम्मभरावरिओ  
नरयट्टाणाउ जीवोव ॥ ७४० ॥ जइ देमि गिहा वाहिं निगयसाहाए झत्ति झंपमहं । ता वियडे अयडम्मि पडामि सुहडो-  
ब निब्भन्तं ॥ ४१ ॥ नूणं मह हयहरणपवेसभवपावपडलविडविसस । इह मरणेणं कुसुमं फलं तु होही नरयपडणं  
॥ ४२ ॥ मं दट्टुमिमे गोसे चोरोत्ति विचिन्तिउं हणिससन्ति । ता तमतरोहिओ वडठिओवि अप्पं पयासेमि ॥ ४३ ॥  
इय चिन्तिय तेणुत्ता ते तुम्हाणं कहेमि सबंधि । वुत्तं मं पच्छा सुंचेज्जहवा हणेज्जाह ॥ ४४ ॥ तं सोउं तेहुत्तं इहट्टि-

ओषि हु फहेसु तो तेण । कहिओ आमूलाओ नियओ तीए य उततो ॥ ४५ ॥ भणिय च जइ न पत्तियह मञ्ज ता नियह कूचयस्सतो । सुहड धणुतूणीरामरणजुय सपय चेव ॥ ४६ ॥ त सोउ पक्खित्तो तेहिं वरत्ताए दीवओ कूवे । सचविओ य तरतो जहकहियगुणो मओ सुहडो ॥४७॥ कुवाओ तमायड्डिय गहिऊणाभरणमुच्चिय मडय । “निज्जीवेण वि कल्ल जेण तय धिप्पए नन्न” ॥ ४८ ॥ एयविरह न सत्ता सहित्तति विचिंतिउव पुत्तेहिं । लहुमायावि हु बद्धा सद्धि मडएण कुविएहिं ॥ ४९ ॥ तपि विणिग्गहणिल्लो चोरोत्ति पयपिओ ह्यहरो वि । “पावन्ति चोरजारा जइ वा कि कत्थई पूय ॥ ७५० ॥ नवर तुमए सवपि साहिय तेण त विमुक्कोसि । “उवयारओ सदोसोवि मुच्चए जेणिमा नीई” ॥५१॥ मडय चढाविय सूलियाए निद्धाडिया य लहुजणणी । “रोसो न मयरिउम्मिवि गच्छइ कि पुण जियतमि” ॥५२॥ धरिऊण सवहुमाणं दिणत्तिग अस्सहरयपुरिसपि । पिउमयकिच्च काउं सम्माणेउ विसज्जन्ति ॥ ५३ ॥ अप्प सपइ जायव जममुहा निगयव मन्नतो । वचतो नियगामे पत्तो सो इह अरनंमि ॥ ५४ ॥ पेच्छइ उस्सग्गठिय मुणिभेग मुत्तिमतमिव धम्म । पचक्कं पसमपिव सकेयपिव मुणियुणाण ॥ ५५ ॥ पुहुप्पन्नविराओ अवलोइय सो मुणिं ठिओ हेट्ठो(हिट्ठो?) । दारिइभरंक्कतो नरोव सपत्तरयणनिही ॥५६॥ तो त पणमइ तच्चलणकमलमिलमाणभालफलओ सो । सहलत्तं कलयतो सजम्मजीवियनरत्ताण ॥ ५७ ॥ आवद्धपाणिपउमो पुरओ उवविसिय जपए एव । रत्ने अमाणुसे पहु कि तवह तवति मह कहह ॥ ५८ ॥ पारियकाउस्सग्गो उवविसिउ तस्स साहए साहु । खेयरमुणी महायस अहमिह आयाविउं पत्तो ॥ ५९ ॥ जेणमिह तिरियविरइयकयत्थणा हणइ मञ्ज दुक्कम्म । वेज्जोवइट्टपरमोसहं व रोयं समगंणि ॥ ७६० ॥ तेणुत्त पहु मह कहह कपि धम्म गिहत्थजणजोगं । “तीरइ निवाहेउ जो सो उक्खिप्पए भारो” ॥ ६१ ॥ आह मुणी गिहिणोवि हु जायइ धम्मो जिणिंदपूयाए । सा होइ अट्टभेया अट्टमयट्ठाणनिम्महणी ॥ ६२ ॥ नेवज्जाधूवदीवयअक्खय-

फलसलिलवांसकुसुमेहिं । पूयंति जे जिणं ते पुजां तिजयस्स वि हवन्ति ॥ ६३ ॥ कीरंति एक्केक्कावि हरइ गुरुरोगसो-  
गदोगेवे । किं पुण सबाओ वि हु विरइज्जंतीड भत्तीए ॥ ६४ ॥ सबाओवि असत्तो काअं जइ कुणइ धूवपूयंति । ता  
धूवेण समं सो धुवं निर्यं दहइ दुक्कम्मं ॥ ६५ ॥ उज्झंतधूवभवधूमधूविओ इव सुयंधसंबंगो । जायइ भवंतरेवि हु जीवो  
उक्खिवियजिणधूवो ॥ ६६ ॥ तं सोअं सो जंपइ पहु नूणमहं कयत्थजणपढमो । मरणंतवसणविणिगण्ण तं जेण संपत्तो  
॥ ६७ ॥ इय भणिय पणमिय सुणी लग्गो सो निययगाममगमि । गच्छंतो संपत्तो गामे सिरिसारवांसमि ॥ ६८ ॥  
तंमि तवणीयकलसं नहगलगं जिणालयं नियइ । सिंगगसंगिनवतरणिमंडलं उदयसेलव ॥ ६९ ॥ तं दहुं सो चिंतइ  
दिणहुगसंबलयद्विणकीएण । धूवेण जिणं पूइय पुत्रप्पसरं समज्जेमि ॥ ७० ॥ इय परिभाविय गहिअं कप्पूरागरुवि-  
मिस्सियं धूवं । पत्तो जिणालए पेच्छिअं जिणं हरिसिओ दूरं ॥ ७१ ॥ उल्लसिरमणो संदंतलयणो वित्थरन्तरोमंचो ।  
पसरंतभत्तिभावो धूवं उक्खिवइ जगगुरुणो ॥ ७२ ॥ तयणु मणुयत्तनियजम्मजीवियबाण सहलयं कलिअं । वारं वारं  
भूसिलियभालमभिनमइ जिणनाहं ॥ ७३ ॥ संचलिओ नियगामे पत्तो य तहिं पमुक्कअन्नाओ । तम्मि वि भवम्मि रिद्धी  
जाया से धम्ममाहप्पा ॥ ७४ ॥ संपत्तआअंतो जातो अमरो सणकुमारो से । नायं च धूवपूयाए अत्तणो तेणममरत्तं  
॥ ७५ ॥ परिभावइ य जहाहं करेमि जिणमंदिरं जमिक्खेअं । जायइ भवंतरे मे वोहिति विचिंतिअं तेण ॥ ७६ ॥  
रइयं जुगाइजिणजुयसुअं जिणहरं कणयकलसं । दुट्टदमयाभिहसुरो आइओ तस्स रक्खत्थं ॥ ७७ ॥ जिणचवण-  
जम्मदिक्खाकेवलनिव्वाणगमणदिवसेसु । समगममरेसरेणं भत्तीए महूसवे कुणइ ॥ ७८ ॥ इय समुवज्जियसुकओ  
मुत्तं सुरलोयसंभवसुहाइं । चविय तओ इह जाओ एसो हं तुम्ह पच्चक्खो ॥ ७९ ॥ ता एयं जिणमंदिरमवल्लोइय  
सुमारिया मए जाई । जह जिणधूवुक्खेवो जाओ कल्लणहेअ मे ॥ ७८० ॥ तं सोअणं मंडलियमंतिणो विंति जयइ जिण-

धम्मो । अप्पस्स वि जस्स कयस्स हति महईओ रिद्धीओ ॥ ८१ ॥ तयणु कुमारेण रिसहस्स सामिणो भच्चिपुलय-  
कल्लिण । पणगिय विह्मिओ अट्ठाहियामहो गरुयरिद्धीए ॥ ८२ ॥ तो चउरगचमूचयसचाराऊरियक्खमावीढो । अब्भलिह-  
धवलहरे सपत्तो नियपुरे कुमरो ॥ ८३ ॥ असियसियद्धयोहे निम्मियमंचाइमंचकयसोहे । पविसइ पुरम्मि कुमरो विल-  
सिरसिंगारलियअमरो ॥ ८४ ॥ गतु सहाए पणओ पिउणो पयसयदलं तओ तेण । आलिंगिऊण कुसलपउत्तिमापु-  
च्छिओ पुत्तो ॥ ८५ ॥ सो आह ताय मह तुह पसायसुहियस्स सधया कुसल । इय जपिय उवणीया पिउपुरओ तेण  
सत्तुसिरी ॥ ८६ ॥ पणओ सत्तुसुओवि इ तस्स कओ राइणावि सम्माणो । ‘पणयम्मि वच्छलच्चिय पहुणो सत्तुम्मिवि  
निएव’ ॥ ८७ ॥ पणयाए बहुयाए भव पुत्तवइत्ति जंपियं रत्ता । ‘भणइ परे वि हिय चिय गरुओ कि माणुसे न निए’  
॥ ८८ ॥ कइवयदिणावसाणे रज्जम्मि निवेसिओ सुओ रत्ता । पुत्त सुत्तं नन्नस्स होइ सब्बस्ससामित्त ॥ ८९ ॥ सुवि-  
हियसूरिसयासे गहिया दिक्खा निवेण रिद्धीए । ‘इहलोइयं जहा तह परभवकज्जपि कुणइ गुरू’ ॥ ९० ॥ चरिय तवं  
उप्पाडिय केवलनाण निवो सिवं पत्तो । ‘किमसञ्झ वा दुफरतवस्स भावेण विहियस्स’ ॥ ९१ ॥ नवनिवईवि नयपरो  
पयाड पालइ अभिइवइ डुढे । वदइ गुरुणो पूयइ जिणेसरे मन्नए भित्ते ॥ ९२ ॥ साहम्मियवच्छल कुणइ पयट्ठावए  
अमारीओ । किं वहुणा तित्थसमुन्नईकर कुणइ सधपि ॥ ९३ ॥ तत्पुन्नपरिसागरिसियव्व आगतुमवणिवइणो तं ।  
सेवति सधदेसुन्भवावि गुरूभच्चिराएण ॥ ९४ ॥ तेणावलोइओ जो मन्नइ सो अप्पगममयसित्तं व । आभासिओ पुणो  
तिहुयणेफरज्जाहिसित्तव ॥ ९५ ॥ एव वहुकालं पालिऊणमकलंकरज्जमवणिवई । कुमर पयावसाराभिहं ठवेऊण रज्जमि  
॥ ९६ ॥ निगंथगुरुसमीवे दिक्ख धेतु कयुगतवचरणो । उप्पन्नविमलनाणो सपत्तो मोक्खमक्खेवा ॥ ९७ ॥ जह

ध्रुवभ्रमवपूया जाया एयस्स मोक्खसोक्खकए । तह अन्नस्सवि जायइ ता भवा तीए उज्जमह ॥ ९८ ॥ धूपपूजा ॐ  
 ५ ५ ५ ५ ५ एसो हु ध्रुवपूयाए साहिओ ध्रुवसुंदरो इहिं । भुवणप्पईवनिवहं दीवयपूयाए निखणेह ॥ ९९ ॥ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५  
 उल्लसियरायसिरिकरणसुंदरं ललियविलयपरिकलियं । अत्थि सरगामजुयं गीयंपिव भुवणविजयपुरं ॥ ८०० ॥  
 कलहसियरायभवणं कलहसियविरायमाणसुयणं जं । कलहरियरहियसलिलं कलहरियउत्तपहीणजणं ॥ १ ॥ पूरिय  
 पडरपयासो सबुत्तमनिद्धपत्तआहारो । दीवोव्व महीनाहो कुलप्पईवोत्ति तत्थत्थि ॥ २ ॥ सरहोवि विउलवच्छो  
 विदीहवाहोवि विलसिरगओवि । सारंगोवि न तिरिओ उत्तमपुरिसोच्चिय सया जो ॥ ३ ॥ गोरीवि अभीसपिया  
 सायरतणयावि अजडसयणसिया । तस्सत्थि धारिणिपिया सईवि जाणिंदपियभोया ॥ ४ ॥ तीए समत्थि परिपंशि-  
 हत्थिकुलदलणकेसरिकिसोरो । भुवणप्पईवनामो कुमरो गिरिसोव्व गुरुकित्ती ॥ ५ ॥ अप्पवउदयजुत्तो अब्भ-  
 सिककलोय वीयचंदोव्व । जो नवरति(वि)व पुवाभासी जयजणसुहंकरो य ॥ ६ ॥ समवयवेसालंकारसारसामंतमंति-  
 पुत्तेहि । सद्धि बंधुरकीलं कुबंतो गमइ कालं सो ॥ ७ ॥ कइयावि कसिणअट्टमिनिसीहसमयंमि जगए जाव ।  
 तो आयन्नइ आउज्जतालगीयस्सरं कुमरो ॥ ८ ॥ तस्सरमणुसरमाणो दिट्ठिं पक्खिवइ मुक्कपल्लंको । नियइ दुवालसमुयं  
 पेच्छणयपरं नरं तिसिरं ॥ ९ ॥ दोहिं करेहिं पडहं दोहिं मुइंगं च दोहि तालाओ । वीणं दोहिं वंसं च दोहिं हत्थेहिं  
 वायंतं ॥ ८१० ॥ नट्टवसुबेस्सिरमुयकरजुयवित्राससंचरं तत्थ । घणमणिकुंडलमंडियमहिलाएक्काणसणाहं ॥ ११ ॥  
 वीएण मणेमयरायवासणावसविमुक्कफुक्केण । रमणीमुहेण वंसं वायंतेणं विलसमाणं ॥ १२ ॥ तइएण  
 महुरसरगामसुच्छणाजणियसवणजुयसोक्खं । उगायंतं गीयं मज्झट्ठियपुरिसवयणेण ॥ १३ ॥ 'कुलयं' ॥ इय अच्च-  
 न्भुयअदिट्टपुवपेच्छणयपेच्छणुत्तालो । वंचितु पमत्ते अंगरक्खभडचेडपमुहनरे ॥ १४ ॥ नवमेहंडवरपावरणालक्खि-

यगसठाणो । करयलक्यकरवालो वासहरा निगओ कुमरो ॥ १५ ॥ 'जुयल' ॥ त पेच्छतो गच्छइ उच्छलियअतुच्छको-  
 उउकरिसो । चिन्तइ य अहो एयं भुवणतवहिवव किंपि ॥ १६ ॥ ज कुचकलियमेगं नरस्स मुहमिस्थियाण पुण दोन्नि ।  
 नेवेन्यमणिकुडलभालडियतिलयकलियाइ ॥ १७ ॥ सुवति इह भविस्सासत्थेसु दसाणणत्तिमुंडादो । नवर ते  
 पुरिसच्चिय एसो नरनारिख्वो उ ॥ १८ ॥ इय चिंततो पत्तो रायगरुहो वि तस्समीवमि । सोवि हु पच्छाहुत्त गच्छइ  
 करणक्कमच्छउमा ॥ १९ ॥ थोवप्पसरप्पउरावसरणकरणक्कमे कुणंतेण । तेणाहियहियहियओ दूर नीओ नरिंदसुओ  
 ॥ २० ॥ तइसिय अवरावरवित्राणालोयवियलियविवेओ । न मुणइ नयर दूरे न गणइ मगस्समलवंपि ॥ २१ ॥  
 एत्थतरम्मि सहसा सो नट्टवरो सरुवमुज्जेउ । उक्वायनिसायअसी जमोव जाओ भडो कुद्धो ॥ २२ ॥ जंपइ रे  
 दुट्ठाहम कुमार त सरसु देवयं इट्ट । मा भणसु पमत्तो ह विणासिओ केणइ छलेण ॥ २३ ॥ त निसुणित कुमारो  
 चिन्तइ सुरअसुरनहरन्नयरो । कोवि इमो मह वेरी छलेण जेणाणिओहमिह ॥ २४ ॥ वीसासिऊणमेवं जो जायइ  
 घायगो न मोत्तवो । इत्तवोच्चिय भन्नइ सो नूणं नीइसत्थेसु ॥ २५ ॥ इय चिन्तिय आयड्ढियखगो त हक्कए निवसु-  
 ओवि । "निकारिओ इयरोवि हु रुत्सइ कि खत्तिओ नेव" ॥ २६ ॥ दोन्निवि वग्गणकरणक्कममणुब्भामियसिडुद्वरिसा ।  
 निप्पसरप्पहरपरा जुञ्जति समच्छरुक्करिसा ॥ २७ ॥ दंसेउं सिरघाय मोत्तु पाएसु दिंति मुनईओ (?) । निविसिय उच्छ-  
 लियावसरिउ च दोन्नि वियवति ॥ २८ ॥ नेगोवि जयं पावइ दोण्हवि सत्थस्समप्पवीणत्ता । न समिज्जति य जं ते  
 निच चिय विजयसत्थसमा ॥ २९ ॥ अन्नोन्नरत्तगसघट्टभगवारागुडियअसिफलया । करकयतिक्खगखगगघेणुणो ते  
 पुणो मिडिया ॥ ३० ॥ मुक्कासिधेणुघाय वचइ करणक्कमेण कुमरो से । रोसेण कुमरुूरियापहारलक्ख हरइ सोवि  
 ॥ ३१ ॥ अवरोप्परावामकरप्पहारपडियसिधेणुणो देवि । जुञ्जति निजुद्धेण केसगहवाहुबंधेहिं ॥ ३२ ॥ निहयकेस-



महाबाहुबंधकरघायजज्जारियदेहा । निवडंति दृढति श्रद्धति उद्विडं पुणरवि भिडन्ति ॥ ३३ ॥ निहुरकुमारपायपहारव-  
च्छय(थ)लताडिओ सुहडो । पडिओ धसत्ति शुम्मन्तनेत्तओ भूमिवहम्मि ॥ ३४ ॥ तो तब्भुयजुय उवरिं द्वाडं नियपयदुगं  
धरियकेसो । धेतुं धराए छुरियं जा तस्स सिरं लुणइ कुमरो ॥ ३५ ॥ ता तेण नमो अरिहंताणं इच्चाइं पंचपरमेडी ।  
सरिया असारसंसारसायरुत्तारणतरिब ॥ ३६ ॥ तं सोडं हा हा साहम्मियमारणे महापावं । काऊण नूण नरए  
उपपयंतो दुहोहेहं ॥ ३७ ॥ इय जंपिरेण खामिय मुक्को सहसत्ति निवसुएण भडो । “अइकुवियाणवि करुणा जायइ जइ वा  
कुलीणाण” ॥ ३८ ॥ सो चिंतइ नररयणं एसो जमणेण मारणपरोवि । मुक्को वेरीवि अहं “गुरुण गणणा न रिउकीडे ॥ ३९ ॥  
होइ न सिरम्मि सिंगं अहमाणं उत्तमाण य नराण । किंतु अकज्जे कज्जे य ते मुण्जिंति वट्टता” ॥ ४० ॥ एएण जीवियधं  
दाडं दिन्नं समग्गमवि मग्गं । जायइ रत्ताईणं जं जीवंताणमुवओगो ॥ ४१ ॥ सुवणम्मि वि उवयारो न पाणदाणाओ सम-  
हिओ अत्थि । पच्चुवयरिउमसत्तेहिं निण्हविज्जइ न सो जेण ॥ ४२ ॥ थेवंपि हु उवयारं मंनइ पुरिसो गिरिंदगरुययरं ।  
निण्हवइ खलपयई पुरिसो उवयारलक्खंपि ॥ ४३ ॥ ता आराहेयवो एस मए देवयव सुगुरुव । जणउव जाव जीवं  
परोवयारपसत्तमणो ॥ ४४ ॥ इय चिन्तिय उद्वेडं पणमिय तं पायपउमजुयलगो । जंपइ मह अवरहं खमसु महा-  
यस कयपसाओ ॥ ४५ ॥ जइ न तुमं मुंचतो संपइ मं पुरिसरयण हुंतो हं । ता मंसगिद्धिगिद्धाइयाण भक्खं छुहंताण  
॥ ४६ ॥ इण्ह तं चिय सरणं आमरणं तंपि मञ्ज वञ्जोवि । जमहं न हओ तुमए करुणारसपूरियमणेण ॥ ४७ ॥ दडुं  
तं खामंतं जंपइ कुमरो अहो महासत्त । तुमए विवेइणावि हु किमिममवेरेवि पारद्धं ॥ ४८ ॥ जो जिणमए थिरमणो  
सुमरइ मरणमि पंचपरमिडिं । तस्सेयारिसनिग्घणकम्मं जायइ अहो चोजं ॥ ४९ ॥ जइ मह कहणिज्जमिणं सुपुरिस  
उवविसिय कहसु ता एत्थ । अहव अकहणिजं ता अच्छउ हियइच्छियं कुणसु ॥ ५० ॥ सो भणइ जस्स तणया पाणावि

दु तस किं न कह्निञ्ज । इय जपिय उवविसिउ सो कहइ निविट्ठकुमरस ॥ ५१ ॥ गुरुगयपत्तञ्जाओ घणकसिणसुतार-  
 सारसरलक्तो । सुगणोव भरहखेत्ते वेयड्डो नाम अत्थि गिरी ॥ ५२ ॥ तम्मि प्फुरतमणिगणरहनेउरचक्खवालरमणि-  
 यण । रयणमय अत्थि पुर रहनेउरचक्खनालंति ॥ ५३ ॥ दरियरिउवारवारणगणकुभवियारणेक्खलरनहरो । त परि-  
 पालइ सिरिरयणसेहरो नहयराहियई ॥ ५४ ॥ तसत्थि सधसुद्धतकतताहिवत्तअहिसिच्चा । हारस्सिसिखि हारस्सिसी  
 पिया चित्तमुत्तगुणा ॥ ५५ ॥ अन्नोन्नरम्मपेम्मणुवधद्धतमणपमोयाण । पचविहविसयसत्ताण ताण कालो अइफ्फमइ  
 ॥ ५६ ॥ कइयावि हु रयणविमाणसेणिसिगारियवरो चलिओ । नंदीसरमि सिद्धप्पडिमानमणाय रयारिंदो ॥ ५७ ॥  
 दाहिणिदिसिगयणेण गच्छंतो नियइ सम्मुहमहीए । मणिमंदिरपुरवाहिं निगच्छत जणसमूह ॥ ५८ ॥ तस्सतोनिज-  
 तरलज्जयालिइणहणिरकिकिणिगणाए । सिवियाए समारूढ अवलोयइ तरुणनररयण ॥ ५९ ॥ दिंत किवणवणीमग-  
 जायगदीणघट्टुयलोयाण । वछाविच्छेयकर दाणे मणिकणयरिस्थाइ ॥ ६० ॥ अवलोयत पुरतो लउडारसरासए  
 सपेच्छणए । उववूहिल्लत जय जीव त चिर इय जणासीहिं ॥ ६१ ॥ दाहिणपासमहासणनिविट्ठजणएण ससुवयणेण ।  
 समलकियमपपतेण दाणक्खम्मि कणयाई ॥ ६२ ॥ वामट्टाणपरिट्ठियगरिट्ठिविट्ठरनिविट्ठजणणीए । कयलवणुत्तारणय  
 सोयसुयवत्रिच्छीए ॥ ६३ ॥ वज्जतढक्खुफ्फाभेरीभकारभरियमुवणयल । रम्मारासुज्जाणमि गुरुयरिद्धीए सपत्त ॥ ६४ ॥  
 ॥ कुलय ॥ को एस कि करिस्सइ इह इय दुद्धीए नहयरवईवि । तत्थुत्तिन्नो कंचणकमलगय केवलं नियइ ॥ ६५ ॥  
 पालियसमगसत्त विरइयछजीवकायरक्खरपि । सोमपि मित्तरूव सुरयपुर वभयारिंपि ॥ ६६ ॥ दट्ठण केवलं नहयरे-  
 सरो भत्तिनिम्भरो नमइ । “धम्मत्थ पवित्तीओ जइ वा धम्मीण होन्ति सया” ॥ ६७ ॥ सिवियाए समुत्तिन्नो पणयपहू-  
 माइपिइअणुत्तातो । परिहरियालकारो सवेगुल्लसियरोमंचो ॥ ६८ ॥ सो विज्जाहरवइणो अवलोयंतस्स भत्तिभरिय-

मणो । समयविहिणां मुनिद्वेण दिक्खिओ विहिय सिरलोयं ॥ ६९ ॥ गहणासेवणसिक्खाकहणंते नहयरेसरो नमिडं ।  
पुच्छइ किं बेरगं जमिमो मुणिनाह पव्वइओ ॥ ८७० ॥ आह प्हू आयन्नसु खयरहि व अत्थि एत्थ नयरम्मि । अस-  
मपयावसारो पयावसारोत्ति नरत्ताहो ॥ ७१ ॥ अवरं च एत्थ निवसंति दोन्नि दुन्नयपरओ महिलाओ । एक्काए पवं-  
चमई नामं वीयाए पुण कुमई ॥ ७२ ॥ भज्जावईण विहडियपेस्माण कुणंति पेम्मसंधाणं । अच्चंतसुधडियाणवि तं  
विहडावंति अन्नोसिं ॥ ७३ ॥ उच्चाडणविट्टेसणथंभयवसियरणमारणाईसु । पावकिरियासु सययं वट्टति पमोयपुनाड  
॥ ७४ ॥ कइयावि दोवि दुन्नयजायत्थारूढगरुगवाओ । रिउसेणाओव सज्जियसराओ विवणीए मिलियाओ ॥ ७५ ॥  
अन्नोन्ननिण्हवुपंनंभुवसविहियगुरुविवायाणं । ताण सयासे मिलिओ बहुओ लोगो कुत्तूहलओ ॥ ७६ ॥ महफाडियं न  
सक्को विं संद्धेउं तरइ इइ कुमइभणिये । इयराह तथा सीवेमि जह न से होइ संधीवि ॥ ७७ ॥ इय विवयंतीओ जणेण  
ताओ नीयातो मंसिंनिज्जे । विन्नायवइयरेणं तेणवि नरवइसमीवंमि ॥ ७८ ॥ नाऊण तप्पइन्नं राया विम्हिअमणो  
पथंपेइ । कुणह इममिक्कवारं एत्थे तुम्हसभउत्ति ॥ ७९ ॥ कुमई जंपइ दिणपंचगस्स मज्झंमि फोडिइस्सामि । सीवि-  
स्सामि तमियराह प्हू अहोरत्तमज्झेवि ॥ ८० ॥ इय विरइयप्पइन्नाओ ताओ नमिडं निवं दुयं दोवि । कयजणअच्छरि-  
याओ पत्ताओ नियनियणिहेसु ॥ ८१ ॥ कुमईए चिंतिअं एत्थ अत्थि सुप(व)सुरिथविथारो । नामेण अत्थसारो गरिठ्ठ-  
सिद्धी सरलदिही ॥ ८२ ॥ नायरो बहुलहो वि कित्तिसारोत्ति अत्थि तस्स सुओ । उज्जलमाणसमुत्तिअपत्तसंतावले-  
सोवि ॥ ८३ ॥ नवजुवणुल्लणाए अभग्गसोहग्गसंगयंगीए । कंतिमइए पियाए सह विलसइ सो सया सुहिओ ॥ ८४ ॥  
नवरं कंतिमईए सरूवसिंगारगरुगवाए । आलविआए वि अहं न नया संभासियाविय नो ॥ ८५ ॥ ता तप्पइणो  
कीएवि कुंगनयणीए सह विहिय वडणं । साहेमि निवस्सं जहा तीए मंहंतं दुहं होइ ॥ ८६ ॥ तप्पइणो पुण अयसो

सतोसो मन्त्र निवृणो दृविण । “अहव कयावन्नाणं अणत्थउप्पायणं सस्स” ॥ ८७ ॥ ता एत्थ धणिधणेसरत्तणया तरुणी धणावली नाम्मा । असई सयपि ता तग्घडण सह तेण काहामि ॥ ८८ ॥ इय चितिय तबेल पत्ता सा कित्ति-सारसन्नेत्ते । काऊण तमेगते जपए महुरक्खरगिराए ॥ ८९ ॥ सुहय तुम पइ जपेमि किपि मा कुणसु पत्थणं विहलं । सो जपइ ता सपइ साहसु सा भणइ निसुणेसु ॥ ८९० ॥ इह अत्थि धणेसरसेट्ठिणो सुया कमलकोमलोरुजुया । नियरूवनिज्जियई नामेण धणावली वाला ॥ ९१ ॥ नियभवणमत्तवारणयाए तीए कयाइ सच्चविओ । आगच्छन्तो त रम्मरूवजियइवइविलासो ॥ ९२ ॥ सिंगारसस्ससमवयवयस्ससदोहसोहियउवतो । उत्तमउत्तुगत्तुरगवगणक्खणि-यणपिची ॥ ९३ ॥ अनिलदोलणविलसिरसिहिपिच्छच्छत्तजायछायसुहो । हेलाए कीलयतो जपाडंपाहिं हयरयणं ॥ ९४ ॥ चलसरलधवलीलालसल्लोयणजुयलवहलजोणहाए । परमायवुट्ठिपिव विकिरतो सैमहर तुरए ॥ ९५ ॥ सियसोणसाम-मणिमयभूसणसयभूरिकिरणनियरेहिं । रयणाभरणेहिं पिव अलकरतो तुरंगंपि ॥ ९६ ॥ दट्ठूण तुम उम्मीलमाणनव-नेहनद्धनयेहिं । आदिट्ठिपह अवलोइओ बहु तीए अवियणह ॥ ९७ ॥ सोहगरयणरोहण समोहणमयणवाणसम-तुमए । दिट्ठिपहाइक्ते वियभिओ तीए विरहभरो ॥ ९८ ॥ चितंमि तुमं चित्ते तुहागिई तुब्भ नाममालवणे । सिविणे समागमो ते सा वाला तम्मई जाया ॥ ९९ ॥ विरहानलजालावल्लिजलिरसरीराए तीए पारद्धो । ससुवयंसीहिं सयं सयय सिसिरोवयारभरो ॥ १०० ॥ सतडक्खार हारे तणुतावेणं फुडति मुत्ताओ । सिमिसिमिय सुसन्तिच्चिय नवकुव-लयनालमालाओ ॥ १ ॥ धणचदणागुरुरसछडाउ छकारपुब्बां तीसे । तचंगसगमेण लगतीओ वि परिसुसति ॥ २ ॥ गोसावयस्सायसदाहिसेणिच्च मुयइ असूणि । भजइ देह जिंभाउओ भयइ परिभमइ एमेव ॥ ३ ॥ एवमवत्था सा

तस्सहीहिं मह दंसिया तओ तीए । तं साहियं समगंपि तो अहं एत्थ संपत्ता ॥ ४ ॥ ता सुहय तुञ्ज संगम-  
आसच्चिय धरइ जीवियं तीए । अवहीरियाए तुमए मरणच्चिय जेगिमं भणियं ॥ ५ ॥ “दूरयरदेसपरिसंठियस्स पिय-  
संगमं बंहत्तस्स । आसाबंधोच्चिय साणुसस्स परिरक्खए जीयं” ॥ ६ ॥ ता मह उवरोहेणं अहवा तज्जीवियच्चरुणाए ।  
तं सरसु एकवारं दक्खिन्नदयाओ जं गरुए ॥ ७ ॥ इय जंपती दंतगधरियपंचगुलं नमिय तस्स । तच्चरणमिलिय-  
भाला ठिया चिरं चिंतइ तओ सो ॥ ८ ॥ अकलकं मञ्ज कुलं सावि पुणो पोढराइणी बाला । एसा वि विणयपणया  
किं काउं जुज्जए ता मे ॥ ९ ॥ एगत्थ अकल्लभयं अन्नतो मरइ सा मए मुक्का । पासदुगेवि बलगाइ डमरुयगंठिब  
मञ्ज मणं ॥ ११० ॥ जं होयबं तं होउ ताणुरत्ताए विरहविहुराए । काहं समीहियमहं इय चितेउं तओ तेण ॥ १११ ॥  
वज्जेउं मज्जायं मयलेउं निम्मलं जसप्पसरं । मोत्तुं कुलाहिमाणं अणुसरिऊणं कुसीलत्तं ॥ १२ ॥ चइऊणं सच्चरियं  
अंगीकाऊण नरयगइगमणं । उज्जेउं सद्धम्मं भणियं जं भणसि तं काहं ॥ १३ ॥ तं सोउं तीउत्तं एसो विहिओ महा-  
पसाओ मे । इय जंपिऊण पत्ता पासमि धणावलीए सा ॥ १४ ॥ तं पइरिके काउं पंचपए सुयणु सुणसु वयणं मे ।  
सा आह अंब जं किंपि जंपियबं तयं भणसु ॥ १५ ॥ तीयुत्तमत्थि इह अत्थिसत्थपविइन्नअत्थिवित्थारो । नामेण  
कित्तिसारो पुत्तो वणिअत्थसारस्स ॥ १६ ॥ रूवेण मयणमुत्तिं कंतीए कलावइं मईए गुणं । सक्कं सिंगारेणं जो  
जिणइ धणेण धणयंपि ॥ १७ ॥ तेण तुमं सच्चविया नियमंदिरमत्तवारणासीणा । लीलालोयणलोयणजोण्हाभरपूरिय-  
दियंता ॥ १८ ॥ दिट्ठाएवि सुयणु तए मयणसरप्पयरपहरजल्लरिओ । भवणम्मि कंहकहमवि संपत्तो सो अणुप्पहसो  
॥ १९ ॥ तं विरहज्जरविहुरं दहइ जलदावि जलणजालब । संताविति ससिकरा खयंगारब तस्स तणुं ॥ १२० ॥  
एमेव हसइ बालोब नियइ सुन्नं पिसायगहिउब । नच्चइ गायइ पलवइ मइरामयमत्तमुत्तिब ॥ २१ ॥ सच्चपणा पराय-

त्रमाणसो दंसिओ वयस्तेण । मह कहिऊण तुह दसणाणुरायाओ वियलत्त ॥ २२ ॥ तो तं सठावेउ तुह पासे हं समा-  
 गया सुन्नु । ता नररयणस्स तुम समीहिय कुणसु पसिज्जण ॥ २३ ॥ त सोउ सा असई नियमणऊम्मीलमाणउ-  
 म्माया । जपइ तुहोवरोहा अव अकज्जपि हु करिस्स ॥ २४ ॥ तो तीए जपिय पुबगोउरहारदेसदेवउले । आगतुं  
 मिलियघ निसाए पहरस्स तस्स तए ॥ २५ ॥ एव निसुय तदुत्तीए तीए गतूण कित्तिसारते । नीओ देवउले सो धणा-  
 वलीविय समणुपत्ता ॥ २६ ॥ कुमईए जपिय इह पविसिय मज्झमि रमह सच्छद । लोयागमणालोयणपरा दुवारे-  
 हमच्छिउस्स ॥ २७ ॥ तो मज्झपविट्टेसु तेसुफठाविसठुलगेसु । तीए कहिय आरकित्तयस्स गंतूण त ज्झत्ति ॥ २८ ॥  
 तो सतद्धणुद्धरअसिलेडयकरभडेहिं चउपास । परिवेडिय देवउलं स आह गोसे धरिस्समिमे ॥ २९ ॥ नो निग-  
 मप्पयेसा कस्सइ देया इहत्ति भणिय भडे । गतूण मंतिनिवईण कहिय तवइयर सुतो ॥ ३० ॥ दट्टणं सेट्टिसुओ  
 देयउल घडियभइदढावेढ । उब्भूयभूरिभयवेविरगज्झी विचिंतेइ ॥ ३१ ॥ पेच्छ जहा मज्झ महावसणमिणं  
 दुस्सह समणुपत्त । जीवियमरणसरूवे सदेहे जेण पडिओह ॥ ३२ ॥ “पुडिहभवससुब्भवपावप्पम्भारभावओ-  
 परस । सुनयाणपि अयाया इति न कि कयअनीईणं” ॥ ३३ ॥ गोसे वधेउं मं नेही आरक्खिओ विवणिवीहिं ।  
 जणयाइजणसमक्ख विडविही विचिहवियणाहिं ॥ ३४ ॥ तुच्छतरविसयलालसमणस्स मह केत्तियं इम दुक्ख ।  
 पररम्मणिरमणपावा णरए तमणतसो होही ॥ ३५ ॥ न कयाइ कओ अनओ मए न अनईहिं सह पसगोवि । एयं  
 विय गोत्तक्कतयहेऊ पढमं कयमकज्ज ॥ ३६ ॥ अप्पविणासाय महापावुल्लासाय अयसपसराय । खलओक्करिसाय मए  
 एय दुधिलसिय विहिय ॥ ३७ ॥ मरणं दारिइ वा विएसवासो व सयणविरहो वा । हुउ वर एयाइ मा पुण एसो  
 कुलफलो ॥ ३८ ॥ न कुणति जे परिक्खिय कज्ज ते दुक्खमदिर हुति । पहसिज्जति जणेण मइलज्जतिय अकित्तीए

॥ ३९ ॥ पंचिदियत्तमणुयत्तआरियक्खेत्तेसु सुकुलजम्माई । सर्वपि मे निरत्थयमकज्जकरणुज्जमा जायं ॥ ९४० ॥ न  
कओ धम्मो न गुणा समज्जिया सज्जिया न सियकित्ती । चित्तालिहियनरस्स व मणुयत्तं मह सुहा जायं ॥ ४१ ॥  
आबालकालओ बंभयारिणो जे कयबया जाया । ते पुन्नपयं न वयं विसएहिं विडंविचा इय जे ॥ ४२ ॥ जइ देवगुरु-  
पसाया एयवसणाड कहवि छुट्टिस्सं । गिण्हिस्सं ता नियमेण सबविरइवयं सुहयं ॥ ४३ ॥ एयं महाणुभावो चित्तइ  
सद्धम्ममगमणुपत्तो । दूरं धणावलीवि य पकंपए भडभयुब्भंता ॥ ४४ ॥ एत्तोय पवंचमइं पहरिसउक्करिसिया कहइ  
कुमई । इय फाडियं मएयं संधसु जइ संधिडं तरसि ॥ ४५ ॥ इय भणिय गयाए तीए सेट्टिणो कहइ सा तमागंतुं ।  
तो सो सुयतवसणो खणं भया निच्चलो जाओ ॥ ४६ ॥ तियसोव निन्निमेसो निव्वभरनिदोव नट्टमणवित्ती । कयमोणो  
सज्जाणो जायसुच्छोव निचेट्टो ॥ ४७ ॥ किं कायव्विमूढं तं दडुं जंपए पवंचमई । किं सेट्टि गरिट्टमई विनट्टबुद्धि  
लक्खियसि ॥ ४८ ॥ किं कायरोव कंपसि रणरसियभडोव धीरिमं धरसु । केत्तियमेत्तं कज्जं इमं कुसग्गीयवुद्धोण  
॥ ४९ ॥ जइ वि कुमईए कहिए विहिओ रायेण भडदढावेढो । तुह तणओ मरणंतवसणं पत्तो जइवि इण्हि ॥ ९५० ॥  
तहवि हु तहा जइस्सं न जहा दवक्खओ ल्हसइ न जसो । न विणस्सइ तुह तणओ जणाणुराओ न जह जाइ ॥ ५१ ॥  
नवरं नियवंहुयं मह अप्पसु तं देवमंदिरे खिविडं । जह वंचिय समईए सुहडे कट्टेमिं तं असइ ॥ ५२ ॥ गोसे चाह-  
रिय निवो जंपइ जइ किंपि ता भणेज तुमं । सपिओवि मह सुओ पहु निसाए रुसिडं कहिंपि गओ ॥ ५३ ॥ एवंति  
भणिय बहुयं सिंगारिय से समप्पए सेट्टी । नियसम्मयमहिलाओ मैलइ गंतुं सगेहे सा ॥ ५४ ॥ वज्जिवद्भावणयच्छंद-  
पणचंततरणपरियरिया । अयसंकलसंदाणियकमकंतिमईए संजुत्ता ॥ ५५ ॥ सह मियमंजुस्सरत्तूरिएहिं गायंतकामिणी-  
कलिया । चलिया मंदं मंदं पत्ता य कमेण देवउले ॥ ५६ ॥ सवणासन्ने ठाडं कित्ती(कंति)मइं जंपए पवंचमई । अन्तो गंतुं

तुगा असईवेसो नियसियवो ॥ ५७ ॥ ठायं पइपासे होइ अणत्थो जहा न से गोसे । अप्पियनियनेवत्थं मह पासे  
पेसिया सा ॥ ५८ ॥ इज जपिज्ज चलिया खलिया य भडेहि इय भणंतेहि । लब्भइ न इह पवेसो रायाएसो जतो  
एसो ॥ ५९ ॥ एत्थ पविट्ठो चिट्ठइ रुद्धो असईजुतो नरो कोई । ता पूइज्जह गोसे देवयमिण्हि पुणो वलह ॥ ९६० ॥ तो  
तेसि पवचमई वियरर सघेसि कुमुतंवेले । “दूरे इयरे थड्ढा वि हुति दाणेणमणुक्कला” ॥ ६१ ॥ पुत्र मह दुहियाए  
उवजाइयमेव तो इमा पत्ता । “अवरावि पूयणिजा देवी सप्पचया किन्नो” ॥ ६२ ॥ अज इमाए तइज्जो उववासो आसि  
ज इम वणिय । ता तुम्भे करुणाए एकमिमं चिय पवेसेह ॥ ६३ ॥ जइ अज इमा अच्चइ न देवयं ता न सुजए नूणं ।  
ता सुत्तुमिस एयाए जीवियघ पयच्छेह ॥ ६४ ॥ एत्थ ठिआ वि अम्हे भत्तिं देवीए गीयनेट्ठेहिं । पयडिस्सामो पसिउ ता  
कुणह इमति तीउत्त ॥ ६५ ॥ तो ते दक्खिन्नदयाहिं पेरिया विंति मइणि त चेव । एका गंतु पूइत्तु देवयं इत्ति निग्गच्छ  
॥ ६६ ॥ त सोउ कंतिमई पूयापडल करे कलेज्जण । देवजलम्मि पविट्ठा ठिया अणुट्ठिय जहुदिहं ॥ ६७ ॥ नचणगाणघग्गाण  
ताण रगणीण पासमणुपत्ता । कंतिमईनेवत्थप्पच्छाइयतणुलया असई ॥ ६८ ॥ वज्जिरवद्धावणया वल्लिउ पत्ता पओलिदे  
सम्मि । रुवय-अद्ध दाउ विसज्जिया तूरिया तुरियं ॥ ६९ ॥ पहसतीउ पविट्ठा पुट्ठाओ पजलिरक्खलयभडेहि । कि नो वज्जइ  
तूर पडर इम तो पवंचमई ॥ ९७० ॥ अट्टह तेत्तउ वज्जइ जेततउ पोलिहि वार । अंइरुद्धो वि न रुभइ सहु परिणिए भत्तार  
॥ ७१ ॥ रायसमीवगीकयपुन्नपइन्ना अईव सा तुट्ठा । “थोवावि कज्जसिद्धी तोसकए कि पुण न वहुया” ॥ ७२ ॥ पुरम-  
ज्जमागायाओ विसज्जए सा सहीओ सधाओ । “सिद्धप्पओयणाण कि कज्ज जणसमूहेण” ॥ ७३ ॥ वद्धाविज्जण सेट्ठिं गंतूण  
णिए गिहमि सुत्ता सा । “निश्चिंताणं निद्दा जायइ जइया किमच्छरियं” ॥ ७४ ॥ सूरुग्गुमसमयम्मि वि संनज्जंतम्मि तम्मि



भडविंदे । सपिओवि कित्तिसारो निगंतुं ते पर्यपेइ ॥ ७५ ॥ किं तुब्भे सन्नञ्जह पिउणा अवमणिओ गहिय भजं । इह वसिय निसिविरामे जाव विएसम्मि वच्चिस्सं ॥ ७६ ॥ ता इह पविट्ठमेत्तोवि वेढिओ कहह को विणासो मे । ते वंति निवा-  
मच्चं पुच्छसु जे तं धरावेंति ॥ ७७ ॥ तेणुत्तं मह ताणवि तणओ न भओ जओ विसुद्धोहं । “किं काहि भवो वि हु विज्जो नीरोयदेहाए(ण)” ॥ ७८ ॥ इय भणिरे सेट्ठिसुए आरक्खियमंतिणो समणुपत्ता । दड्ढूण सेट्ठिपुत्तं सकलत्तं विम्हिया देवि ॥ ७९ ॥ सुहडाण व तेसिं पि हु कहियं सबंपि कित्तिसारेण । रायसयासे नीओ भज्जाजुत्तो वि सो तेहिं ॥ ९८० ॥  
रायउले निज्जंतं तणयं नाउं समागओ सेट्ठी । “इयरेवि सायरच्चिय सुयणा किं पुण न नियपुत्ते” ॥ ८१ ॥ सुयसेट्ठिसुय-  
निवंतियनयणा पत्ता दुयं पवंचमई । “का संका सकखं रायवयणपत्ताभयाणहवा” ॥ ८२ ॥ असमाणपवंचमइमईए विजि-  
यत्ति नागया कुमई । “तत्थ न जत्ति सयन्ना पराजओ जायए जत्थ” ॥ ८३ ॥ गंतूणत्थाणत्थं सब्वेवि निवं नमिउ  
उवविट्ठा । “विणयप्पणई सस्सा सबत्थवि किं न नमणिज्जे” ॥ ८४ ॥ मंतिसयासा सोउं भणइ निवो कित्तिसार किं एयं ।  
सो आह जह पहू मुणइ तह इमं किं अलीएण ॥ ८५ ॥ “सयमेव देव विसयाहिलासिणो पाणिणो सया तम्मि । जो  
पुण परोवएसो घयाहुई सा हुयासम्मि” ॥ ८६ ॥ इय जंपिय कुमइविपयारणुपन्नरायरसपमुहं । कहियं रत्तो “भन्नइ  
पमाणभूमीए नो अलियं” ॥ ८७ ॥ जेण सरीरेण कयं सहउ तयं देव निगहहुहाइं । “देए पच्छावि रिणे सइ दब्वे दिज्जइ  
न किं तं” ॥ ८८ ॥ आह निवो मा वीहसु जमेक्कवारं इमाण महिल्लणं । अभथो मए विइत्तो फाडणसंवाणकोउयओ  
॥ ८९ ॥ नामाणुसारिणिच्चिय कुमईए मई महा अणत्थयरी । “अहवा परिपल्लिरो दहणो दहणोच्चिय जहत्थो” ॥ ९० ॥  
पेच्छ पवंचमईए भजं पक्खिविय कड्डिया असई । नो विन्नायं केणइ “बुद्धीए अगोयरो नत्थि” ॥ ९१ ॥ सेट्ठिसुय नो  
कयाइवि विस्ससियबं तए कुमहिल्लण । जं संपइ विस्ससियस्स आगओ आसि तुह मच्चू ॥ ९२ ॥ विन्नवइ कित्ति-

सारो देवपत्ताण जीवियघस्स । पत्तस्स चरिय चरण भवहरण सहलय काहं ॥ ९३ ॥ जइ नो देवो देतो पाणे मह  
नूण ता अह र्णिह । उभयभवसभाणवि चुफतो चैव सोक्खाण ॥ ९४ ॥ रायाह वच्छ कस्सइ कयाइ भववासमहि-  
वसत्तस्स । दुक्कम्भेण अवाया ह्ववति ता मा समुच्चियसु ॥ ९५ ॥ मा कुणसु वयकिलेस धम्मो सत्तस्स होइ निहिणोवि ।  
“को नाम कुणइ फट्ट सइ कल्ले सोक्खसञ्जम्मि” ॥ ९६ ॥ सो भणइ सामि एव विडंबणा होइ जाण कज्जम्मि । मह  
होउ तेहि विसएहिं वयमहं सपइ गहिस्स ॥ ९७ ॥ जपइ सेट्ठी तुञ्जवह देव एसेव जं सुओ मज्झ । करहपडियं व  
भइयम्मि विणा कुडइ हिय मे ॥ ९८ ॥ पुत्तेणुत्त जइ अल्ल पट्टु तए ह विणासिओ हुन्तो । हुंता केत्तियमेत्ता ता पुत्ता  
मज्झ जणयस्स ॥ ९९ ॥ जणया जणणीउ पियाउ पुत्तया वधुणो य ससारे । सुक्का भूरिभवेसु ता मोहो कहह को तेसु  
॥ १०० ॥ “परमत्थेण न कयावि वल्लहो अत्थि कोइ कस्सावि । सोयइ सबोवि जणो नियकज्ज चैव सीयत्त” ॥ १ ॥  
ता अहमवि नियकज्जप्पसाहणे उल्लओ इयाणिंपि । ता मा भवह भवतो सब्बे धम्मतरायपरा ॥ २ ॥ गहिज्जण वय  
अल्ल मुल्लिस्स अन्नहा महाणसण । तो नायनिवधेण निवेण मोयाविओ सेट्ठी ॥ ३ ॥ जणणीवि तत्थ पत्ता पुत्तेण कमे  
नमित्तु विणयपर । पाएसु लग्गिज्जणं वलावि मोयाविया अप्प ॥ ४ ॥ सम्माणिउ विसज्जइ वत्थाईहिं सपिय सुय सेट्ठि ।  
राया पवचमइयपि भणिय नायुल्लया होल ॥ ५ ॥ कुमइपि भणइ वाहरिय मा पुणो इय करेज्ज अन्नायं । पुणरुत्त न  
खम्मिस्सं ति भणिय त पि हु विसजेइ ॥ ६ ॥ ण्हाणाइसब्बसिंगासुंदरो सिवियमारुहिय पत्तो । इह एसो सेट्ठिसुओ  
पवइओ तुञ्ज पचक्ख ॥ ७ ॥ खयरहिंराय वेरगाकारण पुच्छिय जमेयस्स । त कहिय “ता मोउ कुसगमायरह गुणि-  
सग ॥ ८ ॥ पाय विणस्सइच्चिय पत्तकुसगो जणो सुवित्तोवि । उयरगओ असुइत्ते जुज्जइ परमोवि आहारो ॥ ९ ॥  
सगुणमि गुणाहाणं पावइ पत्तो जणो अजन्तोवि । रमणिनयणे कल्लसपि कज्जलं सोहसुवहइ ॥ १०१० ॥ कायधो

गुणिसंगो तन्हा पुरिसेण उच्चिय कुसंगं । पत्ते सिणिद्धुद्धे मुद्धोवि किमंबिलं पियइ” ॥ ११ ॥ खेरवई पर्यंपइ पहु सिद्धिवहूवरो इमो होही । जो एक्कम्मिंवि एवं पडिबुद्धो आवयाए भवे ॥ १२ ॥ पहु अम्हेवि हु पुत्रेक्कमंदिंरं जेहिं थावरे तित्थे । चलिएहिं जंगमं तित्थमुत्तमं तमिह संपत्तो ॥ १३ ॥ एत्थंतरे करेणुक्कखंधगओ छत्तअन्तरियतरणी । राया चउरंगवलो पत्तो केवलिकमे नमहं ॥ १४ ॥ वंदिय सेसे मुणिणो सलाहिउं पणंसिउं च नवसाहुं । उवविट्ठो तो वंदइ तस्संतेउरमवि समगं ॥ १५ ॥ तम्मज्जे निंवकन्ना नियरूवजियामरी कणयवन्ना । पत्ता मत्तामरहत्थिसंथ- रक्कमकयागमणा ॥ १६ ॥ लीलाचलच्छविच्छोहखोहियासेसतरुणनरनियरा । दीवपहानामेणं सारसुहासारसियहासा ॥ १७ ॥ दट्टुण केवलं सा हच्छं मुच्छं गया मयंकमुही । सीओवयारसंपत्तचेयणा पुच्छिया पिउणा ॥ १८ ॥ किं वच्छे मुच्छागमणकारणं तुह पर्यंपए सावि । पुच्छसु गुरुणो इय भणिय केवलं नमिय उवविट्ठा ॥ १९ ॥ कयकर- कोसो नमिऊण केवलं पुच्छए निवो भयवं । किमु मुच्छिया मह सुया भणइ पहु निसुणसु नरिंद ॥ १०२० ॥ सरसाहिट्ठियपहियं सरसाहियसत्तुसुहडसंदोहं । सरसाहिलसियवासं पुरमत्थि विसालसालंति ॥ २१ ॥ रविउदया- रद्धदिणंतमुक्कधणिभवणकयकुक्कमेण । पत्तारसआहारो अकिंचणो तत्थ अत्थि नरो ॥ २२ ॥ निम्मंसमुही नित्तेय- कालदुद्धलकरालकाया से । मुत्तिमइचांमुडव्व भारिया आसि विगयासा ॥ २३ ॥ खंडणंधणपीसणजलवहणगिह- प्पमज्जणाईहिं । परधरपत्तञ्जभोयणकयट्ठिई गमइ दियहे सा ॥ २४ ॥ सिसिरे सहति सीयाइं गेम्हसमयंमि तिच्चर- वित्तावं । मलकलयकुचेलाइं दोन्निवि मुणिमंडलाइं व ॥ २५ ॥ जुन्नकुडीरयछायणकज्जे कइयावि दोवि दब्भत्थं । भम्मिराइं गुरुअरत्ते नियंति आयावयंतं मं ॥ २६ ॥ भणिया अकिंचणेणं भज्जा नमिमो इमस्स पयपउमं । जेणज्जेमो अम्हे अब्भुत्तम-पुन्नपब्भारं ॥ २७ ॥ तो दोन्नि वि भत्तिवसप्पसरियरोमंचअंचियंगानि । भूमियलमिलियमालंयलमणहरं

मङ्ग पणमन्ति ॥ २८ ॥ दृढु विसुद्धभावं तेसि मए तयणु उवविसेऊण । उवविट्ठाण दिन्नो दोण्हवि सद्धम्मउवएसो  
॥ २९ ॥ आनए भो तुब्भे पच्चिदियजाइपुहसामग्गि । पावेउ नायघाइ देवगुरुधम्मत्ताइ ॥ १०३० ॥ रागहो-  
नाईहि दोत्तेहि अट्टसिय गुणह देव । निग्गथ गीयत्थ तत्तरय जाणह गुरुपि ॥ ३१ ॥ जइगिहिभेएहि दुहा बुज्झह  
धम्म जिणेहि पन्नत । पढम दसप्पयार वारसभेय पुणो वीय ॥ ३२ ॥ जीवाजीवा पुन्न पावासवसवरो य निज्जरणा ।  
धधो भोक्करो य इम आयन्नह तत्तनवंगंपि ॥ ३३ ॥ देवगुरुधम्मत्तत्थसइहाणेण होइ सम्मत । मूल सधुत्तममो-  
क्ककप्पइएत्तस इममेव ॥ ३४ ॥ फलसलिलधूवदीवयअक्खवनेवज्जागधकुसुमेहिं । पूयइ सम्मदिट्ठी इय जिणमट्ठहिंवि  
पूयाहिं ॥ ३५ ॥ सघाउ वि अतरन्तो पईवपूय करेइ जइ भवो । ता सा एकावि हरेइ तस्स पावाइ भणियं च ॥ ३६ ॥  
“जो देइ दीवय जिणवरत्तस पुरओ पराए भत्तीए । तेणेव तस्स डब्बइ पावपयगो न सदेहो” ॥ ३७ ॥ मणुयत्त सपत्त मा  
नेह मुहा हरेह सट्ठम्मं । तुम्हाण हिय कहिय जुत्तमिम विय गुरुणहवा ॥ ३८ ॥ जंपति दोवि नियजोगयाणुमाणेण  
तुम्हमाएस । काहामो भयव ज सुकएण्णेहिं त पत्तो ॥ ३९ ॥ इय जंपिय भत्तीए म नमिउं दब्भभाए गहिउ ।  
दोत्रिवि गयाइ गेहे भद्दगभावेण वट्टत्ति ॥ १०४० ॥ नयरप्पहाणजिणदत्तसेट्ठिणो मंदिरम्मि कम्माइ । कुब्बंताणं  
ताण दोण्हवि दीवूसवो पत्तो ॥ ४१ ॥ दाऊण सेट्ठिणा सालिपूयघयपमुहमेवमुत्ताइ । सगिहे सुजह जह जाइ तुम्ह  
वरिसोनि सोक्खेण ॥ ४२ ॥ ते थिति अम्ह दससु जिणेसर सेट्ठि जेण तस्स पुरो । काऊण घएण दीवयं वय सुकय-  
मज्जेमो ॥ ४३ ॥ दट्ठूण धम्मवुद्धिं जातो तेसिं कयायरो सेट्ठी । “गरुयाइ परमिवि पक्खवाइणो किन्न धम्मपरे”  
॥ ४४ ॥ इण्हिपि चल्ह इय भणिय तेहि सह जिणहरम्मि सचलितो । “अवरपि पत्थिय कुणइ सज्जणो कि न पुण  
धम्मं” ॥ ४५ ॥ तिन्निवि पत्ताइं नियति रुदजिणमंदिर गयणलगं । भूयतरुपत्तपत्तित्तियतोरणसियदुवारग ॥ ४६ ॥

अनिलचलिरद्धयावलिक्किणिगणघणञ्जणारावो । धग्घरयखलहलस्सरमिस्तो सुहरइ नहं जत्थ ॥ ४७ ॥ मणि-  
जणियदेवउलियामंडलविष्फुरियकिरणनिडरुंबो । रोहिणगिरिब रेहइ जणपुन्नागरिसिओब जहिं ॥ ४८ ॥ केवलनाणा-  
लोओब जत्थ लंबंतमोत्तिओज्जोओ । फलिहमऊहसमूहो भवविवेओ विव विहाई ॥ ४९ ॥ डञ्जिरकपूरागरपरिमल-  
मांसलियसुमणसामोओ । वित्थरइ जत्थ दूरं धम्मियजणपुन्नपसरोब ॥ १०५० ॥ सेट्ठी तेहिं समेओ पविसंतो तम्मि  
नियइ अजियजिणं । जय जय जयत्ति भणइ य सीमंतयसंगिकरकोसो ॥ ५१ ॥ उवसंतकंतरूवं तेसिं तं दंसए  
अजियदेवं । वहिरंगअंतरंगारिवग्गनिग्गहणपत्तजसं ॥ ५२ ॥ एसो समग्गसग्गापवग्गसुहसंगद्रायगो दूरं । ता एयं  
पूएडं अप्पहियं कुणह इय भणइ ॥ ५३ ॥ तं सोडं ताइं मणफुरंतगुरुभत्तिभरधरंगं । पसरियपरिओसवसुहसंतरो-  
मंचनिचियाइं ॥ ५४ ॥ उल्लसियअमंदाणंदंजायथोरंसुपूरियच्छीणि । परिकलयंताइं सजम्मजीवियद्याण सहलत्तं ॥ ५५ ॥  
सुरहिघएणं काऊण दीवए ताइं दोन्नि वि सुयंति । जिणपुरओ पणमन्ति य पहुं महीमिलियभालाइं ॥ ५६ ॥ कुलयं ॥  
तयणन्तरं पयाहिणपुरस्सरं नमिय रइयकरकोसो । सेट्ठि अजियजिणिंदं भत्तिभरो थ्रोउमारदो ॥ ५७ ॥ ‘जस्सानमंति  
सिरिसोणमणिपहापयडभत्तिरायव । अमरेसरा शुणिस्सामि तं पहुं अजियनाहमहं ॥ ५८ ॥ मणवयणनयणहत्था ते  
घत्राणं सुहा अजिय तुब्भ । सुमरणथवणालोयणपूयणकज्जेसु जे सज्जा ॥ ५९ ॥ वइसाहसेयतेरसितिहीण तं चत्तविजय-  
वासोवि । पहु विजयोयरवासं अलंकरंतो कुणसि चोजं ॥ १०६० ॥ जायं तिजगुज्जोयं तं माहसियट्ठमीनिसीहन्मि ।  
दइहुण ससंको लज्जिओब तबेलमत्थमिओ ॥ ६१ ॥ चइय तए चलच्छि वयं कयं माहसेयनवमीए । इयरोवि  
अत्थिराए न रज्जए किं पुण तिनानी ॥ ६२ ॥ पोसे सियाएक्कारसीए जेडं चलहुपहचंदं(?) । लोयालोयपयासं संजाव-  
मणंतनानं ते ॥ ६३ ॥ चेत्तसियपंचमीए तं सिद्धिवहए संगमल्लीणो । इयरपि मोहिउमलं रमणी किं केवलधिरायं

॥ ६४ ॥ इय जायपचकह्लाणमवि पढु शुणिय चत्तकह्लाण । मन्नेसिचदपहुनय भवसायरत्तिन्नमत्ताण ॥ ६५ ॥ सेट्टिस्त  
पत्तयाओ लिणिदभत्तीए तेसु सजाओ । “अहवायरो गुरूणं सगुणे विगुणे पुण उवेहा” ॥ ६६ ॥ पुणरुत्तं पणयजिणो  
अकिंचणो सेट्टिणा समज्जोवि । नेउ नियमवणे विन्नवदुघओ पेसिओ सगिहे ॥ ६७ ॥ तस्मिन्नि भवस्मि जिणभत्ति-  
भावजोडकिंचणो धणी जाओ । “अहव न त कह्लाण जिणपूयाए न ज होई” ॥ ६८ ॥ कइयावि आउअते मच्चिम्मपरि-  
णामओ मरिय जावो । भुवणप्पईवनामो पुत्तो निवकुलपईवस्त ॥ ६९ ॥ तेणवय भावेण तब्भज्जा मरिउमेत्थ उप्पन्ना ।  
एसेवय तुह तणया जिणदीवयपूयपुत्तेण ॥ १०७० ॥ इह पत्ता मं पेच्छिय जाईसरेणेण मुच्छियया एसा । निव पुच्छियं  
तए ज त मुच्छाकारण कहिय ॥ ७१ ॥ नसिय गुरु भणइ सुया रिद्धी पढु तुह पसायओ एसा । मह सपियस्तवि  
जाया “किंवा न हवइ गुरुपसाया” ॥ ७२ ॥ सोऊण कुमरिचरिय जिणपूयाकयमई जणो सबो । रायाइओ गुरूण नसिय  
नियट्टाणमणुपत्तो ॥ ७३ ॥ नयकेवलिकमो नहयेसरो मणिविमाणविंदेण । नदीसरसि पत्तो वलियोयडभिवदिय  
जिणदे ॥ ७४ ॥ नवर रायसुयाइसणाइअणुरायभरपरायत्तो । निवपासे सपत्तो पणयपरो पत्थए कंनं ॥ ७५ ॥ रायाह  
नहयेसर जुत्तमिण किंतु पुच्छिमो कन्न । “जावज्जीवियकळे काउ जुत्तो न उवरोहो” ॥ ७६ ॥ तो वाहरिया पत्ता निव-  
तिय रइयरम्मसिंगारा । वाला लीलससरल्लोयणुह्लासलसिसरुही ॥ ७७ ॥ काउं पसायमाइसह ताय इय भणइ  
पिउकमे नमिउ । तो से सायरल्लयरिदपत्थण साहए राया ॥ ७८ ॥ सा आह ताय लगगइ अगे सोहगगसगओ सो मे ।  
पुषभबुब्भवभत्ता अगी वा इह भवे नन्नो ॥ ७९ ॥ नायसुयाअणुवंधो सम्माणिय नहयर विसजेइ । सोवि गतो  
वेयहु “निक्कज्ज किं विएसेण” ॥ १०८० ॥ चितइ नहयरनाहो हिययगया दूमए मयच्छी मा । विरहजरजलणजालजलि-  
रा न(त)ठमल्लिष ॥ ८१ ॥ सा म न मन्नइधिय ठाउमसत्तो न तं विणाहमवि । ता हरणमेव जुत्तं महनिवत्तणयाए

इण्डिहि ॥ ८२ ॥ अहवा किं हरेणं सह कुमरे तंमि मह न सा होही । ता तं पछंतं चिय हणेमि इय चित्तिडं ज्जत्ति ॥ ८३ ॥ एगोच्चिय निसि निगंतुमुवगओ कुमरवासभवणंते । सारणमईए अहवा “इत्थीलुद्धाण किमकज्जं” ॥ ८४ ॥ तिसिंहुवालसमुयएकतणुलथारद्धपेच्छणयच्छउमा । तमिहाणीओ तेणं मंतेणुघाडिय पओल्लिं ॥ ८५ ॥ तो सहसा संजातो सुहडो आयड्डियासिदुद्धरिसो । साहिकखेवं रइयस्मि रणभरे सो जित्तो तुमए ॥ ८६ ॥ “जे सत्थप्पडिकूला जे वा वीसत्थघाइणो कुडिला । नियमेण पडंतिच्चिय ते पुरिसा पावपहरहया” ॥ ८७ ॥ ता कुमर सो अहं नियदयाए हणारिहोवि जो तुमए । मुक्कोत्ति मए कहिओ तुह पुरओ निययवुत्तंतो ॥ ८८ ॥ इय जह खयरओ सुयं तह कुमरेणावि जाइसरणेण । सबंचिय सच्चवियं सिविणयदिट्ठंब तबेलं ॥ ८९ ॥ भणियं च खयर तुमए जह कहिओ तह मएवि पुवभवो । दिट्ठो जाइस्सरणेण तयणु तं खेयरो भणइ ॥ ९० ॥ ता चलसु तुमं मुत्तूण मंदिरेहमवि जामि सट्ठणे । इय जंपिय तमणुट्टिय नहररनाहो गओ सपुरे ॥ ९१ ॥ परिभावियपुवभवप्पियाणुरायप्पइन्नकरणस्स । उम्मीलीओ महंतो अणुराओ रायतणयस्स ॥ ९२ ॥ चिंतइ तेच्चिय धन्ना जेसिं नियवल्लेहिं जुत्ताण । विविहविलासेहिं मुहुत्तमेत्तमिव जंति दिवसाइं ॥ ९३ ॥ जह जाइ वल्लहजेण मणो तहा जइ तणूवि वच्चन्ती । ता नूण न हुंतं चिय कस्सइ तद्विरहविहुरन्तं ॥ ९४ ॥ नूणं जागरणाओ विरहीण वरं समेइ जइ निदा । जा दूइयव वल्लहसंजोगं कुणइ सहसत्ति ॥ ९५ ॥ कामुकलियाउ मणे नयणेषु अलद्धलक्खया जाया । दाहो देहे वल्लहअलाहओ तस्स चिन्ताए ॥ ९६ ॥ वल्लहविरहविणोयप्पारद्धयाइकीलकिरियस्स । गच्छन्ति वासरा विरहियस्स कुमरस्स किच्छेण ॥ ९७ ॥ एत्थंतरंमि पत्तो कुमरिपिच्चेसिओ महामंती । अत्थाणत्थं निवइं नमिडं विन्नवइ विणएण ॥ ९८ ॥ पट्टु मणिमंदिरनयरे पथावसारोत्ति नरवइं अत्थि । दीवपहामलेइहा दीवपहाभिहसुया तस्स ॥ ९९ ॥ पत्ता केवल्लिपासं जाईसरणेण

मुच्छिन्ना बाला । निवपुच्छिण कर्हिओ केवलिणा तीए पुधभवो ॥ ११०० ॥ इय भणिय तेण सव्व सवित्थरं साहियं  
 नरिदस्स । ता जा पुधभवुन्भवपिए कुमारेणुरत्ता सा ॥ १ ॥ भणिय च खयरवइणा विवाहिउ पत्थियावि न तीए ।  
 पडियन तवयण कुमर पइ जायरायाए ॥ २ ॥ तुह तणयअलाहविओयदाहदब्बत्तगणवणा बाला । लहइ न सुहलवमवि  
 जलिरजलणजालोलिकलियव्व ॥ ३ ॥ धाईए इव अरईए असुहत्थीए वयसियाएव्व । दासीहिं, व सगहिया कासुकलि-  
 याहिं सा दूर ॥ ४ ॥ ता पडु पेससु कुमर परिणयणकए कुरगनयणीए । जह होइ जीवियं से “गुरुण दुहिए न  
 जमुवेहा” ॥ ५ ॥ रायाह सा सइच्चिय जा पुधभवप्पियम्मि अपुरत्ता । सिविजेवि ज सईण रमइ मणो नन्नरमणम्मि  
 ॥ ६ ॥ इय भणिय समाइहो कुमरो वीवाहिउ नरिदसुय । वच्छगच्छसु तो सो नसिय निवाणं सिरे धरइ ॥ ७ ॥  
 सम्माणिरूण मंतिं सवाहिय नियसुओ समतेण । चउरगचमूचको पडुविओ विट्ठहियएण ॥ ८ ॥ अणवरयकयपयाणो सो  
 मणिमंदिपुरमि सपत्तो । “ठाण चलियो मंदोवि पावए कि न सिग्घगई” ॥ ९ ॥ पट्टओय(पत्तोय)वत्थकयहट्टसोहगुरुमंचतो-  
 रणधयम्मि । रायगरुहो रत्ता रिद्धीए पवेसिओ नयरे ॥ १११० ॥ आवासिओ समप्पियपासाए कणयकलसकमणीए ।  
 नरवइकाराधियभोयणाइगुरुगोरवमहग्घो ॥ ११ ॥ लग्गहिणे हयगयठियसामतावेढिओ गयारुढो । छत्तद्धयचामरचय-  
 रायालकारकमणीओ ॥ १२ ॥ वज्जिरजयआउज्जो पत्तो वीवाहमदिरुदुवारे । रइयायारो पचिसिय उवविट्ठो कनयापासे  
 ॥ १३ ॥ इट्ट से तीए कर करेण गहिउ पयाहिणियजलणो । उवविसिय रायकुमरोहिं तयणु सम्माणिओ लोओ ॥ १४ ॥  
 तो नियकलत्तकलिओ चलिओ चड्डिउ करेणुरायम्मि । रिद्धीए नियवासे पत्तो कीलइ सह पियाए ॥ १५ ॥ ससुरय-  
 सम्माणुम्भीलमाणतोसो दिणण दसग सो । तत्थच्छिय नमिय निव सकलत्तो नियपुरे पत्तो ॥ १६ ॥ रत्ता रिद्धीए  
 पुरे सहट्टसोहे पवेसितो कुमरो । नवपरिणीय पुत्त मोत्तु को गोरवट्ठाण ॥ १७ ॥ पणओ पिउणो पयसयदलम्मि





समुत्तमेकराय समस्थि बहुलसिरारयरणपि । भुवणतिलयाभिहपुर कुलगसमनयणरसणियणं ॥ ३६ ॥ जम्भि  
मणिभवणपरपरपहापह्यरयणितिमिरम्भि । वासहरड्डिरागरुधूमो उपायइ निस व ॥ ३७ ॥ परमहिओ सुहयगतो  
सचदहासो दुहावि सवत्थ । भुवणाणंदो नामेण नरवई अत्थि तत्थ थिरो ॥ ३८ ॥ तस्सत्थि सबसुद्धंतसारपयसट्टिया  
सलीलगई । कमलमुही भुवणसिरिस्ति रायहसिध पियभज्जा ॥ ३९ ॥ तीए मण आणइइ पुत्तो भुवणप्पमोयओ दूर ।  
भुवणप्पमोयओ नाम कामसमरुवरम्मत्तणू ॥ ११४० ॥ सद्धम्मसरुठेइयकुक्कम्मपरत्तकेवलसिसीओ । अणुसरि-  
असासयसुहो जइध जो सहइ समरसिओ ॥ ४१ ॥ कइया वि सो करेणुक्खवधगतो छत्तअतरिअतरणी । तरुणीकरस-  
चालिअसिअचामरविअज्जमाणत्तणु ॥ ४२ ॥ नाणाजाणट्टियामत्तमडलामडलीयकयवेढो । चलिओ कुमरो आरामसुत्तम  
पेच्छिउ सवलो ॥ ४३ ॥ भूरिक्खिजलकलिअ दुहावि ज ठि(वि)उसपामरकुलध । सहइ सुवन्नासणसगय सया राय-  
भवणं च ॥ ४४ ॥ पत्तो य तम्भि पविसइ तालीहिं तालसालतलकलिउ । कुवलीकयलीलवलीलवगानारागगम्भि  
॥ ४५ ॥ अवरारवरमणीयारामपरपररिब्भमणखिन्ने । सुत्तु गयमहीणो अवयवणदक्खमडवए ॥ ४६ ॥ अवयसा-  
हागयवज्जकिरणभरकिन्नकणयदडमि । दोलापह्णेके तूलियाए आरुहिय उवविट्ठो ॥ ४७ ॥ पारफ्फणुद्धरकुत्तकरनरा  
कुमारपिट्ठिमणुसरिया । पुरओ उवविट्ठा मडलीयसामतमत्तिसुया ॥ ४८ ॥ पडुपडहमजुमहलआलवणीवेषुसइसमिस्स ।  
पारद्ध गाएउ चरिय कुमरस्स रमणीहि ॥ ४९ ॥ कुमरो वि मणोगयरायवासाणावसअलद्धलक्खत्थो । ईसिप्पकं-  
पिरसिरो वीण वायइ नियकेरेहि ॥ ११५० ॥ एत्थतरंमि गयणाओ मणिमयाभरणभूसियसरीरो । अवयरिउं  
सपत्तो कुमरपुरो किंनरीनियरो ॥ ५१ ॥ तम्मज्झाओ उत्तमरूवाए किंनरीए एक्काए । नमिय सविणयं पेच्छण-  
यपेच्छमन्मत्थिओ कुमरो ॥ ५२ ॥ सपत्ताएसाए महापसाओत्ति जपिउ तीए । पारद्धं पेच्छणयं कुमरपुरो परियण-

जुयाए ॥ ५३ ॥ बल्लंतवेणुवीणासराणुविद्धेण दिवराएण । हुंफियकंपियकुरलियमुदियकागलियरुवेण ॥ ५४ ॥ गुंजं-  
तमद्वद्धामपड्डुडुक्काणुसरियतालवं । गाएउं पारद्धं कुमारचरियं भिउसरेण ॥ ५५ ॥ तवेउमुवकंतं तम्मज्झा किंनरीए  
पवराए । मणिमथरसणारण्णिरकणयकिंकिणिकलावाए ॥ ५६ ॥ पसरावसरणभमिभमुहसंगकरणक्कंसंगहारेहिं । नचइ  
सा करविन्नासवसपसंपंतनयेहिं ॥ ५७ ॥ निब्भच्छियमिउकलकंठकूहयं रायमालवेऊण । नचंती सा गायइ तुमरगुणे  
चंदकरधवले ॥ ५८ ॥ तन्नट्टगीयदिन्नावहाणिया कुमरपमुहसबसहा । जाया तदेक्कदिट्ठी अचलंगी चित्तलिहियच्च ॥ ५९ ॥  
पसरंतीए पसरंति उच्छलंतीए उच्छलंति समं । तीए जणनयणाइं सययं सेवयकुलाइं व ॥ ११६० ॥ अचहियहियओ  
जाओ रायसुओ तीए गीयन्देहिं । दाउमणो नियहारं तमच्छिसत्राए वाहरइ ॥ ६१ ॥ तो सा चलिया रण्णणिर-  
किंकिणी किंवि कंपमाणथणी । नवनेहरसभरालसनयणेहिं पलोइरी कुमरं ॥ ६२ ॥ सो वि हु नियहत्थेहिं थणत्थले  
जाव ठावए हारं । तां तीए झत्ति आलिंगिऊण नीओ नहयलेण ॥ ६३ ॥ सहसत्रिय सेसोवि हु तिरोहितो किंनरीजणो  
सयलो । कुमरंगरक्खसंभभवभुब्भंतनयणोव ॥ ६४ ॥ जावारोवियधणुहा धणुद्धरा तमणुपक्खिवंति सरं । जातुच्छलंति  
तं पइ फारक्का खगवगकरा ॥ ६५ ॥ तीए ता रायसुओ नरनयणअगोथरे नहे नीओ । जाओ य गयच्छाओ परिवारो  
कुमरहरणम्मि ॥ ६६ ॥ गुंतुं सहाए कहियं रओ मित्तेहिं कुमरअवहरणं । तं सोउं सो जातो मुच्छाए अचेयणो सपिओ  
॥ ६७ ॥ सिंसिरकिरियासमुवलद्धचेयणो रुयइ टुहभरकंतो । पागयनरोव सह पिययमाए सुयचिरहविटुराए ॥ ६८ ॥  
हा सूरकुमर हा धवलचमरवीइयसरीर हा धीर । तुड्ढावत्थं मुत्तूण मं गओ कत्थ तं कहसु ॥ ६९ ॥ हा कुंददसण मा  
वियगवसण हा ईसिहसणपरिलसण । हा कोमलकेस हहा सुवेस हा रंजिगसदेस ॥ ११७० ॥ हा जणयभत्त हा  
सारसत्त हा नायदेवगुरुत्त । हा पुरिसरयण हा गरिमगयण हा अमियसमवयण ॥ ७१ ॥ को जाय तुमं मुत्तं पहाय-

समएवि मे कस्मे नमिही । को वा रयणाभरणे दाही वंदीण परितुट्टो ॥ ७२ ॥ सिंगारसुदरगो अण्फालितो करेण को कुम्भ । आणदिस्सइ पउरे करेणुलीलारस पत्तो ॥ ७३ ॥ मडलियमंतिसामतमित्तदासगरक्खपडिहार । कुमरावहार-  
गुरुसोयसहिया तत्थ कंदंति ॥ ७४ ॥ एत्थत्तरमि अत्थाणकणयथाउ रयणपुत्तलिया । उत्तरिया मणिमंजीरमजुझकार-  
रमणीया ॥ ७५ ॥ लीलाए चकमती पत्ता रायतिय भणइ एव । आयन्नसु निव सुयहरणकारणं चयसु सोयभर ॥ ७६ ॥  
दद्वूण सालिहजियपुत्तलिय विम्हिओ सपरिवारो । भणइ निवो भद्दासणमलकिउ कहसु मह देवि ॥ ७७ ॥ तो सालिह-  
जिया सा उवविट्ठा तम्मि आसणे अह्वा । “कीरइ अन्नस्स वि विणयपत्थिय किं न नरवइणो” ॥ ७८ ॥ अच्चतविम्हिह्य-  
मणो सपरियणो सो निसामिउ लग्गो । कलकठविलसिरसरा रनो सा साहिउ लग्गा ॥ ७९ ॥ बहुसामो वि सुवारो  
सुपत्तनयसुंदरोनि नयरहिओ । अचलो विसवयावि हु वेयड्डो अत्थि गिरियाया ॥ ११८० ॥ तत्थत्थिभूरिभूमिगम-  
यणेहिं एक्कभूमिगविमाण । सगंगपि निज्जित रहनेउरचक्कवालपुर ॥ ८१ ॥ नियतणुतेयविणिज्जियकणयपहो तत्थ अत्थि  
कणयपहो । खयरवई बहुविजावलदुल्लिओ ललियदेहो ॥ ८२ ॥ चाईकयकणयसिरि कणयसिरीनाम अत्थि से  
कता । देवगुरुण पणया पणयावज्जियसयलसयणा ॥ ८३ ॥ सोहग्गेण गोरिं रूवेण रइ सइं पहुत्तेण । अणुलुव्वती  
कत्ता समत्थि से भुवणलच्छत्ति ॥ ८४ ॥ उव्वणजोव्वणजुत्ता विलसिरलायनपुनगत्तावि । असईदासीसहियावि च्छेय-  
निस्सेससहियावि ॥ ८५ ॥ कयउब्भडग्गो विनट्टनिस्सेसरोगसोगावि । विंणाणगुणवियड्डुवि थीकलविसयपोढावि  
॥ ८६ ॥ जणयजणणीवयंसीदासीहिं सया भणिज्जिमाणावि । ण कुणइ मणयपि मणो पुरिस पइ वीयमोहव ॥ ८७ ॥  
कुल्लयं । सिंगारियपि पुरिस वड्डुणं कुट्टियंवि नियदिट्ठिं । मडलिज्जतिं वालइ उव्वेयवसेण सहसत्ति ॥ ८८ ॥ चित्तट्ठियं पि  
दट्टु रुट्ठव नर परमुही होई । सिविणयसच्चवियपि हु न नियइ पुरिस ससुरयव ॥ ८९ ॥ पावकह व निवारइ कहिज्ज-

माणिं पि पुरिसचरियकहं । कजेवि नरं नालवइ विहियगोवज्जमिव वाला ॥ ११९० ॥ एवंरूवं दुहियं दड्ढण विंचितए खयराराया । कस्सेसा दायवा मए नरवेसिणी कन्ना ॥ ११ ॥ दंसिजाए इमाए जो जो सो सो वरो न पडिहाइ । आहारोब अरोयगोरोकतस्स सबस्स ॥ १२ ॥ देववसा जइ जायइ सीलब्भंसो इमाए ता होइ । गोत्तम्मि गुरुकलंको पावमिमाए अकित्ती मे ॥ १३ ॥ इय चिन्तासंततो तुत्तो कन्ताए नरवई एवं । मा तम्मसु पिय पुच्छसु वरमइसय-  
नाणिणमिमीए ॥ १४ ॥ बहुमन्नियपियवयणो तणयं गहिं गओ विदेहं सो । माणिक्कपुरारामे दड्ढणं केवलं नमइ ॥ १५ ॥ उवविसिऊणं सोऊण देसणं पत्तअन्तरो नमिं । पुच्छइ किं मह दुहिया पहु पुरिसवेसिणी जाया ॥ १६ ॥ तो भणइ विमलनाणी आयन्नसु राय कारणमिमीए । जेणेसा संजाया विदेसपरा पुरिसविसए ॥ १७ ॥ सालीणजणा-  
वासे रइरूवकुलंगणे जणियसोहो । हसियसरोवसरोहे सालिपुराभिहपुरे रस्से ॥ १८ ॥ अत्थि नयज्जियवहुधणदाण-  
कयत्थी कयत्थिसंघाओ । सालिप्पियाभिहाणो धणिप्पहाणो धणी विणई ॥ १९ ॥ जुयलं ॥ अवरोवि सत्तिओ तत्थ अत्थि रणसूरनामओ चाई । नवरं तणुविहवो “नो पायं चाइस्मि वसइ सिरी” ॥ १२०० ॥ जओ-चाइयणकरपरं परंपरियत्तजायगरुयखेयव । अत्था किविणघरत्था सत्थावत्था सुयंतिव ॥ १ ॥ तरसोभयहावि पिया विणयवई नय-  
परा सुसीला य । ईसीसि साहिमाणा “अहव न दोसं विणा कोई” ॥ २ ॥ भत्ता पियमणुवत्तइ पियावि पइणोणुवत्तए चित्तं । वद्धइ दोण्हवि पणंओ “जइवा नेहो नयड्डाण” ॥ ३ ॥ सालिप्पियरस्स कजाइं साहए सो वि देइ इवणं से । “न निओ वि कुणइ कजं सुहियाए किं पुनन्नजणो” ॥ ४ ॥ जं किंपि लहइ कत्थइ समप्पए आणितं पियाए सो । “पाणावि जम्मि देया तत्थ अदेयं किमवि नत्थि” ॥ ५ ॥ सालिप्पिएण कइयावि पेसिओ सो वहुए आणयणे । चलिओ संदण-  
पुरनयरस्मग्गमणुसरिय संनद्धो ॥ ६ ॥ पत्तो अडईए बहुमयसत्ताए वि अमयसत्ताए । जीए सच्चित्तकाया अमाणसंगवि

तिरियोहा ॥ ७ ॥ तीए सो नियइ वडाइवियडविडवीहिसकडिह्लाए । खरतरणिनिहियनयणं आयावंतं मुणिं एण ॥ ८ ॥  
 दिट्ठो य तेण उप्पाडियासिरोदो भडो तमभिहणित्ठ । जंतो भिचीए इव खल्लिओ मुणिओगहमहीए ॥ ९ ॥ उग्गहमइक्क-  
 मेउ अतरतो चउदिसिं परिब्भमिरो । दितोघ भत्तिजुत्तो पयाहिणाओ सुसाहुस्स ॥ १२१० ॥ रे मुड तुंडभंग कांडं त  
 निच्छएण मारिस्स । इय जपिरो मुणिं पणमिउ च पडिओ अहोवयणो ॥ ११ ॥ पडियं झडत्ति खगं मुक्खं करेण  
 दूरतरयम्मि । मुणिमारणअञ्जवसायजायगुरुपावमीएण ॥ १२ ॥ पच्छाहुत्तं वलिय बाहुजुयं साहुवहनित्तिवं । गतु-  
 मणीहता इव पत्ता पाया सिरे तस्स ॥ १३ ॥ जातो गीवाभंगो रुहिर नीहरइ तस्स वयणातो । अहवा जं चित्तिजइ  
 परस्स तं अत्तणो एइ ॥ १४ ॥ उद्धट्ठियंमि खगो उच्छल्लिओ सो तयग्गमारुडो । परिभमइ गुरुरएण वंसारुडो नड-  
 नरोघ ॥ १५ ॥ एत्थतरे अणब्भा विज्जुव नहाओ इत्ति अवइंना । एक्का अमरी पिंजरियदिसिमुहा देहदितीए ॥ १६ ॥  
 कुडलकिरीडकेअरकडयहारोहसोहधरदेहा । तिपयाहिणित्त नमित्त च सा ठिया साहुणो पुरओ ॥ १७ ॥ दट्ठेण तमच्छरिय  
 रणसूरो मुणिसमीवमहीणो । पणमिय कयजलित्तडो उवविट्ठो समुचियट्ठणे ॥ १८ ॥ एत्थतरे निसनो उस्सग पारिज्ज  
 साहूवि । भणिय च देवयाए पुणरुत्त पणमिज्जणमिम ॥ १९ ॥ पट्टु अहमिमाए अडईए सामिणी इह समागयेण तए ।  
 नूण कया पवित्ता असमप्पसमोक्करसिएण ॥ १२२० ॥ एसो हु पघणीओ पावप्पा कोइ तुग्घ हणणत्थं । इतो एवं-  
 विट्ठिओ माए अदिस्साए खल्लिज्जण ॥ २१ ॥ भणइ मुणी कयकरुणा देवि इमं मुयसु जाव नो मरई । उवसग्गगहण-  
 कब्बे आगच्छामो वय जमिह ॥ २२ ॥ साहूणमलकारो खत्तिच्चिय देवि नो पुणो कोवो । उवसग्गपरे नूण तीए विसओ  
 जओ भणियं ॥ २३ ॥ ज खमसि दोसवते सो तुह खतीए होइ अवयासो । अह न खमसि को तुह अविसयाए खतीए  
 वावारो ॥ २४ ॥ मुत्तु मुणिमज्जायं कोव थोवंपि जइ जई कुणइ । ता सुयतवाइ सबं निरत्थयं तस्स जेणुत्त ॥ २५ ॥

पठउ सुयं धरउ वयं कुणउ तवं चरउ बंभचेराइ । तहवि तयं सबंषिहु निरत्थयं कोववसयस्स ॥ २६ ॥ अम्हाण देवि  
 एयं वयसवस्सं रिउंमि कुविएवि । अक्कोसाइ कुणंते लोहोत्ति विभावणं जेण ॥ २७ ॥ अक्कोसहणमारणधम्मन्भंसाण-  
 वालसुलभाण । लभं मन्नइ धीरो जहोत्तराणं अभावम्मि ॥ २८ ॥ अम्हाण मोक्खपुरपत्थियाणमेएण काउमारद्धं ।  
 साहेज्जमओ एसो उवयारी मुंच ता एयं ॥ २९ ॥ सोऊण साहुदेसणमसमप्पसमामयपवहसरिसं । रंजियहियया देवी  
 पयंपिउं एवमारद्धा ॥ १२३० ॥ धन्नोसि तुमं मुणिरयण तिवतवतेयलद्धिजुत्तोवि । काउं खमसिमवयारयंपि भित्तं व  
 मोइंतो ॥ ३१ ॥ एवं पसंसिय मुणिं अदिट्ठवंधाउ तं भउं मुउं । धम्ममइ संजाया देवी सहसत्ति मुणिवयणा ॥ ३२ ॥  
 सोवि भडो पयलमो अवराहं खामए नियं मुणिणो । “दूरंपि पाणदाया पुज्जो अवरोवि उवयारी” ॥३३॥ भणइ य तइ  
 सोमेवि हु सच्चविए कलुसियं मणो मज्झ । अमरकरे वि हु विट्ठे कमलं संकुयइ जमजोगं ॥ ३४ ॥ मारणपरे रिउ-  
 म्मि वि तुह पहु हियए पवट्ठिओ पसमो । दाहकरेवि निदाहे सीयं चिय होइ हिमसेले ॥ ३५ ॥ ता मज्झ देहि दिक्खं  
 पावाओ इमाओ नन्नहा मोक्खो । “धेरगो जं न कयं नूणं तं दुकरं पच्छा” ॥३६॥ तो से दिन्ना दिक्खा मुणिणा देवीए  
 अण्णिओ वेसो । धम्मुज्जयन्मि जइवा मूलं मोक्खस्स साहेजं ॥ ३७ ॥ नवदिक्खियं पसंसिय सट्ठाणे देवया गया  
 झत्ति । दट्ठूण तमच्छरियं भणइ मुणिं नमिय रणसूरो ॥ ३८ ॥ दुकरदिक्खाए ते मज्झमसत्तस्स कहसु गिहियम्मं ।  
 “दिज्जइ न जओ दुद्धं रोइंमि रसाहिए अहवा” ॥ ३९ ॥ भणइ सुणी गयरायं देवं आयरसु उच्चिय सरायं । मुत्तूण  
 कामधेणुं किं गिण्हइ गदहिं कोवि ॥ १२४० ॥ नाणालोए गुरुणो गिण्हसु रविणोव जयपवित्तकरे । परिहरिऊण कुगुरुणो  
 वहलनिसीहेव तमवहुले ॥ ४१ ॥ अंगीकरेसु धम्मं सोक्खकरं दुहरं चइय पात्रं । मुत्तुमजरमरममयं को ममुकरं गरं  
 गिलइ ॥ ४२ ॥ कण्णटुमं व वंछियफलयं आयरसु उत्तमं तत्तं । किंपागं पिव संमोहकारयं मा पुण अतत्तं ॥ ४३ ॥

घत्तारिवि एयाइ सुदेवगुरुधम्मत्तरूवाइ । नारयतिरियनरामरगईउ चउरो अवहरन्ति ॥ ४४ ॥ एय पवयणसार काउ-  
मसत्तो समग्गमवि भवो । एकचिय जिणपूय कुंणंति भवा जिणंदाण ॥ ४५ ॥ सवाओ वि य सत्तो काउं नेवज्जपूयमे-  
फपि । कुव्वतो दुक्कम्म पाणी पडिहणइ सव्वपि ॥ ४६ ॥ भुज्जइ जंवा तवा रविउदयत्थमणमज्झयारम्मि । दिज्जइ जिणस्स  
ता भो कयाइ योवपि पुन्नकए ॥ ४७ ॥ पाविज्जइ परलोए अणतमपपि इहभवे दिन्न । धन्न ववियं थोवपि फलइ त नूण  
वहुगुणियं ॥ ४८ ॥ नियविहवसमुचिएहिं महराहारेहिं मोयगाईहिं । जिणमच्चन्ता सासयतित्तिं पावन्ति भणिय च ॥ ४९ ॥  
“एणत्तिण्ण लब्भइ नेवजेण जमक्कयया तित्ती । त सासयसिवसुहत्तिं तिथ्यनाहस्स माहप्प” ॥ १२५० ॥ ता जइ  
सासयसिवसुहत्तिं वल्लसि अहो महासत्त । ता कुणसु देवपूय दाउ भत्तीए नेवज्ज ॥ ५१ ॥ सो आह अज्ज पत्ता चिंता-  
मणिकामधेणुकप्पटुमा । रन्मिन्नि ज जाय मह पट्टु तुहदसणममोहं ॥ ५२ ॥ ता इहपरलोयहियं कहियं तुब्भेहिं ज तय  
काह । को नाम सिरिसुधिंति पहणइ पायप्पहारेण ॥ ५३ ॥ इय जणिय नमिय सुणिं चलिओ सदणपुरम्मि सपत्तो । मोया-  
विय सालिप्पियवहुय गहिउ तय वलिओ ॥ ५४ ॥ गुरुवेयवाहणेहिं थेवदिणेहिं पि नियपुरे पत्तो । पणमिच्चु मोयगा  
सासुयाए बहुयाए उवणीया ॥ ५५ ॥ तीए वि सयणभवणेसु पेसिया समुचियक्खेण ते । अहवा उचियायरण कुलगणाणं  
उल्लायारो ॥ ५६ ॥ बहुइक्खेलानालियरक्खडकफूरमिसिओ एगो । दिन्नो रणसूरस्सावि मोयगो माणयपमाणो ॥ ५७ ॥  
बधुरगध तं गिण्हिऊण लग्गो सगेहमग्गो सो । अतो रमंतसद्धम्मपरिणई चिंतए एव ॥ ५८ ॥ एणण भक्खिएणं जाव-  
जीव न होहिही तित्ती । जाव सुहे ता सुरसो एसो पोट्टंगतो असुई ॥ ५९ ॥ ता इमिणो सुरसेणं भक्खेण करेमि  
देवनेयज्ज । ज मह पच्छा दुल्लहो एवविह उत्तामाहारो ॥ ६० ॥ इय चित्तिऊण वलिउ चलिओ मग्गो जिणंदिभवणस्स ।  
“अहव पमातो काउ किं जुज्जइ धम्मकम्मम्मि” ॥ ६१ ॥ गच्छंतो सपत्तो जिणालयं नियइ सुरविमाणंव । अनिलचलद्धय-



रणशक्तिरिणियररमणीयं ॥ ६२ ॥ जस्मि जिणस्समुहानिचालियवलिनिहियसेयल्लुमुआइं । पूएउंव जिणिंदं जंताइं  
जवेण सोहंति ॥ ६३ ॥ पुण्णोवहारचुंबणपरइं बहुचंचरीयचक्काइं । जस्मि जिणवंदयतुट्टकम्मनियलाइंव सहन्तिं  
॥ ६४ ॥ तस्मि पविट्ठो पेच्छइ पसंतकंतं जिणेसरं रिसहं । जय जय जय तिजयपहुत्ति जंपिरो नमइ भत्तीए  
॥ ६५ ॥ चित्तभंतरअसमुल्लसंतबहुमाणजायरोमंचो । आणंदवसपवित्तं सुविसरजलधोगंडयलो ॥ ६६ ॥ तं पाव-  
मोयगं मोयगं सयं सुयइ सामिकरकमले । सहलत्तं कलयंतो सजम्मजीवियनरत्ताणं ॥ ६७ ॥ पुणरवि पणमिच्चु पहुं  
खोणीमंडलमिलन्तभालयलं । पत्तो निययावासे सो उक्कंठियपियापासे ॥ ६८ ॥ अन्नोलं मिलियाणं ताणुप्पन्नो महासु-  
हुक्करिसो । “अवरे वि निए मिलिए होइ सुहं किं न कंताए” ॥ ६९ ॥ कइया वि तस्स कंता वुत्ता सालिप्पियप्पिय-  
यमाए । किं रूवरसो सो तुह पियस्स जो मोयगो दिन्नो ॥ १२७० ॥ तं सोउं सा चिंतइ किं मह न पिएण दिन्न-  
मद्धंपि । “जइवा न वल्लहेवि हु लोहपराणं हवइ नेहो” ॥ ७१ ॥ नियघरजुत्ताजुत्ता वत्ता नन्नस्स साहिउं जुत्ता । इय  
चिंतिय तीउत्तं अच्चंतं तस्मि रसवत्ता ॥ ७२ ॥ धणरहियाणवि नेहे लोओ पेसइ जमुत्तमं वत्थुं । किं पुण ससुरकु-  
लस्मि वि सेसओ तस्मि वि धणहु ॥ ७३ ॥ इय जंपिय नियगेहे पत्ता पियविसयजायअवमाणा । विप्फुरियफारअरई  
उवविट्ठा दूरमुत्तिगा ॥ ७४ ॥ वामकरक्खित्तमुही सरलस्सासा अलद्धलव्वसत्थी । पियगयणप्पकुवियप्पकप्पणुप्पन्न-  
संतावा ॥ ७५ ॥ चिंतइ पिएणमविमइय मज्झ न कयाइ अत्तणा सुत्तं । अज्जं तु सुयसिंमं “नो दीसइ किं जीवमाणेहिं”  
॥ ७६ ॥ तं चिय निवससि महमाणसंमि न तरामि तं विणा ठाउं । इय मायावयणेहिं अहमप्पवसा कया तेण ॥ ७७ ॥  
धुत्तपउत्तीहिं नरा एवं रमणीओ वेलेवऊण । निम्महमालियाउव कयकजा ज्झत्ति उज्झंति ॥ ७८ ॥ मंदमईओ अविवेह-  
णीओ तुच्छओ अपटियसुयाओ । वरईओ विप्पयारिय विडा विडवंति विलयाओ ॥ ७९ ॥ जेतियमेत्ता विज्जा हुंति

पवधावि तेत्तिया नून । तो पुरिसेहिं सवसयाओ सुद्धमहिलाओ कीरति ॥ १२८० ॥ दुधिलसियाइ काउ कुवियपियाए तमुत्तर दिंति । नियसच्छयाए सधा(सधा) इमेत्ति मनति तो ताओ ॥ ८१ ॥ इय चितायसअञ्चंताजायवरविसयविस- यविदेसा । त चेव गरुयवेरगाकारण धरइ हिययमि ॥ ८२ ॥ पइविदेसवसाएवि तीए मुफ न विनयकरणिज्ज । “लयति न रुढाओवि कुलवहुयाओ कुलायार” ॥ ८३ ॥ तेणेवय वेरगेण भसुणो मोइऊणमत्ताण । पडिवन्ना वालतव नवर न सुयइ पिण्णुसय ॥ ८४ ॥ रणसूरो पुण सरलस्सहावओ सरइ नियगुरुकमणे । दीणाइयाण दाणाइ देइ न करेइ अत्ताय ॥ ८५ ॥ एव मञ्जिमपरिणामवसमसमज्जियनराउ निवरिद्धी । मरिऊण भुवणतिलयाभिहपुरनिवनदणो जाओ ८६ ॥ तम्भज्जावि तवज्जियविजाहरिद्धिभोयसभारा । मरिय सुया तुह जाया रहनेउरचक्कवालपुरे ॥ ८७ ॥ पुविल(ल)भवम्मि मया पुरिसवेसेण ससुया जमिमा । इह जन्मेवि तमुव्वइ तुह सुया निव नरवेस ॥ ८८ ॥ भणिय केवल्लिणा नहर्यदिद तुह कनयाए पुरिसम्मि । विदेसकारणमिमं पयासिय पुच्छमाणस्स ॥ ८९ ॥ त सोअं जाईस- रणनाणविन्नायनियभवा भणइ । पढु त तहेव सञ्चं तुग्भेहिं जहा समक्खाय ॥ १२९० ॥ तो सो ससुओ नयकेवली गओ नियपुरे खयरराया । जाया य निद्वियप्पा नियामिमाणे भुवणलच्छी ॥ ९१ ॥ चिंतइ महाणुभावेण तेण तइया न विरइयमजुत्त । जं मोयगेण विहिया पूया देवाहिदेवस्स ॥ ९२ ॥ तइया दइए सरले वि दुधियप्प पक्कप्पमाणीए । महिलाण मए पयडीकयं धुव तुच्छपयइत्त ॥ ९३ ॥ जइ ह त पुच्छती ता सो तइयावि मह पयासतो । जं पुच्छिण्ण तेण कयाइ वट्टोत्तर न कयं ॥ ९४ ॥ इय चिंतंती जाया पियम्मि पोढाणुराइणी वाला । नियदुधिलसियंसुमरणजहिं- विच्छुरियरणरण्या ॥ ९५ ॥ चत्तो रत्तोवि पिओ भवम्मि पुवे इमाए कुवियप्पा । इय चिंतिय कुवियणव कामेण सरेहिं पहया सा ॥ ९६ ॥ दाहो वाहो कपो हियए नयणेसु देहजट्टीए । तवेळंचिय तीए सजाया सत्तिया भावा ॥ ९७ ॥

श्रीअनन्त-  
नाथचरि-  
त्रादुद्धृतं  
पूजाष्टकम्  
॥ ३७ ॥

अरईसूयगसिक्कारवसविणिक्वत्तरत्तदंतपहं । हियंमि अमांयन्तं उवमइ पियाणुरायं व ॥ ९८ ॥ असुहपसरप्पकंपिर-  
करजुयनहसुत्तिकंतिपसरेण । धवलंती चंदणरसपंकेणव ताविलं देहं ॥ ९९ ॥ इयं पसरियनियपियविरहतावदावगिग-  
दञ्जमाणतणू । उवेयावेयवसा बाला कट्टं दसं पत्ता ॥ १३०० ॥ गरुयाणुणयपुरस्सरपुच्छंतसहीणं साहिओ तीए ।  
पुबप्पियम्मि सुवणप्पमोयगे निवसुए नेहो ॥ १ ॥ भणई य जइ तमहं पुबभवपियं हे सहीओ न लहेसि । देसि धुवं  
ता जलणस्स आहुइं नियसरीरेण ॥ २ ॥ नहयरनाहस्स सहीहिं साहिओ तीए निवसुए राओ । तो से तोसो जाओ  
सुयाए कुमराणुरत्ताए ॥ ३ ॥ जंपइ पन्नत्तिं देवयं निवो देवि आणसु कुमारं । अच्चाहियं न जायइ जा सहजीवियस-  
मसुयाए ॥ ४ ॥ तो इह देवीं पत्ता पत्ते कुमरम्मि रम्ममुज्जाणं । काऊण किंनरीपेच्छणच्छलं तीए हरिओ सो ॥ ५ ॥  
नेउं रहनेउरचक्कवालनयरम्मि नहयरिंदस्स । सो उवणीओ तीए सह कुमरीए पमोएण ॥ ६ ॥ कयगोरवेण कुमरस्स  
राइणा कहिय कंनयाचरियं । भणियं पुबभवपियं परिणसु तं वच्छ मह दुहियं ॥ ७ ॥ तं सोउं जाईसरणनायनियपुव-  
जम्मवुत्तं । जंपइ तए जसुत्तं काहं सबंधि तं किंतु ॥ ८ ॥ हरिए मए मसंवापिऊण जायं भविस्सइ दुहंतं । जेण न  
होहिति प्हूणि ताणि नियपाणधरणस्स ॥ ९ ॥ तयणु नहयरनिवेणं कुमारकुसलप्पउत्तिकहणकए । तुम्हंतियम्मि पंन-  
त्तिदेवया पेसिया एत्थ ॥ १३१० ॥ एयं समहिट्टिय सालिभंजियं कणयथंभयगाओ । अवयरिय मए कहिओ तुह  
सुयथवहरणवुत्तं ॥ ११ ॥ इय भणिऊणुच्छलिउं सट्टाणे सालिहंजिया पत्ता । अत्थाणजणो सबोवि विम्हिओ नरव-  
इप्पसुहो ॥ १२ ॥ जंपंति सबसामंतमंतिणो देव पेच्छ अच्छरियं । जं जंपंति सजीवारमणीओव रयणपडिमाओ  
॥ १३ ॥ देवोच्चिय पुन्नपयं जस्स सयं खेयरी ठिया बहुया । किं कामदुहा धेणू अभदनरगेहमल्लियइ ॥ १४ ॥ एवं  
जंपंताणं ताणं सो वासरो वइक्कंतो । माणियसुहनिदाणं शडित्ति रयणिवि अवसरिया ॥ १५ ॥ काऊण दिणयरोदय-

नैवेद्य-  
पूजायां  
श्रुयन-  
प्रमोदक-  
कथा

॥ ३७ ॥

करणिञ्ज रइयरम्मासिंगारो । उवविसइ सहाए निवो नमंतसामतमन्तियणो ॥ १६ ॥ एत्थंतरे निलचलइयावलीरण-  
 झणन्तकिंकिणिय । मणिकिरणभरियश्रुवणं विमाणविंदं समणुपत्तं ॥ १७ ॥ गयणंगणमुकविमाणचका नीहरिय नहरय-  
 निवेहिं । अणुगम्मतो सालयश्रुयलगो आगओ कुमरो ॥ १८ ॥ अत्थाणसन्निविट्ठं जणयं पणमइ महिमिलियमउली ।  
 तेणावि गाढमालिगिऊणमापुच्छिओ कुसल ॥ १९ ॥ पुणरुत्त पणमिय भणइ ताय कुसलं तुहएप्पाएण । कयजणणिय-  
 प्पणई उवविट्ठो पिउपयासन्ने ॥ २० ॥ सह नहरयराहिवइणा रना काऊणमुचियपडिवत्तिं । उववेसिओ निए सो  
 मणिमयसीहासणद्धम्मि ॥ २१ ॥ सेसावि खयरपहुणो पणमिय दिन्नासणेसु उवविट्ठा । पणयाए बहुआए भव पुत्तवइत्ति  
 भणइ निवो ॥ २२ ॥ तो सा पणमित्तु कुमारमायर वाम्पासमुवविट्ठा । सुयहरणाविणय रमसु राय इय भणइ खय-  
 रवई ॥ २३ ॥ जइ न हरावेतो ह तणय ता सुया मरती मे । विहिओ मए अनाओ इमो सुयाजीवणनिमित्तं ॥ २४ ॥  
 रायाह एस अनओ न होइ खयरिंद नणु इमा नीई । “समयाणुवत्तणं बहुगुण च ज सो नरिंदनओ” ॥ २५ ॥ खयरा-  
 हिय बहुसुहमिच्छिरेहिं कट्ट सहिज्जाए थोव । किमणतसिवसुहत्थे कट्ट न कुणंति मुणिवसहा ॥ २६ ॥ विणओञ्चिय एस्सो  
 अविणओवि अहिय नरिंद तुह मन्ने । कन्ना तए विइन्ना जं मह भूगोयरसुयस्स ॥ २७ ॥ इय जंपिय सम्माणो तस्स  
 क्तो राइणा खयरपहुणो । परिवारजुयस्स जहा सविम्हओ सो ट्ठिओ दूर ॥ २८ ॥ एवं नरवरसम्माणकरणसंजा-  
 यसमहियसिण्हा । ठाऊण दिवसदुग सट्ठाणे खेयरा पत्ता ॥ २९ ॥ नवकतासजुत्तो विविहविणोएहिं कीलइ कुमारो ।  
 उवविसइ य अत्थाणे पिउपासे उभयसइपि ॥ ३० ॥ कइयावि परभवोचियसुकज्जकरणुज्जाएण नरवइणा । गुरुरिद्धि-  
 वित्थरेण कुमरो अहिसिञ्चिओ रत्ते ॥ ३१ ॥ तो मोहमह्जनामस्स सूरिणो पायपउममणुसरिं । गहिया दिक्खा रना  
 तविय तव सो सिव पत्तो ॥ ३२ ॥ नवनिवई वि नएण पालेइ पयं विणिग्गहइ दुट्ठे । समुवज्जइ विमलजसं कुणइ य

सद्धम्मकिरियाओ ॥ ३३ ॥ कइयावि रणब्जणमाणकिंकिणीगणविमाणमारुहिंडं । गंतुं मंदरं दीसरेसु सासयजिणे  
शुणइ ॥ ३४ ॥ सुहसिचिणसूइयसुं कइयावि पसविया सुवणलच्छी । सुवणाभरणोत्ति कयं नामं सम्माणिय जणं  
से ॥ ३५ ॥ बालत्तमइक्कंतो गाहियबावत्तरीकलो कुमरो । अब्बुयुरूवातो विवाहितो रायकन्नातो ॥ ३६ ॥ समयं-  
तरम्मि रज्जे सुवणाभरणं निवेसिंडं राया । विहियवओ चरणाणी होइं पत्तो महाणंदं ॥ ३७ ॥ नेवज्जेणं पूया जहा  
कया राइणा इमेण तहा । सासयसिवसुहकज्जे कज्जा अवरेणवि जणेण ॥ ३८ ॥ नैवेद्यपूजा ॥ ३८ ॥

५ ५ ५ ५ सुवणप्पमोयगनिवो कहिओ नेवजपूयमभिसरिंडं । इण्हि तु वासपूयाए गंधंबंधुरकहं भणिमो ॥ ३९ ॥ ५ ५ ५ ५ ५

रम्माराससरोवरपुक्खरिणिविरायमाणचउपासं । वसुहासारं नयरं समत्थि चित्थिन्नपाथारं ॥ ३४० ॥ नहस-  
त्रिहफालिहगयणलग्गजिणहरसिरगमगठिओ । खणमेतं लक्खिज्जइ जम्मि रवी रयणकलसोव ॥ ४१ ॥ रयणियर-  
किरणसियकित्तिबंधुरो कित्तिबंधुरो नाम । फुरियपथावपसरो पयावइ अत्थि तत्थ युरे ॥ ४२ ॥ धरणिधरइयसेवो  
जो विजयाणंदकारओ दूरं । अहिजाइकयविणासो चिरायए गरुडपक्खिज्ज ॥ ४३ ॥ सबुत्तमपत्ताहियच्छायापरम्मालिया  
सुहप्पसवा । लइयव्व कित्तिलइया समत्थि रन्नो महादेवी ॥ ४४ ॥ तीएत्थि तणुत्थसुगंधंधुरो गंधंबंधुरो नाम ।  
कुमरो अमरोवमरुवरम्मथारम्मणिमणहरणो ॥ ४५ ॥ सुकया सियवन्नधरं सिरं ववइ जो नियसरीरं । परमहसिय-  
गुणजुत्तं सुहमिव रयणाभरणजायं ॥ ४६ ॥ नरनाहं डलेसरसामंतमहन्तमंतिपुत्तेहिं । समयं सेविजंतो कालं  
अइवाइ कुमरो ॥ ४७ ॥ कइयावि नियप्पासायचंदसालागवकलमहीणो । विविहविणोयक्खित्तो जा चिद्धइ सह  
वयस्सेहिं ॥ ४८ ॥ ताव सहसत्ति एणो कीरो नियपक्खनीलकन्तीए । हरियालीकलियं पिव नहं कुणंतो समणुपत्तो ॥ ४९ ॥

अच्छरिय जणयन्तो जणरस कुमरकमे नमेउ सो । महुरगिर पयडक्खरमेवं विन्नविउमारद्धो ॥ १३५० ॥ आरामाहिय-  
 वासो रायसुओ रत्तवयणविन्नासो । तुमसिव कुमर अहपि हु तेणाह त समझीणो ॥ ५१ ॥ ता आयन्नसु कज्जेणमागतो  
 ज्ञेण विन्नवेमि तय । निक्कजाओ पवित्तीओ हुति जइवा न सउणाण ॥ ५२ ॥ त सोऊण पयंपइ कुमरो कीराहिराय  
 उवविसिउ । रयणासणम्मि साहसु तो सो उवविसिय साहेइ ॥ ५३ ॥ अत्थिरयाहियतुरय अत्थिरयाहियसुवन्न-  
 वरदाण । अत्थिरयाहियजणं उदयाणंदाभिह नयर ॥ ५४ ॥ तम्मि नमिरनेसरसिरसोणमणिप्पहापिसगपओ । उदि-  
 यप्पयावराया समत्थि वित्थरियजसपसरो ॥ ५५ ॥ सच्छप्पयई काळुसहारिणी सारसोहसुज्जा । उदयावल्लिध  
 उदयावली पिया अत्थि नरवइणो ॥ ५६ ॥ विलसंतविमलसत्ताकयसयवत्तालिचक्कसखोहा । उदयस्सिरिति उदय-  
 स्सिरिथ तीए समत्थि सुया ॥ ५७ ॥ सरलसहावा नियनासियव सिहणस्सिरिथ सुपवित्ता । दूर रत्त अहर व धरइ  
 जा वयणविन्नास ॥ ५८ ॥ निरुवमरूव कमणीयजोषण तं समग्गसोहरग । अवलोइउ जुवाणा वहति दूर मणुम्मायं  
 ॥ ५९ ॥ दद्धूण तट्टहरिणच्छिपेच्छिय तीए नीइनिउणा वि । मुणिणोवि अणप्पवसा हवन्ति कि निविवेयातो  
 ॥ १३६० ॥ कइयावि सा सहीयणसहिया सिंगारगारवग्घविया । आरुहिय कणयमणिमयसुहासणं चलिरसियचमरा  
 ॥ ६१ ॥ मुत्तावचूलविलसतलत्तअतरियतरणिकरपसरा । सहयारसारसुज्जाणमागया कीलिउ वाला ॥ ६२ ॥ परि-  
 पक्कमुट्टुदाडिमवीयावल्लिनिद्धदन्तपतीहिं । हसइव ज नेरसरुयासमागमणतोसेण ॥ ६३ ॥ विलसतकुमुमलइयासिय-  
 कलियाचक्कवालकलिय जं । कुमरीसगवसुहसियपुलयपब्भारभरियव ॥ ६४ ॥ अवयवणकयलीहरदक्खामडवमणोभि-  
 रामंमि । तंमि पविठ्ठा बहुकुसुमपरिमलब्भमिरभमरमि ॥ ६५ ॥ पेच्छइ अतुच्छअच्छरियकारयं नरमुहं मऊर सा ।  
 विलसिरसुतारचदयविरायमाणं नहयलंघ ॥ ६६ ॥ मुत्तावलइयमरगयकुडलकरच्छुरियनिम्मलक्खोल । चट्टणमयणा-

हीरेहरइयबहुभंगिपतंव ॥ ६७ ॥ भमरउलकालकुंतलधम्मिहुल्लसियसियकुसुममालं । सामचउद्वसिनिसिदिसिदिसिमलय-  
णीयरकलंब ॥ ६८ ॥ वहुं कुमरिं नियचरणचारुसंचाररगिरघघरिओ । गंतूण संसुहो भणइ कुमरि तुह सागयं एस्थ  
॥ ६९ ॥ एहि इहं च वणंतो कयलीहरए सद्दकखमंडवए । उवविसिउं आयन्नसु जं किपि अहं तुह कहेसि ॥ १३७० ॥  
तं अवलोइय अच्चब्बुएक्कहेउं सहीउ सा भणइ । कोऊहलमवलोयह जसिमो दीसइ नरमऊरो ॥ ७१ ॥ तह वाहरइ  
सविणयं मं किपि हु मञ्ज कहिउमिच्छन्तो । ता तं आयन्नेमो उववसिउं साहए जसिमो ॥ ७२ ॥ जंपंति ताउ सामिणि  
तुम्हाऽऽणच्चिय पमाणमंहाण । कल्लेसु समग्गेसु वि किं पुण एवंविहच्छरिए ॥ ७३ ॥ तं सोउं सुक्खुहासणावि कुमरी  
सुहासणे ठाइ । उवविट्ठासु सहीसुं कहिउं लग्गो नरमऊरो ॥ ७४ ॥ अत्थि गरिहसुरट्ठाविसिद्धवसुहावायंससंकासं ।  
वसुहावायंसयं नाम नयरमइरम्मरमणियणं ॥ ७५ ॥ रयणावायंसयन्विवो तं पालइ जो रणागयंपि रिउं । अस्सत्थ-  
सुभयहाविहु मुंचइ अस्सत्थमवि सद्दओ ॥ ७६ ॥ तत्थ निवमाणणिज्जो पुल्लो पउरण पउरगुणभवणं । दीहरदिट्ठी सेट्ठी  
निवसइ नयवद्धणो नाम ॥ ७७ ॥ तस्सत्थि भाइत्तो सुखवंतो धणावहो नाम । उवरयजणउत्ति करेइ तस्स  
गुरूगोरवं सेट्ठी ॥ ७८ ॥ सुत्तूण नियंगरुहे वियइ वत्थाइ तस्स परमं से । अहव ‘गुरूयासयाणं अण्णपरवियारणा  
नत्थि’ ॥ ७९ ॥ परिणाविओ य उम्मीलमाणनवजोव्वणाभिरामतणुं । धणसेट्ठिसुयं नामेण धणावइं सीलकुलभवणं  
॥ १३८० ॥ कइयावि हु असुहोदयवसओ सो सेट्ठिमाह मह ताय । वियसु घरस्सिरीए अद्धं भिन्नो भविस्समहं  
॥ ८१ ॥ तं सोऊण पयंपइ सेट्ठी किं वच्छ एवमुल्लवसि । तं मोत्तुं को अंनो घरस्सिरीसामिओ कहसु ॥ ८२ ॥  
अच्चब्बुयभोयअमाणदाणकल्ले धणवयं कुणसु । अणुकूलंमि मए वच्छ तुज्झ को नाम पडिक्कलो ॥ ८३ ॥ अवरं च  
तमेगागी पडिवालसु जाव पुत्तंउणपत्तिं । नूणं जं नं मुणेमो वियंभियं विहिविलासस्स ॥ ८४ ॥ इय जंपिओवि न सुयइ

कुग्गाह तयणु ससुरयस्सवि । न कुणइ भणियसजोगाणहवा कत्तो गुणाहाण ॥ ८५ ॥ तो एगते कंताए जपिओ नाह  
एव किं भणसि । मा पेच्छसु अच्छीहिं हियएण सुदीहमिक्खेसु ॥ ८६ ॥ निधित सपज्जइ सधंपि ठियाण गुरुसमीवमि ।  
लवणंपि सचिंताए भविही भिन्नद्वियाण पुणो ॥ ८७ ॥ कस्सइ पुत्रेण इमा लच्छी उल्लसइ नज्जइ न एय । ता का  
नाम कुबुद्धी तुम्हाणं भवह ज भिन्ना ॥ ८८ ॥ इय तीउत्तो जपइ तुच्छमई त न पेच्छसि किमेय । अहमेगारी एय  
गरुयकुडुन सिरी जाइ ॥ ८९ ॥ इय जपिय सेट्टिसयासओ सिरिं विभइउ ठिओ भिन्नो । काराविय च गरुय  
सिभूमिय तेण धवलहर ॥ १३९० ॥ पारद्धो ववहरिउ जलथलमगेसु भूरिदविणे स । बुद्धिनिमित्तं दित्तो दव्व पडुयाइवी  
न लेइ ॥ ९१ ॥ तुरयाळ्ढो माऊरुत्तअतरियतरणिसतावो । हिंडइ वणिउत्तवूहावेडिओ रम्मासंगारो ॥ ९२ ॥ नो  
सयणाण न भित्ताण नेव लिंगीण जायगाणवि नो । वियरइ कस्सइ किंपि दु दिंतिं दइयपि वारेइ ॥ ९३ ॥ कूडब-  
वहारेहि हत्थ चिय वच्छ गच्छिही लच्छी । इय सेट्टिपउत्तो भणइ ताय सगिहं विचिंतेसु ॥ ९४ ॥ गहियघणाओ  
लोगोवि किंपि से देइ सेट्टिलजाए । “दूरे गुरुण आणा तेसिं लज्जावि सिरिजणी” ॥ ९५ ॥ देव(ब)वसेण कालकम्पेण  
पत्तमुवगओ सेट्टी । पच्छा सो निस्सको अहियअरे कुणइ ववहारे ॥ ९६ ॥ अह तस्स असुहवसओ सिरी समग्गवि  
नासिउ लग्गा । मगिज्जतो लोगो दुघयणे देइ नो दव्व ॥ ९७ ॥ देसतरेसु वि ठिया वणिउत्ता जायभूरिघणलाहा । दिट्ठावि  
लोहिउमल लच्छी किं नो सहत्यगया ॥ ९८ ॥ सो निक्खिणिही नूणं दाहइ न कयाइ म सुपत्ताण । इय मीयव  
सिरी भिन्नपवहणा सायरे मग्गा ॥ ९९ ॥ देइ न कणपि कस्सइ एसो वडुधन्नसगहपरोवि । इय भाविअ कुविएणव  
दड्ढा जलणेण कोट्टारा ॥ १४०० ॥ नवि जाओ नयभोगो किमस्स ता निरुवयारिदविणेण । इय चित्तिज्जणव तय  
नीय एत्तेण चोरेहि ॥ १ ॥ इगालच्चिय जाया घणे निहाणीकए कुकम्मवसा । अवरदविणज्जणासा कुओ करत्थे विण-



स्सन्ते ॥ २ ॥ सयमवि दिन्नं न लहइ जणाओ कत्तो कलंतरघणं सो । “उयरद्वियतणयासा का अंगुलिलगसुयमरणे”  
 ॥ ३ ॥ मगियजणनीयाइं न मग्गमाणोवि लहइ रित्थाइं । नियवत्थुंपि न लब्भइ जत्थ कहिं तत्थ परवत्थुं ॥ ४ ॥  
 असुरेणावि विइन्नं बहुवाराओ धणं तथंपि गयं । “पत्तावि सिरी झिज्जइ नूणमकहाणकलियाण” ॥ ५ ॥ किं बहुणा  
 संजायं दवं सबंपि से कहासेसं । तो दहुं सीयंतं कंतं कंता विहियविणया ॥ ६ ॥ उल्लवइ दइय तइया न कयं कस्सावि  
 जंपियं तुमए । जइवा दइवाभिहयाण होइ एवंविहकुबुद्धी ॥ ७ ॥ इय जंपिऊण तीए ववहारकए समप्पियं पइणो ।  
 निययाभरणं अहवा “पइभत्ता होइ कुलकंता” ॥ ८ ॥ तंपि हु कइवि हु दिवसेहिं पेसियं तेण पुव्वधणमणे । अहवा जं जं  
 खिप्पइ हुयासणो दइइ तं तंपि ॥ ९ ॥ पच्छारच्छाइंवि विक्किऊण भुत्ताइं तेण सवाइं । आयविहूणे वित्ते वइज्जमाणे  
 कुओ रिद्धी ॥ १४१० ॥ धरहट्टोवरि गहिऊण कंचणे भक्खियंसि तेसिंपि । मुक्को अहव अभग्गण जाइ पिउडिन्न-  
 मवि रल्लं ॥ ११ ॥ जेसिं देयं दवं न तेसि पासाउ लहइ अवरत्थ । गंतुं तो तत्थेवय निवसइ अचंतदोगच्चो ॥ १२ ॥  
 जो वसिओ धवलहरे विचित्तचित्ते तिभूमिए सययं । सो वसइ ताव जलसीयधूमिओ जलकुडीरम्मि ॥ १३ ॥ जो  
 मंदपवणपरितरलसिक्किरिच्छायमस्सिओ भमिओ । विक्कयकजे सो भमइ कट्टहारकयच्छाओ ॥ १४ ॥ जो संसुत्तो  
 दोलाचलंतपलंकतूलियासु सया । सो सुयइ दब्भसत्थरयमुवगओ बाहुउवहाणो ॥ १५ ॥ पडिजइं बरेहिं सिंगारो  
 जेण सबया विहिओ । बहुछिइं डंडियाइं परिहइ सो मलिणवत्थाइं ॥ १६ ॥ जो गरुयतुरंगसुहासणेसु आरुहिय सबया  
 भमिओ । परिणडइ फुडणखंजंतपयजुत्तो सोणुवाहणओ ॥ १७ ॥ नवरं इस्सरियम्मिव दारिदेवि हु पिया न तं सुयइ ।  
 “उदयक्खएसु दइए समचित्ताओ सईउ सया” ॥ १८ ॥ अइसुहिओ होउं सो अचंतं दुहभं समणुहवइ । पाविय संपुन्न-  
 सिरी किं खंडिजइ नय मयंको ॥ १९ ॥ समयंतरम्मि कम्मवि वीवाहे सेट्ठिपुत्तकन्नाए । पारुद्धे नयरजणो निमंतिओ

भोग्यनिमित्त ॥ १४२० ॥ सो धितइ अज्ज निमतण इहागच्छिही अओ मज्झ । वत्तणकज्जे जुज्झइ सडाइआह-  
 रणगमण नो ॥ २१ ॥ गेहेधिय अच्छिस्स जमिह निमित्तनयो खडफ्फुद्धिही । इय चित्तंतो तत्थ द्विओ दिणप्पहर-  
 जुयल जा ॥ २२ ॥ मज्झंदिणेवि जाए जा को वि न से निमित्तओ पत्तो । ता परिभावइ एव नाह नाओ गिहठि-  
 ओत्ति ॥ २३ ॥ ता जामि तत्थ सयमवि नियघरगमणम्मि मज्झ का लज्जा । अगयस्स पुणो सयणा लहु रुसिस्सति  
 जा जीव ॥ २४ ॥ इय कहिंयं कत्ताए सा जपइ नाह मोहमूढोसि । धणिणो सद्येरेणवि दरिहिणा किं न लज्जन्ति  
 ॥ २५ ॥ नाह कुचेलोत्ति दरिहिओत्ति ववहारकरणअखमोत्ति । न निमतित्तो धुवं कुणसु नियमणे मा तुमं भंति  
 ॥ २६ ॥ न कयाइ मज्झ भणियं तए कय कुणसु सपयपि तुम । ज पडिहाइ मणे तं जइ जपिय सा ठिया मोगे  
 ॥ २७ ॥ इय सगयपि भणिरिं अवगंनिय त गओ स वीवाहे । “अहव हियाहियविसये कुओ विवेओ जडमईणं”  
 ॥ २८ ॥ अब्भुक्खणभासाणउववेसणपायसोहणप्पमुहं । विरइज्जंति पेच्छइ पडिवत्ति ईसरजणस्स ॥ २९ ॥ तवो-  
 लकरे विरइयविलेवणे पत्तपट्टउयवत्थे । सुत्तरे पलोयइ निगच्छन्ते धणइनरे ॥ ३० ॥ अब्भुक्खणपि न लहइ आस-  
 णपयसोयाणइ कत्तो सो । तो तवकडाहिलेणब्भुक्खिय धोयए पाए ॥ ३१ ॥ उवविट्ठो पडिवालइ आमत्तणमत्तणो  
 निरिक्खइ य । वाहरिय गोरवेणं भोज्जंतं परजणपि ॥ ३२ ॥ विहिय अदिस्सीकरेण तम्मि दिट्ठिपि न खिवए  
 कोवि । दूरे चिट्ट पक्क न वजणप्पमुहभोज्जं से ॥ ३३ ॥ तस्स तह सठियस्सवि दिणमद्धप्पहरत्सेसय जाय । भोज्जत्थे  
 निवसन्ति पेच्छइ पज्जतपत्तिं सो ॥ ३४ ॥ धितइ य किं अवत्ता इमाणमहवालत्तमच्चत । जं मह नियडा भोग्यणकज्जे  
 नीया न चैव अहं ॥ ३५ ॥ ता जामि सममिमेहिं भुजामि निए गिहंमि का लज्जा । एवं परिभावन्तो पत्तो नर-  
 पंतिमज्झंमि ॥ ३६ ॥ दोपासरुंदभइसाणोवविट्ठाण ईसरनराण । मज्झे उवविट्ठो गहियभायणो विट्ठरे नीए ॥ ३७ ॥

श्रीअनन्त-  
नाथचरि-  
त्रादुद्धृतं  
पूजाष्टकम्  
॥ ४१ ॥

पित्तलपडिगहद्वियगुरुपरियलजुयलमिलणअंतरियं । भूमिगभयणं से नयणणमगोथरं जायं ॥ ३८ ॥ खज्जूरद-  
कखदाडिमअंबयखारक्कसकराईयं । दिन्नं अन्नाण न दायगेण से भायणं दिढं ॥ ३९ ॥ तह सालिसूवसालणयसप्पि-  
पक्कन्नपेयपमुहाण । किंपि न किखत्तं अदिरसभूमितलमुक्कथाले से ॥ १४४० ॥ दड्डूण दहिविमिस्सं मुंजंतो फुरियगरुय-  
अवमाणो । सिरइयभायणो तेसिसगओ नच्चिरो पढइ ॥ ४१ ॥ “हे दारिच्च नमस्तुभ्यं सिद्धोऽहं त्वत्प्रसादतः । जग-  
त्पश्यामि येनाहं न मां पश्यति कश्चन” ॥ ४२ ॥ एए मह जणयसहोयरस्स पुत्तत्ति भायरो मज्झ । भाउज्जायाउ इमाउ  
भाइण्ज्जा इमे सबे ॥ ४३ ॥ जह मंततंतविज्जाइएहिं सिद्धा हवन्ति अदिस्सा । जाणह तहा ममंपि हु नूणं दारिइ-  
सिद्धोत्ति ॥ ४४ ॥ जइ होमि न सिद्धोहं ता दिट्ठो किं निएहिं वि इमेहिं । सयणेहिं सबेहिंवि भोयणकरणोवविट्ठोवि  
॥ ४५ ॥ सोजंनं सुहिभावं सयणत्तं परिचयं च दक्खिन्नं । कुणइ धणड्डूण समं दरिदिणा नेव सबजणो ॥ ४६ ॥  
जे भोयणवत्थाइव्वहारे काउमक्खमा नूणं । जह मह तह अन्नाणवि न कीरए कावि पडिवत्ती ॥ ४७ ॥ सुद्धा जाई  
सबुत्तमं कुलं निम्मला कलाओवि । धणरहियाण न किंचिवि जेणेरिसं भणियं ॥ ४८ ॥ “जाई कुलं कलाओ  
तिन्निवि पविसंतु कंदरे विवरे । अत्थोच्चिय परिवड्डु जेण गुणा पायडा हुंति” ॥ ४९ ॥ केणावि कारणेणं न इमेहिं  
पलोइत्तो इय भणंतो । नीहरिडं सो अवमाणदूमिओ नियगिहं पत्तो ॥ १४५० ॥ पिय मह वारंतीएवि न द्विओ ता एत्ति-  
यस्स जोगो तं । इय जंपिरीए भज्जाए भोइओ सीयरब्बाइ ॥ ५१ ॥ दारिदेणं दूरं दूमिज्जंतस्स तस्स वच्चन्ति । दिवसा  
विसायवसयस्स अन्नया सो गओ रत्ते ॥ ५२ ॥ पेच्छइ य तरुछायाए संनिविट्ठे मुणीसरे संते । सिद्धंतसुंदरक्खे  
दक्खे सिक्खाए साहूण ॥ ५३ ॥ जे समयगंथा इव सहंति आथारवाणसमवाया । विन्नाया धम्मकहापणहवायरण-  
परमाया ॥ ५४ ॥ धणनाससयणपरिहवटुस्सहदोगच्चदूमियणो सो । ते दड्डूण सुहोदयवसओ तेसिं गतो पासं ॥ ५५ ॥

भक्तिभरनिम्भरगो पणमिय पयकमलमिलियमालयलो । उवविट्टो जपइ पडु गिहिजोगं कहह मह धम्मं ॥ ५६ ॥  
 आह पडु आयत्तसु नारयतेरिच्छनरसुरविभेया । भवइ भवो चउभेओ दुहमेवय चउसुवि गईसु ॥ ५७ ॥ पाणि-  
 वहप्पमुहमहापावा निवडति पाणिणेने । नरएसु तेसु वि सहति वेयणं विरसमारसिरा ॥ ५८ ॥ तिरियनरभवंतरिया  
 पुणरुत्तणुभूयसवन्नरयदुहा । वहुसो वि तिरिच्छते सहन्ति समुवज्जिऊण दुह ॥ ५९ ॥ सासयविरोहवहवाहदो-  
 ह्मसासिमारणाईणि । असुहाइं समणुहविकुण केवि अज्जति मणुयत्तं ॥ १४६० ॥ तम्मि वि धम्मविरहिया दीणा दारिद-  
 दुहभरफत्ता । विहलीहूयमणोरहमाला परिभवपयं हुंति ॥ ६१ ॥ देवावि परप्पेसत्तदुसहईसायिसायवियलग । अत्ता-  
 णामकयसुक्य निंदंता दुहमणुहवति ॥ ६२ ॥ एव पावंति सुह न गइचउकेवि धम्मपरिहीणा । घणवज्जियच्च विवणीए  
 नियमणोभिमयवरवत्थु ॥ ६३ ॥ ता धम्मोच्चिय कज्जो दुविहो सो साहुगिहिविभेएहिं । पढमे दसेव भेया भेया  
 धीयम्मि वारस उ ॥ ६४ ॥ समत्तजुया दोन्निवि दिंति सिव तपि मुणसु समत्त । गयरायदेव-निगथसुगुरु-नवतत्तस-  
 इहणा ॥ ६५ ॥ एगयरपि असत्तो धम कांडं करेइ भावेणं । अट्टपयारपूय जिणाण ज सा वि सिवजणणी ॥ ६६ ॥  
 नेवज्जुसुमअक्खयदीवयफलसालिधूववासेहिं । इय अट्टविहा पूया कया जिणिंदाण भवहरणी ॥ ६७ ॥ अट्टवि काड-  
 मसत्तो सत्तो जइ कुणइ वासपूयंपि । तिथेसरस्स ता जाइ तस्स पावं जओ भणियं ॥ ६८ ॥ घणसारहरिणनाही-  
 सुयंधवरवासलेयपूयमिसा । जिणपवणसगमेणव पावरयं दूरसुडुइ ॥ ६९ ॥ ता धम्मसील पत्तं मणुयत्तं मा मुहा तुमं  
 नेसु । समुवज्जसु वासेहिंवि पूइसु जिणं परमपुन्नं ॥ १४७० ॥ इय सोडं सो सद्धम्मदेसणं सूरिणो नमिय भणइ । पडु  
 मह महापसाओ कओ इम साहिउ धम्मं ॥ ७१ ॥ नूण निरीहा तुब्भे परोवयारेक्खद्धवावारा । जं मह दरिदियस्सवि  
 एव धम्म समाइसह ॥ ७२ ॥ इय जंपिय पणयगुरु गहियतणाईं गओ गिहे नियए । कहिओ थ भारियाए पूयाफल-

सवणबुत्ततो ॥ ७३ ॥ तीउत्तमहम्मफलं पिय तुह सबंधि कुणसु तां धम्मं । जेण न भवंतरेवि हु विडंवणा एरिसी होइ  
॥ ७४ ॥ तेणुत्तमिंमं काहं जंपेदं गंधियावणम्मि गओ । तेण भारयमुहेणं गहिया सबुत्तमा वासा ॥ ७५ ॥ तत्तो  
हियब्भन्तरवियंभियोद्दामभत्तिपब्भारो । जिणमंदिंरंमि चलिओ रयणमए तम्मि पत्तो य ॥ ७६ ॥ सच्छंफालिहदी-  
हइडेनिलपसरिया सियवडाया । जम्मि सुरेहिंवि नज्जइ सविम्हयं गयणंगंघ ॥ ७७ ॥ कंकहितमालवणेसु जस्स  
पविसंति रयणकरंडा । रागहोसवणारयणमुक्कजिणरायवाणव ॥ ७८ ॥ तो सो पहिड्डचित्तो तम्मि पविट्ठो विसिट्ठ-  
जिणभवणे । उवसन्तकन्तरुवं अवलोयइ उसहजिणनाहं ॥ ७९ ॥ तो विफुरंतवहुमाणपसरवसपुलयकलियतणुजट्ठी ।  
आणंदंसुजलभरपक्खालियवयणवच्छयलो ॥ १४८० ॥ उल्लसियमणो वियसन्तलेयणो कुणइ सुरहिंवासेहिं । पूयं पहुणो  
नियज्जम्मसहलयं मत्तमाणो सो ॥ ८१ ॥ असरिसवहुमाणवसो पुणरुत्तं भूमित्तलमिलियमालो । पणमिय पलोइय चिं-  
जिणेसरं आगतो सगिहे ॥ ८२ ॥ कइयं पियाए वासेहि जिणवरो पूइओत्ति तो सावि । वंधइ अणुवमपुत्रं पसंस-  
माणी इमं अहं ॥ ८३ ॥ कइयवि देवि निययाउअंतमणुसरिय मरिय जायाइं । अमरत्तेणं आरणकप्पे सुररायसरि-  
साइं ॥ ८४ ॥ एगवीससागराइं सुत्तं सुरलेयलच्छिच्छिच्छं । सिद्धायणजिणचणकरणजियसुकयसंभारा ॥ ८५ ॥  
चविय तओ वसुहासारपट्टणे कित्तिवंधुरनिवस्स । जाओ धणावहसुरो पुत्तो असमाणगुणुत्तो ॥ ८६ ॥ धणवइ-  
अमरोवि पुणो उदयाणंदे पुरम्मि उप्पन्ना । उदियग्गयावरन्नो कन्ना उदयस्सिसी नाम ॥ ८७ ॥ हुत्तो हं पुबभवे तुह  
जणओ मरिय बारसमकप्पे । वावीससायराऊ संजाओ भासुरो असरो ॥ ८८ ॥ तं जोवणमणुपत्ता पत्ता कीलाकए  
इहुज्जाणे । पुच्चविदेहा वलिओ वंदिय जंगमजिणिंदे हं ॥ ८९ ॥ मह दिट्ठिपहे पत्ता उल्लसिओ पुच्चभवभवो नेहो ।  
नाया य ओहिणा पुच्चभवसुया तं तओ ज्झत्ति ॥ १४९० ॥ कयतरमऊरूवेण एत्थ उववेसिउं माए कुमरि । तुह पुच्चभवा

दोन्निवि कहिया नियभवदुगेण सम ॥ ९१ ॥ त सोउ कुमरी जाइसरणसच्चवियपुषभवचरिया । सिरिगंधवधुरम्मि  
 अणुरत्ता पुषभवदइए ॥ ९२ ॥ तो इत्ति नरमऊरो चळकुडलहारकठकयसोहो । जाओ असरो वहुरविपयावप-  
 न्मारदुत्तिरिस्सो ॥ ९३ ॥ तो सा कयप्पणामा पूयइ त सुरहिपरमवत्थुहि । “इयरम्मि वि कुलवाला विणयवई किन्न  
 जणयसि” ॥ ९४ ॥ जपइ य ताय तुमए जह कहिय तह मएवि सच्चविय । पुषभवदुगचरियं सिविणे दिवसाणुभूयं व  
 ॥ ९५ ॥ ता तुमए मह कहिओ जो पुषभवदुभवो पिओ कुमरो । इण्हिपि तं वरिस्स “सईओ न नरतरमईओ” ॥ ९६ ॥  
 आह सुरो रिद्धीकरी पूया अणुमोइयावि तुह जाया । फलइ बहु येवपिहु वीय वविय सुभूमीए ॥ ९७ ॥ तो दिट्ठपच्चया  
 त करेज धम्मुज्जम सया वच्छे । “निच्छइए कल्लणे न पमाओ जुल्लए जइवा” ॥ ९८ ॥ एव धम्मुवएस दाउ सहसा  
 तिरोहिओ तियसो । कुमरी वि गधवधुरकुमरे रत्ता गया सगिहे ॥ ९९ ॥ न सुणइ छुहं न पावइ निइ न वियाणए  
 तिस वाला । जलणजालाजलियव विरहविहुरा वहइ देह ॥ १०० ॥ मन्नइ वीयव सा चित्तसालियं सुम्पुरंपिव सुणालं ।  
 आभरण दुम्मरणव पावपूर व कप्पूर ॥ १ ॥ एयमवत्थ कुमरिं दइण सहीओ तीए नरवइणो । साहिति पुषभवभवद-  
 इए रत्ता तुह सुयत्ति ॥ २ ॥ नाऊण निवेणवि सहिसुहेण दुहियाए पुषभवदइय । कन्नपि जाणिउ पियविओयसहणा-  
 सह दूर ॥ ३ ॥ तबेलच्चिय मडलियमतिसामतथाइसजुत्ता । वलकलिया पट्टविया संयंवर कन्नया तुज्ज ॥ ४ ॥ तीए  
 अह सत्थकहाकधविणोणसु सधया सच्चिवो । तो त मोयावेउ त वद्धाविउमिह पत्तो ॥ ५ ॥ चउपचदिवसमज्जे सच्चि दु  
 तुह पुषभवपिया एही । इय विन्नविउ कुमर कीरो मोण समहीणो ॥ ६ ॥ त सोउ जाईसरणनायनियपुषभवदुगो  
 कुमरो । कुमरिं पइ जायदढाणुरायवसपरवसो जाओ ॥ ७ ॥ चिंतइ तइया दइया निच्चपि हिय पयपमाणीवि । न  
 मए तिणव गणिया अहो अहकारमूडेण ॥ ८ ॥ दुइत्तोवि दरिदोवि दुम्म्युहोवि दु सईए तीए अहं । ईसरसेट्टिसुयाएवि

पुत्रभवे नेव परिहरिओ ॥ ९ ॥ ताहमवि पुत्रभवभवकतं मोतुं न काहमन्नर्षियं । रंजिजइ इहभविएवि किं न परभवभवे-  
रत्ते ॥ १५१० ॥ इय परिभाविय विजावणइ नियमुदियाउ कीरस्ता । निक्खिवइ चरणजुयले कंठमि पुणो रयणकड्यं  
॥ ११ ॥ भणइय कीर तुमं उभयहावि सउणो कहेसि कल्लणं । नहि निग्गुणण एवंरुवपवित्ती हवइ नियमा ॥ १२ ॥  
ता तं गंतुं कुमरीए कहसु कीरेस इय मह पइन्नं । तीए जहा संपज्जइ मह विसए मणसमाहाणं ॥ १३ ॥ आएसोत्ति  
भणित्ता तयणु सुओ उड्डिऊण संपत्तो । कुमरीपासे सोऊण तं ठिया सावि संतुहा ॥ १४ ॥ कुमरवयंसेहिं इमं संबंषि हु  
साहियं नरिंदस्स । तं सोउं तेणुत्तं किमजुत्तमिमम्मि कल्लणे ॥ १५ ॥ जं गुरुयरायकुमरी सयंवरा एइ गुरुनिवसुयस्स ।  
इहभवभवावि किं पुण भवन्तरुपत्तअणुराया ॥ १६ ॥ इय जंपिय कारविया पुरसोहा राइणा पहिडेण । मोतुं वीवाहमहं  
गिहीण परसूसवो नन्नो ॥ १७ ॥ पच्चोणीए तीए पेसइ सामन्तमंतिमंडल्लिए । “गोरवमियरेवि गुरु विरयइ किं तोणुरायपरे”  
॥ १८ ॥ आवासदाणसम्माणकरणसमुहपसागयं तीसे । विहियमियरोवि अतिहि पुज्जो किं पुण नरिंदसुया ॥ १९ ॥  
उत्तमलग्गे कुमरो कुमरिं वीवाहिओ नरिंदेण । कुलवुड्डिकरे कल्ले किं कोइ पमायमायइ ॥ १५२० ॥ तीए सह विसय  
सोक्खं माणइ कुणइ य सुयम्मकम्मं सो । इहलोइयपरलोइयकल्लेसु समुज्जया गरुया ॥ २१ ॥ समयंतरम्मि कम्मिबि  
कुमरं रज्जंमि ठविय नरनाहो । कयपवज्जो संजायकेवल्लो मोक्खमणुपत्तो ॥ २२ ॥ नवनिवई नीईए पालइ रज्जं अभि-  
द्वइ दुडे । सिडे पूयइ मन्नइ महायणं गुणिगुणे शुणइ ॥ २३ ॥ एवं निरवज्जसरज्जकल्लकरणुज्जयस्स नरवइणो ।  
जंति दिणाइं दिणमणिकरभरसरिसभ्ययावस्स ॥ २४ ॥ जाओ कयाइ देवीए तीए सुहलक्खगो सुओ तस्स । काउं  
वद्धावणयं नामं गुणवंधुरोत्ति कयं ॥ २५ ॥ लल्लिजंतो धाईहिं वड्ढिओ जाव पंचवरिसाइं । परिपाट्ठिओ य अज्झा-  
वएहिं सब्बाड वि कलाओ ॥ २६ ॥ पत्तो य जोब्रणं तरुणकामिणी नयणमणहरं रंता । परिणाविओ नरिंदण रम्मरूवाओ

कनाओ ॥ २७ ॥ ददु त रत्नमहाभरणसमत्थमुत्तमे लग्ने । अहिसिचइ नियले राया रिद्धिपवधेण ॥ २८ ॥  
 फाराविऊण जिणइमदिराइं निरिंदरुदाइ । सूरीहिं पइष्ठाविय मणिमयतिथेसरे तेसु ॥ २९ ॥ सिद्धंतपोत्थयाइ लिहा-  
 चिउ पूइउ च सिरिसघ । घोसाविउ अमारिं मोयाविय सबगुत्तिनरे ॥ १५३० ॥ आरुहिय रयणसिविय दिंतो दाणाइ  
 दीणहुदधान । गुरुरिद्धीए गतूण सुगुरुपासमि पइइओ ॥ ३१ ॥ अहिगयसुयसव्भावा पाउब्भूयप्पभूयसवेगो । निम्भू-  
 तुम्भूलियघाइकम्मयसपत्तनवनाणो ॥ ३२ ॥ मडुरसरसहेसणपडिवोहियभूरिसव्वसघाओ । सपत्तो सो सासयसोक्ख-  
 समिन्नीए सिद्धीए ॥ ३३ ॥ ण्यस्स वासपूया जह जाया सिद्धिसोक्खसजणणी । तह अन्नस्सवि जायइ जइयव ता सया  
 तीए ॥ ३४ ॥ ऋ वासपूजा ऋ ॥ इय तिहुयणसामिअणन्तनाहकहियम्मि अट्टपूयफले । बहुमाणपसअकलिओ कयंवपरिमल  
 मदीनाहो ॥ ३५ ॥ ॥ इति श्रीअनतनाथचरित्रगतपूजाष्टककथानकानि । समाप्तोय ग्रन्थः ॥ श्रीरस्तु ॥ शुभ भवतु ॥  
 ॥ भीः ॥ यादश पुस्तक वीक्ष्य तादृश लिखित मया ॥ हीनाधिक्यैः स्वैर्वर्णैरस्माक द्रूपण नहि ॥ १ ॥ \* \* ॥

धम्मधरुद्धरणमहावराहजिणचदसुरिसिस्ताण । सिरिअम्मएवसूरीण पायपकयपरेणेह ॥ १ ॥ सिरिचिजयसेणगणहर-  
 कणिट्टजसदेवसूरिजेट्टेहि । सिरिनेमिचंदसूरीहि भवलोओवएसट्टा ॥ २ ॥ सयमेव कयाउ अणतसामिजिणरायचारु-  
 चरियाउ । पूयट्टगमुद्धरिय त नदउ तिहुयण जा उ ॥ ३ ॥ पच्चकलरगणाए सिलोगमाणेमेत्थ जायाइ । पूयट्टगम्मि  
 सयरीसमहियअट्टारससयाइ ॥ ४ ॥ छ ॥ ग्रथाप्त १८७० ॥ छ ॥ श्रीः ॥ \* ॥ ॥ श्रीः ॥ \* ॥ ॥ \* ॥



संपादकीय निवेदन

अन्त कल्याणकारी श्री अनन्तनाथप्रभु प्रसादित अतिसुन्दर कथाओंसे युक्त श्री पूजाष्टक वाचकोंके करकमलोंमें समर्पण करते अति आनंद होता है, इस चरित्रकी प्रेसकापी संवत् १९९४ में सूरत में ही तैयार हो चुकी थी, परंतु प्रकाशित करनेका सौभाग्य तो इस वर्ष पंन्यासप्रवर श्री सुमति विजयजी गणित्रयीदिकी प्रेरणा द्वारा इन गृहस्थोंने प्राप्त किया है,

सहायक नाम	सुकाम	नकल	सहायक नाम	सुकाम	नकल
शाह रायचंद गुलाबचंद	अच्छारी	२००	शाह धनजी ज्वेरभाइ	वापी	२९
" दलाजी जेताजी	कोपरली	१२५	" नगीनचंद धूलाजी	"	२५
" धनराज खीमचंद	वापी	१२०	" रायचंद प्रागजी	"	२५
" रायचंद हरखचंद	"	१००	" पूनमचंद वीरचंद	"	२५
" छगनलाल प्रेमचंद	"	५१	विद्वान् वाचक और व्याख्याता इस ग्रंथरत्नसे अनंतलाभ		
" कस्तुरचंद धनाजी	अच्छारी	५१	उठावें इति शम्		
" मगनीराम रामसुख	वापी	५०			
" हरखचंद वालाजी	"	५०			
" चूनीलाल जसरूपजी	"	५०			
" ज्वेरचंद प्रेमचंद	देगाम	५०			
शाह केसरीचंद परागजी	कोपरली	५०			

आ. विजयक्षमाभद्रसूरी

मोरी बेडा (मारवाड)

अक्षयतृतीया सं. १९९७

